देश विदेश की लोक कथाऐं — मछलियॉ ः

लोक कथाओं में मछलियॉ

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Series Title : Desh Videsh Ki Lok Kathayen
Book Title: Lok Kathaon Mein Machhliyan (Fish in Folktales)
Cover Page picture : Fish
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hidifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा
2022

Contents

सीरीज़ की भूमिका 5

लोक कथाओं में मछलियाँ 7

1 मछली क्यों नहीं बोल सकती 9

2 पहले आँसू 13

3 निक मछली 16

4 शार्क का राजा 23

5 बेकर का आलसी बेटा 28

6 नोमी और जादू की मछली 34

7 चमकती हुई मछली 41

8 सुनहरी मछली 46

9 आधा नौजवान 58

10 सात सिर वाला राक्षस 72

11 बेवकूफ इमैल्यान 99

12 बेवकूफ इवान और जादुई पाइक मछली 122

13 गुलाम्बरा और सुलाम्बरा 135

14 मछली हँसी क्यों 149

15 किसान ज्योतिषी 161

16 एक सुन्दर लड़की और मछली 167

17 बोलती हुई मछली–2 174

18 मछली और चीते की पत्नी 181

19 भाले से मछली पकड़ना 184

20 श्वेत वसन्त की कहानी 188

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

लोक कथाओं में मछलियॉ

प्रकृति के बहुत सारे प्राणियों का अलग अलग देशों की लोक कथाओं में अलग अलग तरीके से वर्णन आता है – आदमियों का, जानवरों का, जंगली जानवरों का, पानी में रहने वाले जानवरों का, धरती के नीचे रहने वाले जानवरों का, उड़ने वाले जानवरों का आदि आदि।

इस पुस्तक में हम केवल वे लोक कथाऐं दे रहे है जिनमें मछलियों का वर्णन है। मछलियों की लोक कथाओं की इन लोक कथाओं में मछलियों की ऐसी बहुत सारी लोक कथाऐं हैं जिनमें मछलियों का केवल वर्णन है और कुछ ऐसी हैं जिनमें मछलियॉ लोगों की सहायता करती हैं। यहॉ दोनों प्रकार की लोक कथाऐं दी जा रही हैं। तो लो पढ़ो मछलियों की बहुत सारी लोक कथाऐं बहुत सारी जगहों से ली हुई।

ये कथाऐं बहुत शिक्षाप्रद हैं। आशा है कि ये लोक कथाऐं तुम लोगों को सीख देने के अलावा तुम लोगों का भरपूर मनोरंजन भी करेंगी।

1 मछली क्यों नहीं बोल सकती[1]

बच्चों क्या तुम जानते हो कि मछली बोल नहीं सकती। मछलियों की सबसे पहली लोक कथा में हम तुम्हें यही बताते हैं कि मछली क्यों नहीं बोल सकती। यह लोक कथा यूरोप के नौर्स देशों के पॉच देशों में से फ़िनलैंड देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

इस समय हम तुमको उस समय की तरफ चलते हैं जब दुनियॉ बनी ही बनी थी। पहाड़ बढ़ रहे थे, नदियों ने बहना शुरू ही किया था और मैदान ओस से ढके हुए थे।

एक दिन दुनियॉ बनाने वाले ने उन सबको बुलाया जो सुन सकते थे और उन सबसे कहा — "सुनो जो अब मैं तुमसे कहता हूॅ। मैं तुम लोगों को तुम्हारी पसन्द की आवाज देना चाहता हूॅ। ताकि जब तुम लोग काम कर रहे हो और इधर उधर घूम रहे हो तो तुम लोग आपस में बोल सको, बात कर सको।"

सब पहाड़ दुनियॉ बनाने वाले के सबसे पास थे जहॉ वह आसमान में रहता था। सो जब दुनियॉ बनाने वाला धरती पर आया तो पहाड़ों की चोटियों के साथ साथ बहुत ज़ोर की आवाज करता आया।

[1] Why Fish Cannot Talk? - a folktale from Finland, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=122
Collected and retold by Mike Lockett

पहाड़ों को वह आवाज बहुत अच्छी लगी और उन्होंने उन्हीं बादलों की सी गरज की आवाज में बोलना निश्चय कर लिया। इसी लिये आज पहाड़ जब हिलते हैं और धरती काँपती है तो हम उसी गरज की आवाज सुनते हैं।

हवा भी बहुत ज़ोर से बोलना चाहती थी पर वह ज़ोर से बोलना तो पहाड़ों ने ले लिया था तो हवा ने जब दुनियाँ बनाने वाले की सीटी की और झुनझुने की आवाजें सुनी तो हवा ने वे आवाजें नकल कर लीं।

नदी को दुनियाँ बनाने वाले की उँगलियों की हार्प[2] पर संगीत बजाने की आवाज सुनायी पड़ी तो उसने वह संगीतमयी आवाज अपने बुलबुले उठने की आवाज में नकल कर के मिला ली।

पेड़ों को दुनियाँ बनाने वाले की पोशाक की बाँहों के हिलने की सरसराहट की आवाज अच्छी लगी तो उन्होंने उसकी वह आवाज ले ली। चिड़ियों ने दुनियाँ बनाने वाले की बाँसुरी और गाने की आवाज सुनी तो उन्होंने उसकी वह आवाजें ले ली।

कुछ चिड़ियें जो गाने में अच्छी नहीं थीं उनसे जितना अच्छा हो सकता था वे चीखने, या काँव काँव करने, या फिर हू हू करने लगीं।

[2] Harp is a western string music instrument. See its picture above.

जो जीव जमीन पर रहते थे उन्होंने दूसरे किस्म की आवाजें बनानी सीख लीं – कोई भौंकता था तो कोई म्याऊँ बोलता था। कोई फुसफुसाता था तो कोई गुर्राता था। कोई बा बोलता था तो कोई कुहुकता था। कोई चिल्लाता था तो कोई गुनगुनाता था। मतलब यह कि सबने अपनी अपनी पसन्द की आवाजें बना लीं।

इन सबमें आदमी सबसे ज़्यादा होशियार निकला। वह इन सारी आवाजों को मिला कर बोल सकता था। वह न केवल जानवरों की आवाजों की नकल भी कर सकता था बल्कि वह अपनी अलग से भी आवाज बना सकता था।

आदमी ने इसे बात करने का नाम दिया। वह सोचता था कि केवल वह ही बात कर सकता है पर वह यह भूल गया कि जानवर उसकी तरह से तो बात नहीं कर सकते थे पर उनका बात करने का अपना तरीका है।

दुनियाँ बनाने वाला सबको आवाज दे कर बहुत खुश था। पर समुद्र के जीव आवाज नहीं पा सके। क्योंकि सारी किस्म की मछलियाँ पानी के अन्दर थीं इसलिये उनको यही पता नहीं चला कि उनके ऊपर धरती और आसमान में क्या हो रहा है।

उन्होंने पहाड़ों को गिरते हुए देखा और उनके हिलने को महसूस किया। उन्होंने हवा को तेज भागते हुए देखा पर वे उसकी सीटी की और झुनझुने की आवाज नहीं सुन पायीं।

उन्होंने चिड़ियों को और दूसरे जानवरों को अपना मुँह खोलते और बन्द करते हुए तो देखा तो पर उनकी चहचहाहट और गाना और वे आपस में क्या कह सुन रहे हैं यह नहीं सुन पायीं।

वे अपना सिर पानी के ऊपर निकाल कर सुन सकतीं थीं और यह जान सकतीं थीं कि बाहर क्या हो रहा हैं पर वे सब डरी हुई थीं इसलिये वे पानी के अन्दर ही रहीं और बस अपने मुँह को खोलती और बन्द करती रहीं पर बोलना नहीं सीख सकीं।

कुछ लोग इस कहानी को यहीं खत्म कर देते हैं और कहते हैं कि "इसी वजह से मछली बात नहीं कर सकती।" पर अगर तुम देखो तो कई बार उड़ती हुई मछलियाँ हवा में उछलती हैं और नाव में बैठे लोगों की बातें सुनने की कोशिश जरूर करती हैं।

पर वे खुद कोई बात नहीं कर सकतीं।

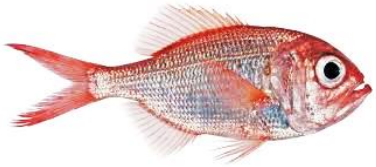

2 पहले ऑसू[3]

मछलियों की लोक कथाओं की यह दूसरी लोक कथा यह बताती है कि वह मछली ही थी जिसकी वजह से आदमी की ऑखों में पहली बार ऑसू आये। यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये उत्तरी अमेरिका में रहने वाले आदिवासियों की लोक कथाओं से ली है।

यह बहुत पहले की बात है कि एक आदमी सील मछली का शिकार करने के लिये समुद्र के किनारे गया।

उस आदमी की खुशी का ठिकाना न रहा जब उसने देखा कि समुद्र के किनारे तो बहुत सारी सील मछलियॉ बैठी हुई थीं। उसको लगा कि आज तो वह बहुत सारी मछलियॉ अपनी पत्नी और बेटे के लिये ले जा पायेगा।

वह धीरे धीरे दबे पॉव उन मछलियों की तरफ बढ़ा। सील मछलियॉ कुछ बेचैन हो गयीं। उनको बेचैन देख कर उस आदमी की चाल भी थोड़ी धीमी पड़ गयी।

अचानक सील मछलियॉ समुद्र के पानी में खिसकने लगीं। वह आदमी कुछ और परेशान हो गया। उसकी तो दावत जा रही थी। पर फिर उसने एक सील मछली अपने साथियों के पीछे पीछे जाती देखी। वह अपने साथियों की तरह से तेज़ नहीं चल पा रही थी।

---

[3] The First Tears – a story from the Inuit Tribe, Native Americans, North America.
Adapted from the Web Site : http://americanfolklore.net/folklore/2010/09/the_first_tears.html
retold by SE Schlosser.

उसने सोचा कि अब वह इसी सील को पकड़ेगा। उसको इस सील को पकड़ने से पैदा हुई अपनी पत्नी और अपने बेटे की ऑखों में खुशी की झलक दिखायी दी।

इतनी बड़ी सील से तो उनका पेट कई दिनों तक के लिये भर जायेगा। यह सोच कर वह दबे पॉव उस सील की तरफ चल दिया। वह उसी सील मछली को पकड़ेगा।

आदमी को लगा कि उस सील ने उसको देखा नहीं है पर अचानक ही वह सील मछली उछली और समुद्र में चली गयी।

आदमी उसके पीछे भागा तो पर वह उसको पकड़ नहीं पाया। लेकिन उसी समय उसको अपने दिल में कुछ अजीब सा महसूस हुआ। उसकी ऑखों से पानी टपकने लगा। उसने अपनी ऑखें छुई और उनका पानी चखा। वह उसको नमकीन लगा।

उसके मुॅह और छाती से भी अजीब अजीब आवाजें आ रही थीं जैसे उसका दम सा घुट रहा हो।

उसके बेटे ने उसकी वे आवाजें सुनीं और जा कर अपनी मॉ को बताया तो वे दोनों यह जानने के लिये समुद्र के किनारे की तरफ दौड़े कि वह आदमी ठीक था कि नहीं।

उस आदमी की पत्नी और बेटा यह देख कर बड़े आश्चर्य में पड़ गये कि उस आदमी की ऑखों से पानी बह रहा था।

उस आदमी ने उनको बताया कि जब वह समुद्र के किनारे सील मछलियॉ पकड़ने गया था तब समुद्र का किनारा सील मछलियों से

भरा हुआ था। यह देख कर वह बहुत खुश हुआ। पर जैसे ही उसने उनको अपने चाकू से मारना चाहा पर वे सबकी सब पानी में खिसक गयीं।

जब वह यह सब कह रहा था तो उसकी पत्नी और बेटे की ऑखों से भी पानी बहना शुरू हो गया और वे दोनों भी उस आदमी के साथ साथ रोने लगे।

सो इस तरह से उन लोगों ने सबसे पहले रोना शुरू किया।

बाद में उस आदमी और उसके बेटे ने मिल कर एक सील मारी और फिर उस सील मछली को दूसरी सील मछलियों को पकड़ने का जाल बनाने के लिये इस्तेमाल किया।

3 निक मछली[4]

मछलियों की लोक कथाओं की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली है। यह लोक कथा मछली की लोक कथा तो नहीं है पर इसमें एक लड़का माँ के शाप से आधा मछली और आधा आदमी बन जाता है।

एक बार मसीना[5] में एक स्त्री रहती थी जिसके निक[6] नाम का एक बेटा था। वह अपना सारा समय चाहे दिन हो या रात समुद्र में तैर कर ही गुजारता था।

उसकी माँ उसको बस समुद्र के किनारे से ही आवाज देती रहती थी — "निक, पानी से बाहर आ, तू कोई मछली नहीं है जो हर समय पानी में ही रहता है।"

पर वह उसकी बात बिल्कुल नहीं सुनता और आगे तक तैरता चला जाता। इतना चिल्लाते चिल्लाते निक की माँ की आँतें खराब हो गयीं।

---

[4] Nick Fish – a folktale from Italy from its Palermo area.
Adapted from the book : "Italian Folktales", by Italo Calvino". Translated by George Martin in 1980. Hindi translation of some stories is available from hindifolktales@gmail.com as e-books free of charge.

[5] Messina – a port city in Italy on its Sicily Island. See its map above.

[6] Nick – the name of the boy

एक बार जब उसकी माँ उसको समुद्र में से बाहर बुलाने के लिये बहुत देर तक चिल्लाती रही तो उसकी आवाज भी फटने लगी।

फिर भी वह जब किनारे पर नहीं आया तो उसके मुँह से निकला — "निक, जा तो तू फिर मछली ही बन जा।"

शायद स्वर्ग उस दिन सुन रहा था सो उसका कहा सच हो गया। देखते ही देखते निक आधा मछली और आधा आदमी बन गया। उसके पैर बतख की तरह जाल वाले थे और उसका गला मेंढक जैसा था।

उसके बाद तो निक ने फिर कभी किनारे पर कदम ही नहीं रखा। यह बात निक की माँ के दिल को इतनी लगी कि वह कुछ ही दिनों में मर गयी।

अब यह बात राजा के कानों तक पहुँची कि मसीना के समुद्र में एक ऐसा जानवर है जो आधा मछली है और आधा आदमी है।

यह सुन कर राजा ने अपने सब नाविकों को चेतावनी दे दी कि जो कोई नाविक निक को देखे तो वह उसको पकड़ कर उसके पास ले आये वह उससे बात करना चाहता था।

एक दिन एक नाविक खुले समुद्र की तरफ बढ़ता जा रहा था कि उसने निक को समुद्र में तैरते हुए देखा। वह वहीं नाव के पास ही तैर रहा था।

उसने निक से कहा — "मसीना के राजा तुमसे मिलना चाहते हैं।" निक तुरन्त ही राजा के महल के पास तक तैर गया।

राजा मुस्कुराते हुए उसके पास आया और उससे बोला — "निक मछली, तुम तो बहुत ही अच्छे तैराक हो। मैं चाहता हूँ कि तुम सिसिली टापू[7] के चारों तरफ तैरो और मुझे बताओ कि समुद्र कहाँ सबसे ज़्यादा गहरा है और वहाँ पर कौन सी ऐसी जगह ऐसी है जो देखने के काबिल है।"

राजा के हुक्म से निक मछली सिसिली टापू के चारों तरफ तैरा और थोड़े ही समय में राजा के पास वापस आ गया।

उसने बताया कि सारे समुद्र के नीचे उसने पहाड़, घाटियाँ, गुफाऐं, और बहुत सारे तरीके की मछलियाँ देखीं। वह केवल उस जगह डरा जब वह लाइटहाउस[8] के पास से निकला क्योंकि वहाँ वह समुद्र की तली नहीं देख सका।"

राजा ने पूछा — "तो फिर मसीना किसके ऊपर बना हुआ है? यह तुमको वहाँ जा कर देखना है।"

निक वहाँ फिर गया और सारे दिन पानी के अन्दर रहा। वहाँ से लौट कर उसने राजा से कहा — "राजा साहब, मसीना एक चट्टान पर बना हुआ है और वह चट्टान तीन खम्भों पर रखी हुई है।

[7] Sicily Island is in the Mediterranean Sea in the South-West of Italy. See it in the map.

[8] Lighthouse – is tall tower on the seashore showing light to the ships. They are a guide point for ships.

एक खम्भा तो "आवाज" है दूसरा खम्भा है "लकड़ी का एक टूटा हुआ टुकड़ा" आीर तीसरा है "टूटा हुआ"।

ओ मसीना ओ मसीना एक दिन तुम बहुत पतले हो जाओगे

राजा को यह सुन कर बहुत आश्चर्य हुआ और उसने निश्चय किया कि वह निक को नैपिल्स[9] ले जायेगा जहाँ वह ज्वालामुखी वाली समुद्र की तली देखेगा।

निक वहाँ भी गया और वहाँ से आ कर राजा को बताया कि वहाँ उसको ठंडा पानी मिला, फिर गर्म पानी मिला और कुछ जगह पर उसको ताजा पानी के स्रोत भी दिखायी दिये।

राजा को यह सब समझ में नहीं आया तो निक ने राजा से दो बोतलें माँगीं – एक गर्म पानी से भरी हुई और एक ताजा पानी से भरी हुई।

पर राजा यह सुन कर बहुत दुखी था कि उसके लाइटहाउस के नीचे की जगह के नीचे तो तली ही नहीं थी। वह निक मछली को वापस मसीना ले गया और उससे कहा कि वह यह देख कर उसे बताये कि लाइटहाउस के नीचे कितनी गहरायी थी।

निक फिर पानी के नीचे गया और दो दिन तक वहाँ रहा। जब वह सतह पर लौटा तो उसने राजा को बताया कि उसको तो वहाँ उसकी तली ही दिखायी नहीं दी।

[9] Naples is a historical port town of Italy situated on the Mediterranean Sea shore on the Western side of Southern Italy.

इसकी वजह यह थी कि नीचे की एक चट्टान धुँए का एक खम्भा सा ऊपर फेंक रही थी और उससे सारा पानी धुँधला हो रहा था।

अब राजा की उत्सुकता और बढ़ गयी। वह बोला — "तुम लाइटहाउस से नीचे कूद मार कर देखो।"

असल में यह लाइटहाउस भी धरती से निकली हुई एक चट्टान की नोक पर खड़ा था। पुराने समय में यहाँ एक आदमी रहता था जो जहाजों को समुद्र में ज्वार आने की खबर बिगुल बजा कर और एक झंडा लहरा कर दिया करता था ताकि वे गहरे समुद्र से दूर रहें।

निक मछली वहाँ से कूदा। राजा ने उसका एक दिन इन्तजार किया, दो दिन इन्तजार किया, फिर तीन दिन, पर निक का कोई पता नहीं था। अन्त में वह एक पीले पड़े भूत की सी शक्ल के साथ बाहर निकला।

राजा ने पूछा — "क्या बात है निक, क्या हुआ?"

"मैं तो डर के मारे मर ही गया था। मैंने वहाँ एक इतनी बड़ी मछली देखी जिसमें एक पूरा का पूरा जहाज आ जाये। वह मुझे न निगल ले इसलिये मैं मसीना को थामने वाले तीन खम्भों में से एक खम्भे के पीछे छिप गया।"

उसका यह हाल सुनते समय राजा का मुँह खुला का खुला रह गया। पर उसकी यह उत्सुकता तभी भी बनी रही कि लाइटहाउस के नीचे कितनी गहरायी थी।

पर निक ने मना कर दिया कि वह अब वहाँ नीचे जाने को तैयार नहीं था। वह बोला — "योर मैजेस्टी, मैं उधर जाने में बहुत डरता हूँ। मैं वहाँ जाने को तैयार नहीं हूँ।"

जब राजा उसको फिर से जाने को राजी नहीं कर सका तो उसने अपना रत्न जड़ा ताज उतारा और उसको समुद्र में फेंक दिया और बोला — "निक जाओ, मेरा ताज ले कर आओ।"

"मैजेस्टी, यह तो बड़ा अच्छा विचार है। एक राज्य का ताज।"

राजा बोला — "निक, यह दुनियाँ में अपने किस्म का एक ही ताज है जाओ और उसको ले कर आओ।"

निक बोला — "अगर आपका हुक्म है तो मैं उसे जरूर ले कर आऊँगा। पर मेरा मन कहता है कि अबकी बार मैं अगर नीचे गया तो मैं फिर वापस नहीं आ पाऊँगा।

मुझे थोड़ी सी मसूर दे दीजिये। अगर मैं बच गया तब तो मैं ऊपर आ जाऊँगा पर अगर आप मसूर ऊपर आती देखें तो समझ लीजियेगा कि मैं फिर कभी नहीं लौटूँगा।"

राजा ने उसको थोड़ी सी मसूर दे दी और निक समुद्र में कूद गया। उसके जाने के बाद राजा ने उसका बहुत इन्तजार किया।

काफी बाद में समुद्र की सतह पर मसूर तैरती नजर आयी पर लोग निक मछली के वापस आने का अभी तक इन्तजार कर रहे हैं।

4 शार्क का राजा[10]

मछलियों की यह लोक कथा उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के हवाई राज्य में कही सुनी जाती है। इस लोक कथा में एक शार्क मछली को एक लड़की से प्यार हो जाता है।

एक दिन शार्क मछलियों के राजा ने एक बहुत सुन्दर लड़की को समुद्र में तैरते देखा। तो उसको देखते ही उसको उससे प्यार हो गया।

सो उसने अपने आपको एक बहुत सुन्दर नौजवान आदमी के रूप में बदला सरदारों जैसा पंखों का एक शाल[11] ओढ़ा और उस लड़की के गॉव तक उस लड़की के पीछे पीछे चला गया।

गॉव वाले तो एक विदेशी सरदार को अपने गॉव में देख कर बहुत ही खुश हो गये। उन्होंने उसकी बड़ी आवभगत की। उसको दावत खिलायी, उसके लिये खेलों का इन्तजाम किया। उस नौजवान ने सारे खेल जीत लिये।

उसके बाद जब उस नौजवान ने उस लड़की से शादी की इच्छा प्रगट की तब तो वह लड़की भी बहुत ही खुश हो गयी।

---

[10] The King of Sharks – a folktale from Native Americans, Hawaii, North America.
Adapted from the Web Site :
http://americanfolklore.net/folklore/2010/07/the_trickster_tricked.html retold by SE Schlosser.

[11] Translated for the word “Cape” which is worn on both shoulders both for decoration and for saving oneself from cold. See its picture above. It may be without hood too.

अब वह शार्क का राजा एक झरने के पास एक घर में अपनी पत्नी के साथ खुशी खुशी रहने लगा। वह अपने आदमी के रूप में झरने के नीचे वाले तालाब में रोज तैरता था।

कभी कभी वह पानी में अन्दर इतनी ज़्यादा देर तक रहता था कि उसकी पत्नी को डर लगने लगता। पर शार्क के राजा ने उसको समझाया कि वह उस तालाब की तली में अपने बेटे के लिये जगह बना रहा था इसलिये उसको डरने की कोई जरूरत नहीं है।

बच्चा होने से पहले शार्क का राजा ने एक पंख लगा शाल अपनी पत्नी को दिया और फिर अपने लोगों में लौट गया। पर वह अपनी पत्नी से यह वायदा ले गया कि वह अपने बेटे को हमेशा वह पंख लगा शाल ओढ़ा कर रखेगी।

जब बच्चा पैदा हुआ तो उसकी माँ ने उसकी पीठ पर एक निशान देखा जो उसको शार्क के मुँह जैसा लगा। तब उसको पता चला कि उसका पति कौन था।

बच्चे का नाम नानावे[12] रखा गया। जैसे जैसे वह बच्चा बड़ा होता गया वह भी अपने पिता की तरह अपने घर के पास उस झरने के नीचे वाले तालाब में रोज तैरता।

कभी कभी जब उसकी माँ उसको उस तालाब में तैरते देखती तो उसको लगता कि जैसे पानी के नीचे कोई आदमी नहीं बल्कि कोई शार्क तैर रही हो।

[12] Nanave – name of the son of the Shark King

हर सुबह नानावे तालाब के किनारे खड़ा होता, पंखों वाला शाल उसके कंधों पर पड़ा रहता और वह आते जाते मछियारों से पूछता कि वे उस दिन मछलियाँ कहाँ पकड़ेंगे।

वे मछियारे सीधे स्वभाव से उसको बता देते कि वे उस दिन मछली कहाँ पकड़ेंगे। बस फिर नानावे उस तालाब में कूद जाता और घंटों के लिये गायब हो जाता।

असल में वह उस तालाब में जा कर वहाँ की मछलियों को सावधान कर देता ताकि वे पकड़ी न जायें। इससे मछियारों ने देखा कि वे रोज कम और कम मछलियाँ पकड़ पा रहे थे।

इससे गाँव के लोग भूखे रहने लगे तो गाँव के सरदार ने गाँव के लोगों को गाँव के मन्दिर में बुलाया।

उसने गाँव के लोगों से कहा — "ऐसा लगता है कि हम लोगों में कोई बुरा देवता है जो हमारे मछियारों को मछलियाँ पकड़ने में रुकावट डाल रहा है। उसको ढूँढने के लिये मैं अब अपना जादू इस्तेमाल करने वाला हूँ।"

यह कह कर सरदार ने जमीन पर कुछ पत्तियाँ बिछा दीं फिर उसने गाँव के हर आदमी को उन पत्तियों के ऊपर चलने के लिये कहा।

उसने बताया कि जब लोग उन पत्तियों पर चलेंगे तो अगर वह आदमी होगा तब तो उसके पाँवों से वे पत्तियाँ कुचल जायेंगीं जबकि

अगर वह कोई देवता होगा तो उसके पॉव पत्तियों के ऊपर कोई निशान नहीं छोड़ेंगे।

यह सुन कर नानावे की मॉ बहुत डर गयी क्योंकि उसको मालूम था कि उसका बेटा तो देवता का बेटा था और अगर लोगों को यह पता चल गया तो वे उसको मार देंगे।

जब पत्तों पर चलने की नानावे की बारी आयी तो वह उनके ऊपर बहुत तेज़ी से दौड़ा पर इस तेज़ी से दौड़ने की वजह से वह फिसल गया।

एक आदमी ने उसको गिरने से चोट लगने से बचाने के लिये उसका पंखों वाला शाल पकड़ लिया जो वह हमेशा ओढ़े रहता था। उसके पकड़ने पर वह शाल उसके कन्धों से खिसक गया और नीचे गिर पड़ा और सारे लोगों ने उसकी पीठ पर शार्क के खुले हुए मुँह वाला निशान देख लिया।

उन्होंने नानावे को गॉव से बाहर निकाल दिया पर वह उनके हाथों से फिसल गया और तालाब में डुबकी मार गया। इस पर लोगों ने उस तालाब को भरने के लिये उस तालाब में बड़े बड़े पत्थर फेंके।

इतने सारे पत्थर फेंकने के बाद उन्होंने सोचा कि शायद नानावे मर गया पर नानावे की मॉ को मालूम था कि उसके पिता ने उसके रहने के लिये उस तालअबकी तली में एक जगह बनायी थी। और

वह जगह थी एक रास्ता जो उस तालाब में से समुद्र में जा कर खुलता था।

बस नानावे ने एक शार्क का रूप रखा और समुद्र में जा कर अपने पिता शार्क के राजा से मिल गया।

पर उस दिन के बाद उन मछियारों ने फिर कभी किसी से यह नहीं कहा कि वे उस दिन मछली पकड़ने कहाँ जा रहे थे।

उनको डर था कि अगर कहीं किसी शार्क ने यह सुन भी लिया तो वह उन मछलियों को वहाँ से भगा देगा और वे मछलियाँ नहीं पकड़ पायेंगे और वे अब भूखों मरना नहीं चाहते थे।

5 बेकर का आलसी बेटा[13]

मछली की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के पुर्तगाल देश में कही सुनी जाती है।

एक बार की बात है कि पुर्तगाल में एक स्त्री बेकर[14] थी। उसके एक बहुत ही आलसी बेटा था। जब सारे बच्चे आग जलाने के लिये लकड़ी इकट्ठा करने के लिये जाते थे तो उसको भी लकड़ी लाने के लिये कहा तो जाता था पर वह वहाँ कभी नहीं जाता था।

अपने ऐसे आलसी बेटे को देख कर उस स्त्री को बहुत दुख होता था पर उसकी समझ में नहीं आता कि वह उसके बारे में करे तो करे क्या।

सो एक दिन उसने उस बेटे को जबरदस्ती उन बच्चों के साथ लकड़ियाँ लाने के लिये भेज दिया तो वह भी दूसरे बच्चों के साथ चला गया।

पर जैसे ही वह जंगल पहुँचा तो दूसरे बच्चे तो लकड़ियाँ और पेड़ों की छोटी छोटी शाखें इकट्ठा करने में लग गये पर वह एक नदी

[13] Baker's Idle Son – a folktale from Portugal, Europe. Adapted from the book "Portugese Folk-Tales" This tale is available at : https://www.surlalunefairytales.com/book.php?id=54&tale=1695

[14] Baker is the man or woman who bakes bread, biscuits, cookies cakes etc… Baking is a process of cooking food. See her picture above.

के किनारे अपना खाना खाने बैठ गया जो वह अपने घर से लाया था।

जब वह खाना खा रहा था तो एक मछली वहाँ आयी और उसका गिरा हुआ खाना खाने लगी। आखिर उसने उसको पकड़ लिया। मछली ने उससे प्रार्थना की कि अगर वह उसको मारे नहीं और छोड़ दे तो वह उसकी हर इच्छा पूरी करेगी।

पर उस आलसी लड़के को उस मछली पर विश्वास नहीं हुआ तो वह उससे बोला — "मेरे भगवान और मेरी मछली के नाम पर मैं यह इच्छा करता हूँ कि लकड़ी का एक बहुत बड़ा ढेर जो मेरे साथ वाले सब बच्चों के लकड़ी के ढेरों से भी बड़ा हो मेरे सामने आ जाये। और वह मेरे बिना छुए ही यहाँ से मेरे घर तक चलता जाये।"

तुरन्त ही लकड़ी का बँधा हुआ एक बहुत बड़ा ढेर उसके सामने आ गया। जब उसने लकड़ी के उस ढेर को ठीक से देख लिया तभी उसने उस मछली को समुद्र में जाने दिया।

अब वह घर वापस चला। घर जाते समय वह बीच में महल के सामने से गुजर रहा था तो महल की खिड़की पर राजकुमारी बैठी हुई थी।

राजकुमारी के साथ साथ साथ राजा भी बैठा था। उसको उस लकड़ी के ढेर को अपने आप चलते देख कर बहुत आनन्द आया।

राजकुमारी को भी वह देखने में इतना अच्छा लगा कि वह हँस पड़ी।

उसको हँसते देख कर आलसी लड़का बोला — "मेरे भगवान और मेरी मछली के नाम पर मैं यह इच्छा करता हूँ कि राजकुमारी के एक बेटा हो और उसको यह पता न चले कि उसका पिता कौन है।"

राजकुमारी को उसी समय से लगने लगा कि उसको बच्चे की आशा हो आयी है। जब राजा को यह पता चला तो वह यह जान कर उससे बहुत नाराज हुआ। उसने उसको उसकी प्रिय दासियों के साथ एक महल में कैद कर दिया। समय आने पर राजकुमारी ने एक बेटे को जन्म दिया।

वह आलसी लड़का फिर जंगल लौटा तो वह मछली फिर आयी और उसने लड़के को बताया कि उस राजकुमारी के बेटा हुआ है।

मछली के कहे अनुसार उसने राजा के महल के सामने एक महल बनवाया जो राजा के महल से भी ज़्यादा शानदार था।

इसके महल के बागीचे में हर रंग के फूल थे और उनमें एक फलों के पेड़ों का बागीचा भी था। इस फल के बागीचे में एक सन्तरे का पेड़ था जिस पर बारह सुनहरी सन्तरे लगे थे।

पर यह सब तो उसे उस मछली और परियों का दिया हुआ था। वह खुद तो बहुत आलसी था। महल बन जाने के बाद वह

आलसी लड़का उस महल में गया और एक राजकुमार बन कर रहने लगा। दूसरे लोग उसको केवल राजकुमार की तरह से ही जानते थे किसी और तरह उसे जानते ही नहीं थे।

एक दिन राजा ने उस लड़के के पास यह सन्देश भेजा कि वह उसका महल देखना चाहता है। उस आलसी लड़के ने कहा कि वह खुशी से अपना महल उसको दिखायेगा। उसने राजा और उसके सारे दरबारियों को सुबह के नाश्ते के लिये बुला लिया।

राजा और उसके दरबारी उसका महल देख कर बहुत खुश हुए कि उसमें कितने आराम के साधन थे। महल देखने के बाद वे उसका बागीचा देखने गये।

बागीचे में इतने सारे फूल देख कर वे आश्चर्यचकित रह गये पर सबसे ज़्यादा आश्चर्य तो उन सबको सन्तरे का पेड़ देख कर हुआ जो उसके फलों के बागीचे में लगा हुआ था और जिस पर सुनहरी सन्तरे लगे हुए थे।

उस आलसी लड़के ने राजा और उसके दरबारियों से कहा कि वे वहाँ से कुछ भी ले जा सकते था सिवाय सुनहरी सन्तरों के।

सब कुछ देख कर वे सब नाश्ते के लिये महल लौटे और नाश्ते के लिये बैठे। जब नाश्ता खत्म हो गया तो राजा और दरबारी लोग अपने महल जाने के लिये लौटे।

जाते समय उस लड़के ने राजा से कहा कि वह उन सबको अपने महल में बुला कर बहुत खुश था और उसने उनका बहुत

अच्छे से स्वागत किया पर वह इस बात से बहुत दुखी था कि इतने अच्छे स्वागत के बावजूद उसका एक सन्तरा गायब था।

दरबारियों ने तो साफ मना कर दिया कि उनमें से किसी ने उसका कोई सन्तरा नहीं लिया। उन्होंने उस लड़के को अपने कोट उतार कर भी दिखाये ताकि वह खुद अपनी ऑखों से यह देख सके कि उसका उनको अपराधी ठहराना ठीक नहीं था।

राजा को यह सुन कर बहुत शर्म आयी क्योंकि अब केवल वही एक देखने से रह गया था।

उसने अपना कोट उतारा पर जॉच करने पर उसकी जेबों से कुछ नहीं मिला। सो वह जब अपने कोट को दोबारा पहनने लगा तो उस लड़के ने उससे एक बार फिर से अपनी जेबें देखने के लिये कहा क्योंकि जब वह सन्तरा उसके दरबारियों ने नहीं लिया तो जरूर उसी ने लिया होगा।

सो राजा ने फिर से अपनी जेब में हाथ डाला तो उसको अबकी बार अपनी जेब में एक सन्तरा मिल गया। उसने वह सन्तरा अपनी जेब से निकाल लिया।

पर राजा यह देख कर बहुत परेशान हो गया कि यह सन्तरा उसकी जेब में आया कहॉ से? क्योंकि उसने तो सन्तरा छुआ भी नहीं था। उसको बहुत शर्म आयी।

आलसी लड़के ने कहा कि आप चिन्ता न करें क्योंकि यही राजकुमारी के साथ भी हुआ जिसने यह जाने बिना एक बेटे को जन्म दिया कि उसका पिता कौन था।

इस तरह मछली के ऊपर पड़ा हुआ जादू टूट गया। अब वह एक सुन्दर राजकुमार बन गयी और उसने राजकुमारी से शादी कर ली।

और वह आलसी लड़का एक बहुत ही अमीर आदमी बन कर अपने घर लौट गया।

6 नोमी और जादू की मछली[15]

मछली की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये अफ्रीका महाद्वीप के दक्षिणी अफ्रीका देश की लोक कथाओं से ली है। यह एक सिन्डरैला जैसी लोक कथा है।

एक बार की बात है कि दक्षिण अफ्रीका में एक लड़की रहती थी जिसका नाम नोमी[16] था। जब वह बहुत छोटी थी तभी उसकी मॉ मर गयी थी। उसकी मॉ के मरने के बाद में उसके पिता ने दूसरी शादी कर ली। इस स्त्री के अपनी भी एक बेटी थी जिसका नाम था नोम्सा[17]।

नोमी एक सुन्दर और लम्बी लड़की थी जबकि नोम्सा एक छोटी और बदसूरत लड़की थी। उस आदमी की दूसरी पत्नी नोमी को बिल्कुल नहीं चाहती थी।

वह अक्सर उसको पीटती और उसको शाम का खाना दिये बिना ही उसको सोने के लिय भेज देती। जबसे नोमी छह साल की थी तभी से उसकी सौतेली मॉ उसको गायों की देखभाल के लिये भेज देती थी।

रोज सुबह सवेरे वह बच्ची को दरवाजे के बाहर यह कहते हुए धकेल देती — "जा जा कर गायों को मैदान में चरा कर ला और हॉ

[15] Nomi and the Magical Fish – a fairy tale from South Africa, Africa.
[16] Nomi – the name of the girl whose mother died.
[17] Nomsa – the name of the girl who came with the new wife of the man.

देख दोपहर को घर मत आना क्योंकि मेरे पास तेरे लिये खाना नहीं है। और अपना यह बदसूरत कुत्ता भी साथ ही लेती जा।"

यह सुनने के बाद नोमी के पास और कोई चारा ही नहीं रह जाता कि वह गायों को चराने के लिये मैदान जाये और फिर शाम को ही घर लौटे।

एक दिन ऐसा हुआ कि गायें पानी के एक तालाब के पास पानी पीने के लिये इकट्ठा हुईं तो नोमी उनको देखने लगी। उसने देखा कि पानी में एक बड़ी सी मछली इधर उधर घूम रही थी। उसने उसे पकड़ने की सोचा। पर वह उससे डर गयी।

वह रोने लगी क्योंकि उसको भूख लगी थी। उसका रोना सुन कर वह मछली पानी के ऊपर आयी और नोमी से बोली — "डरो नहीं नोमी मैं तुम्हें छुऊँगी भी नहीं। तुम रो क्यों रही हो?"

बच्ची सुबकती हुई बोली — "मुझे भूख लगी है। मेरे पिता की दूसरी पत्नी मेरे लिये बहुत ही निर्दयी है। वह अक्सर मुझे खाना भी नहीं देती।

आज सुबह नाश्ते के पहले ही उसने मुझे गायें चराने के लिये भेज दिया। कल रात को भी मैंने खाना नहीं खाया। मेरी बाहों की तरफ देखो ये कितनी पतली सी हैं। मेरे हाथों की उँगलियाँ तो बिल्कुल किसी चिड़िया के पंजे की तरह लगती हैं।

जाड़े में मैं ठंडी रहती हूँ क्योंकि मेरे पास अपने आपको गर्म रखने के लिये कोई कोट ही नहीं है। ज़रा मेरे इन भद्दे कपड़ों को

देखना तो जो मैं पहन रही हूँ। मेरे पास तो पहनने के लिये सुन्दर कपड़े भी नहीं हैं।"

यह सुन कर मछली ने नोमी से बड़ी नम्रता से बात की और उसको रोटी और दूध दिया। उसने उसको गायों को रोज वहाँ पानी पिलाने के लिये लाने के लिये कहा। उसने यह भी कहा कि जब वे गायें वहाँ पानी पी रही होंगी तब वह उसको खाना खिलाया करेगी।

नोमी ने ऐसा ही किया और वह फिर उसके बाद से तन्दुरुस्त होती चली गयी। खाना मिलने से वह अब खुश भी रहने लगी थी और सुन्दर भी हो गयी थी। उसका कुत्ता भी मछली का दिया खाना खा कर मोटा हो गया था और अब खाने की मेज के नीचे नहीं घुसता था।

यह देख कर तो नोमी की सौतेली माँ कुछ नाराज सी हो गयी और उसे कुछ शक सा होने लगा कि कोई जरूर नोमी को खाना देता है।

एक दिन उसने एक बड़ी सी डंडी से नोमी को खूब पीटा ताकि वह उसको यह बताये कि उसको खाना कौन देता है पर नोमी ने उसको बता कर नहीं दिया।

जब नोमी ने उसको नहीं बताया तो उसने कुत्ते को पीटा। आखिर कुत्ते को बताना पड़ा कि एक बड़े से तालाब में एक बड़ी सी मछली रहती है वही हमको रोज खाना देती है।

यह सुन कर बेचारी लड़की उस तालाब की तरफ दौड़ी गयी और जा कर यह सब उस मछली से कहा।

मछली बोली — "मैं उस नीच स्त्री को बहुत अच्छी तरह से जानती हूँ। मैं जानती हूँ कि वह मुझे मार डालेगी और खा जायेगी। पर जब वह मुझे मार डाले तो तुम रोना नहीं। तुम मेरी हड्डियाँ लेना और उनको सरदार के बागीचे में फेंक देना। पर ध्यान रखना कि ऐसा करते हुए तुम्हें कोई देखे नहीं।"

और फिर ऐसा ही हुआ। अगले दिन ही नोमी की सौतेली माँ ने नोमी के पिता से अपनी तबियत खराब होने का बहाना किया और उससे कहा कि उसकी बीमारी का इलाज केवल एक बड़ी मछली है जो एक खास तालाब में मिलेगी।

सो नोमी के पिता ने नोमी की दोस्त मछली को मार डाला और ला कर अपनी पत्नी को दे दिया। पत्नी ने उसे खा लिया। आखीर में बस उसकी हड्डियाँ हीं उसकी प्लेट में बचीं।

खा कर उसने नोमी से कहा — "जा यह प्लेट ले जा और धो दे। अब तुझे और तेरे इस बदसूरत कुत्ते को कोई खाना नहीं देगा ओ शैतान लड़की। तू फिर से बदसूरत और पतली दुबली हो जायेगी और तेरी उंगलियाँ भी चिड़िया के पंजे जैसी हो जायेंगी।"

नोमी ने उसकी वह प्लेट उठायी और उसको धोने ले गयी पर उस मछली की हड्डियाँ उसने चुपचाप छिपा दीं।

उसी रात को जब सब सो गये तो अँधेरे में वह दबे पाँव उठी और चुपचाप सरदार के बागीचे की तरफ चली और वहाँ जा कर उसने उस मछली की हड्डियाँ उसके बागीचे में फेंक दीं।

उसके बाद वह घर चली गयी और जा कर सो गयी।

सुबह को तो क्या हल्ला गुल्ला मचा कि सरदार के घर के बागीचे में सफेद हड्डियाँ पायी गयी हैं। किसने डालीं वे हड्डियाँ वहाँ? और केवल हड्डियाँ ही नहीं बल्कि वहाँ कुछ और भी अजीब चीज़ थी। और वह यह कि कोई उनको उठा नहीं पा रहा था।

उन हड्डियों को वहाँ से उठाने के लिये पहले एक, फिर दूसरा, फिर तीसरा नौकर भेजा गया पर उन तीनों में से कोई भी उन हड्डियों को न उठा सका। जैसे ही कोई उनको उठाने की कोशिश करता तो उसकी उंगलियाँ उन हड्डियों में से हो कर निकल जातीं जैसे कि वे धुँए की बनी हों।

आखिर सरदार उनको खुद उठाने के लिये आया पर उसकी किस्मत भी उसके नौकरों से कुछ ज़्यादा अच्छी नहीं थी।

फिर उसने गाँव की सारी लड़कियों को बुलवाया और उनसे उनको उठाने की कोशिश करने के लिये कहा और साथ में यह भी कहा कि जो कोई भी लड़की उन हड्डियों को उठा कर उसके पास लायेगी वह उससे शादी कर लेगा।

सो सब लड़कियों ने अपने अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने और उन हड्डियों को उठाने के लिये सरदार के घर जा पहुँचीं। पर कोई भी लड़की उन हड्डियों में से एक हड्डी भी न उठा सकी।

जब सब लड़कियों ने अपनी अपनी कोशिश कर ली तो सरदार ने पूछा — "क्या गाँव की सारी लड़कियाँ यहाँ थीं?"

एक स्त्री बोली — "यहाँ नोमी तो थी ही नहीं। वह तो गाय चराने गयी है।"

नोम्सा की माँ बोली — "नोमी तो तो कोई बहुत ताकतवर नहीं है। वह तो बहुत ही पतली दुबली है वह तो ये हड्डियाँ नहीं उठा सकती।"

पर सरदार बोला — "उसको मैदान से ले कर आओ।"

जब नोमी को सरदार के घर लाया गया तो वह वहाँ गयी जहाँ हड्डियाँ पड़ी हुई थीं और उसने वे सारी हड्डियाँ उठा कर सरदार को ऐसे दे दीं जैसे कोई खास बात ही न हो। उसका कुत्ता उसके पीछे खड़ा खड़ा खुशी से भौंक रहा था।

सरदार ने इस सुन्दर लम्बी लड़की और उसके खुश कुत्ते को देखा तो उससे कहा — "मैं तुमसे कल शादी करूँगा।"

और फिर बहुत सारी स्त्रियों ने सरदार की शादी के लिये बहुत अच्छे अच्छे खाने बनाये रोटियाँ बनायीं। आदमियों ने छह बैल मारे और बहुत सारी भेड़ें मारीं।

सरदार और नोमी की शादी की बहुत बड़ी दावत हुई पर उसमें नोम्सा और उसकी माँ नहीं आये। वे डर के मारे जंगल में भाग गये थे।

सरदार और नोमी फिर बहुत दिन तक खुशी खुशी रहे।

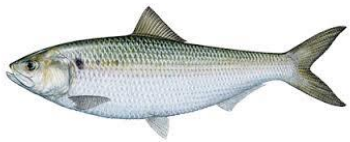

7 चमकती हुई मछली[18]

मछली की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार एक बहुत ही अच्छे बूढ़े पति पत्नी के लड़के मर गये थे तो वे बेचारे यह ही नहीं सोच पा रहे थे कि वे उनके बिना अपनी बाकी की ज़िन्दगी कैसे बितायेंगे।

बूढ़े की पत्नी बहुत बूढ़ी थी और बीमार भी बहुत रहती थी। बूढ़ा रोज जंगल जाता था और लकड़ी काट कर लाता था। फिर उस लकड़ी को बेचने के लिये बाजार ले जाता था। उनको बेच कर जो पैसा मिलता था उससे वह अपना पेट पालता था। इसी तरह से वह अपना गुजारा चला रहा था।

एक दिन जब वह जंगल जा रहा था तो कुछ कराहता जा रहा था कि रास्ते में उसको एक भला आदमी मिला जिसके लम्बी सी दाढ़ी थी।

वह लम्बी दाढ़ी वाला उस बूढ़े से बोला — "मुझे तुम्हारी परेशानियों का पता है। मैं तुम्हारी सहायता करूँगा। लो यह बटुआ लो। इसमें सौ डकैट[19] हैं। शायद यह तुम्हारी कुछ सहायता कर सकें।"

---

[18] Shining Fish – a folktale from Abruzzo area, Italy, Europe.
Adapted from the book : "Italian Folktales", by Italo Calvino". Translated by George Martin in 1980.
[19] Ducat – currency in use at that time in Europe

बूढ़े ने वह बटुआ ले लिया और वह बेहोश हो गया। जब तक उसे होश आया तब तक वह भला आदमी तो गायब भी हो गया था। वह बूढ़ा उस बटुए को ले कर अपने घर चला गया और वह बटुआ खाद के एक ढेर के नीचे छिपा दिया।

उसने अपनी पत्नी को भी इस बारे में कुछ नहीं बताया। उसने सोचा — "अगर मैंने उसको इसके बारे में बताया तो यह सारा पैसा बहुत जल्दी ही खत्म हो जायेगा।" सो अगले दिन वह रोज की तरह फिर लकड़ी काटने जंगल चला गया।

उस शाम जब वह घर पहुँचा तो उसने देखा कि उसकी खाने की मेज पर तो दावत का खाना लगा हुआ है। वह देख कर वह चौंक गया और अपनी पत्नी से पूछा — "तुमने यह सब कहाँ से खरीदा?"

पत्नी सीधे स्वभाव बोली — "आज मैंने खाद बेच दी।"

वह आदमी बोला — "अरी बेवकूफ उसके नीचे तो सौ डकैट छिपे हुए थे।"

"मुझे क्या मालूम। तुमने मुझसे उसके बारे में कुछ कहा ही नहीं था तो मुझे कैसे पता चलता। कहाँ से आये वे?"

अगले दिन वह बूढ़ा फिर ज़ोर ज़ोर से कराहता हुआ जंगल की तरफ चल दिया। उसको वह पहले वाला भला आदमी उसी जगह फिर मिल गया।

वह भला आदमी बोला — "मुझे तुम्हारी बदकिस्मती का पता है। शान्त हो जाओ। यह लो सौ डकैट और।"

बूढ़े ने उन डकैटों को ले लिया और अपने घर वापस आ गया। अबकी बार उसने वे पैसे राख के ढेर में छिपा दिये और रोज की तरह अगले दिन फिर जंगल लकड़ी काटने चला गया।

पर जब वह शाम को घर वापस लौटा तो उसकी खाने की मेज फिर वैसे ही बहुत सारे खानों से सजी हुई थी। वह फिर उसको देख कर परेशान हो गया।

उसने अपनी पत्नी से फिर पूछा — "आज तुमने इतना सारा खाना कहाँ से खरीदा?"

पत्नी ने सीधे स्वभाव कहा — "आज मैंने राख बेच दी।"

मगर आज उस बूढ़े के गले से वह खाना नीचे नहीं उतरा और वह बिना खाना खाये ही सोने चला गया। अगले दिन वह बूढ़ा फिर लकड़ी काटने के लिये जंगल चल दिया। आज वह बहुत ज़ोर ज़ोर से रोता हुआ जा रहा था।

आज भी उसको जंगल में वही भला आदमी उसी जगह मिल गया। आज वह बोला — "अबकी बार मैं तुमको पैसे नहीं दूँगा। आज तुम ये चौबीस मेंढक ले जाओ और इनको बेच कर इनके पैसे से एक मछली खरीद लो – सबसे बड़ी मछली जो भी तुम खरीद सकते हो।"

बूढ़े ने वे चौबीस मेंढक उस भले आदमी से ले लिये और जा कर उनको बाजार में बेच दिये। उससे आये पैसे से उसने एक बहुत बड़ी मछली खरीद ली और घर आ गया। रात को उसने देखा कि वह मछली तो चमक रही थी। उसमें से तो बहुत ज़ोर की रोशनी निकल रही थी जिससे सारी जगह में रोशनी फैल रही थी।

उसकी रोशनी इतनी तेज़ थी कि अगर उस मछली को हाथ में ले कर चले तो ऐसा लगता था जैसे कोई लालटेन ले कर चल रहा हो। शाम को वह उस मछली को घर के बाहर लटका देता ताकि वह ताजा रहे।

एक दिन बड़ी अँधेरी और तूफानी रात थी। मछियारे जो बाहर समुद्र पर मछलियाँ पकड़ने गये थे उनको घर वापस लौटने का रास्ता नहीं सुझाई दे रहा था सो वे लोग परेशान थे कि वे अब घर कैसे पहुँचें।

तभी उनको इस बूढ़े की खिड़की पर लटकी हुई इस मछली से निकली रोशनी दिखायी दे गयी। उसको देख कर उन्होंने इसी तरफ अपनी नावें खेना शुरू कर दिया और वे समुद्र में रास्ता भटकने से बच गये। वे ठीक से किनारे आ गये थे।

इस सबके बदले में उन सबने अपनी अपनी कमाई का आधा आधा हिस्सा उस बूढ़े को दे दिया और उससे समझौता किया कि अगर वह उस मछली को वहाँ पर ऐसे ही लटका कर रखेगा तो वे हमेशा अपना रात का शिकार उससे आधा आधा बाँट लेंगे।

बूढ़े ने ऐसा ही किया और फिर उसको कभी खाने की कोई मुश्किल नहीं उठानी पड़ी।

8 सुनहरी मछली[20]

मछली की यह लोक कथा उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के निकारागुआ[21] देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

निकारागुआ देश के किसी गॉव में एक बूढ़ा मछियारा रहता था। वह बहुत गरीब था। एक दिन उसने सोचा — "मैं गरीब हूँ तो क्या हुआ, मैं रोज मछली पकड़ने जाता तो हूँ।" और यह सोच कर ही उसके चेहरे पर मुस्कुराहट आ गयी।

पर इससे उसकी पत्नी नहीं मुस्कुरायी, खास कर के जब जबकि वह किसी भी दिन मछली पकड़ कर नहीं लाता था। वह मछली पकड़ने जाता जरूर था पर उसके हाथ कोई मछली लगती ही नहीं थी।

एक दिन उसकी पत्नी चिल्लायी — "चार दिन हो गये हैं, सुनते हो? चार दिन। चार दिन हो गये हमको बिना मछली खाये हुए। तुम क्या सोचते हो कि तुम अगर मुझे मछली ला कर नहीं दोगे तो मैं क्या मैं तुम्हारे लिये खाना बना दूँगी?"

और फिर आया पॉचवा दिन। खैर, पर यह पॉचवॉ दिन कोई मामूली दिन नहीं था। हालॅकि आज भी वह मछियारा बिना मछली

[20] The Golden Fish - a folktale from Nicaragua, North America. Adapted from the Web Site : http://www.themuralman.com/nicaragua/nicaragua_folk_tale.html
Collected and retold by Phillip Martin

[21] Nicaragua country is in Central America but still is in the continent of North America

पकड़े ही वापस आ गया था पर फिर भी आज का दिन कोई मामूली दिन नहीं था। यह उस मछियारे की पत्नी को बाद में पता चला।

जब पत्नी ने मछियारे के हाथ में मछली नहीं देखी तो वह फिर चिल्लायी — "आज पाँचवाँ दिन है और आज भी कोई मछली नहीं है। पाँच दिन बिना मछली के? उफ़।"

उस बूढ़े मछियारे ने बीच में ही अपनी पत्नी की बात काटी — "इससे पहले कि तुम आगे कुछ और बोलो मैं तुमको अपने आज के दिन के बारे में बता दूँ।

आज सचमुच में मैंने एक मछली पकड़ी थी – एक बहुत ही सुन्दर सुनहरी मछली। और तुम सच मानो या नहीं, पर वह मछली मुझसे बोली थी। उसने मुझसे कहा कि अगर तुम मुझे वापस समुद्र में फेंक दोगे तो तुमको कुछ इनाम मिलेगा।"

"तो फिर तुमने क्या किया?"

"मैं और क्या करता, मैंने उसको समुद्र में वापस फेंक दिया ताकि मुझे इनाम मिल सके।"

पत्नी ने पूछा — "फिर तुमने उससे किस तरह का इनाम माँगा?"

"कुछ नहीं।"

पत्नी चिल्लायी — "कुछ भी नहीं? पर क्यों? क्यों नहीं माँगा तुमने उससे इनाम? मुझे तो न यहाँ कोई इनाम दिखायी दे रहा है और न ही कोई मछली और न ही कोई शाम का खाना। मुझे तो यहाँ केवल एक बेवकूफ आदमी दिखायी दे रहा है।

क्या तुमको दिखायी नहीं दे रहा कि रसोई की आलमारी में कुछ भी खाना नहीं है? कोई रोटी या चीज़[22] का टुकड़ा भी नहीं है। क्या तुम्हारे दिमाग में इतना भी नहीं आया कि तुम कुछ खाना ही माँग लेते उससे? अब तुम वापस समुद्र जाओ और जा कर उससे इनाम माँगो।"

सो उसने वही किया। बेचारा मछियारा चुपचाप वापस समुद्र की तरफ चल दिया।

वहाँ जा कर वह अपने मुँह पर दोनों हाथों का एक प्याला बना कर चिल्लाया — "मुझे मेरा इनाम दो ओ सुनहरी मछली, मेरी एक सादी सी इच्छा पूरी कर दो।"

सुनते ही वह सुनहरी मछली समुद्र के किनारे से बाहर निकली और मछियारे के पैरों पर गिर पड़ी। उसका शरीर चमक रहा था। वह बोली — "जब मैंने तुमसे वायदा किया था कि तुमको कोई इनाम मिलेगा तो मेरा वायदा सच्चा था। बोलो तुमको क्या इनाम चाहिये?"

[22] Cheese – a kind of processed Paneer. It is a very common food item in Western countries.

मछियारा बोला — "मेरी पत्नी ने कहा है कि मैं तुमसे अपनी रसोई की आलमारी के बारे में बताऊँ। हमारे घर में ज़रा सी भी रोटी या चीज़ नहीं है। और क्योंकि मैं तुमको पकड़ कर अपने घर नहीं ले गया तो अब हमारे पास खाने के लिये कुछ भी नहीं है।"

मछली ने अपनी पूँछ पानी में फटकारी और बोली — "जाओ मछियारे घर जाओ, मुझे अपना वायदा याद है।"

इससे पहले कि मछियारा आगे कुछ बोलता उस मछली ने अपनी पूँछ पानी में फिर से फटकारी और पानी में गायब हो गयी।

मछियारे को अपने घर तक आने का रास्ता बहुत लम्बा लगा। वह सोचता आ रहा था — "क्या मैं एक ही दिन में दो बार बेवकूफ बन गया? सुबह भी मैं खाली हाथ चला गया और अभी भी खाली हाथ ही जा रहा हूँ।"

पर उसके सारे शक घर पहुँच कर दूर हो गये जब उसने अपनी पत्नी के चेहरे पर हँसी देखी।

उसको देखते ही वह चिल्लायी — "प्रिये, देखो हमारी आलमारी खाने से भर गयी है। मैंने तो इतनी सारी रोटी और चीज़ कभी अपनी ज़िन्दगी में नहीं देखी। आओ खाना खायें।"

खाने के लिये आज बहुत सारी चीज़ें थीं। बूढ़े मछियारे ने अपनी पत्नी को इतना खुश कभी नहीं देखा था। उसको इतना खुश देख कर वह भी बहुत खुश हो गया।

पर इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं कि वे लोग रोज रोज वही रोटी और चीज़ खाते खाते थक गये। एक दिन उसकी पत्नी चिल्लायी — "प्रिये, तुमको कुछ और अच्छा इनाम माँगना चाहिये था।"

बूढ़ा मछियारा बोला — "तुम कहना क्या चाहती हो? हमारे पास तो अभी भी बहुत सारी रोटी और चीज़ कई दिनों के लिये रखी है। हमारे पास तो इतना सारा खाना तो पहले कभी भी नहीं था।"

पत्नी फिर भी बोली — "पर तुमको कुछ और ज़्यादा माँगना था। अपने घर की तरफ तो देखो ज़रा। कैसा सूअरखाना लगता है और तुमने केवल रोटी और चीज़ ही माँगी उससे।"

मछियारा बोला — "पर तुमने केवल रोटी और चीज़ ही तो माँगने के लिये कहा था।"

पत्नी बोली — "पर अब मैं तुमसे उस सुनहरी मछली से वह चीज़ माँगने के लिये कहना चाहती हूँ जो तुमको सबसे पहले माँगनी चाहिये थी। अब तुम वापस जाओ और उससे एक बहुत अच्छा सा घर माँगो।" सो उसने वही किया।

एक बार फिर वह समुद्र की तरफ चल दिया। एक बार फिर वह अपने मुँह पर दोनों हाथों से प्याला बना कर चिल्लाया — "ओ सुनहरी मछली, मेरी पत्नी की दूसरी इच्छा पूरी कर दो।"

एक बार फिर मछली पानी से बाहर आयी। उसका शरीर पहले की तरह से चमक रहा था। वह आ कर फिर से मछियारे के पैरों के पास पड़ गयी।

वह बोली — "मैंने तुमसे वायदा किया था और वह सच्चा था। बोलो मैं तुम्हारी कौन सी दूसरी इच्छा पूरी करूँ?"

"मेरी पत्नी ने कहा है कि मैं तुमसे कहूँ कि हमारा घर किसी सूअरखाने से कम नहीं है। उसका कहना है कि मैंने तुमसे केवल रोटी और चीज़ माँग कर गलती की। सबसे पहले मुझे तुमसे यह घर ही माँगना चाहिये था।"

एक बार फिर मछली ने अपनी पूँछ पानी में फटकारी और एक बार फिर वह बोली — "अब ओ मछियारे तुम घर जाओ। मैंने तुम्हारी यह इच्छा भी पूरी की।"

और इससे पहले वह मछियारा कुछ और कहता उस सुनहरी मछली ने फिर से अपनी पूँछ फटकारी और फिर से पानी में कूद कर गायब हो गयी।

इस बार मछियारे को अपने घर का रास्ता लम्बा नहीं लगा क्योंकि अब मछियारे को मछली की बात पर विश्वास था।

उसको पता था कि उसके लिये एक अच्छा सा मकान उसका इन्तजार कर रहा होगा पर उसको इतना अन्दाजा नहीं था कि उस को इतना बढ़िया मकान मिलेगा जितना बढ़िया मकान उस सुनहरी मछली ने उसे दिया था।

उसकी पत्नी तो उस बड़े मकान से बहुत ही खुश थी। वह अपने पति के स्वागत के लिये तुरन्त ही बाहर निकल कर आयी। अपनी पत्नी को इतना खुश देख कर वह खुद भी बहुत खुश हुआ।

पर पिछली बार की तरह से कुछ ही दिन में उसकी पत्नी उस बड़े मकान से ऊब गयी।

एक दिन वह कराहती हुई सी बोली — "मुझसे इतने बड़े घर की सफाई नहीं होती। हमारे पास खाने के लिये तो बहुत कुछ है पर बाकी का सारा समय तो मेरा इतने बड़े घर की सफाई करने में ही निकल जाता है।"

बूढ़ा मछियारा बोला — "पर यही तो तुम चाहती थीं।"

"और यह तुम्हारी गलती है कि तुमने मुझे सोचने का मौका ही नहीं दिया। मुझे अब पता चला है कि मुझे सचमुच में क्या चाहिये था। तुम उस सुनहरी मछली के पास फिर जाओ और अबकी बार उससे ठीक से इनाम मॉग कर लाओ।"

बूढ़ा मछियारा बोला — "मुझे डर लगता है कि अबकी बार तुम पता नहीं क्या मॉगोगी।"

पत्नी बोली — "अरे यह तो बड़ी आसान सी बात है। मछली के पास वापस जाओ और उससे कहना कि मैं अब रानी बनना चाहती हूँ। मुझे एक महल चाहिये जिसमें बहुत सारे नौकर नौकरानियॉ हों, बहुत सारे। जाओ और इस बार ठीक से ले कर आओ।"

और फिर उसने वही किया। तीसरी बार वह मछियारा समुद्र की तरफ चल दिया। तीसरी बार वह फिर अपने मुँह पर दोनों हाथों से प्याला बना कर चिल्लाया — "ओ सुनहरी मछली, मुझे इनाम दो मेरी पत्नी की इच्छा पूरी कर दो।"

एक बार वह मछली फिर पानी से बाहर आयी। उसका शरीर पहले की तरह से चमक रहा था। वह आ कर फिर से मछियारे के पैरों के पास पड़ गयी।

वह बोली — "मैंने तुमसे वायदा किया था और वह वायदा सच्चा था। बोलो मैं तुम्हारी दूसरी कौन सी इच्छा पूरी करूँ?"

मछियारा बोला — "मेरी पत्नी कहती है कि मैंने उसको इनाम के बारे में ठीक से सोचने का समय नहीं दिया। अब उसको एक महल चाहिये जिसमें बहुत सारे नौकर नौकरानियाँ हों और वह देश की रानी हो।"

तीसरी बार मछली ने अपनी पूँछ पानी में फटकारी और बोली — "ओ मछियारे, अब तुम घर जाओ। मैं अपना वायदा निभाती हूँ।"

इससे पहले कि मछियारा कुछ कहता वह सुनहरी मछली फिर से पानी में कूद कर गायब हो गयी।

इस बार मछियारा अपना सिर हिलाता हुआ और यह सोचता हुआ अपने घर आ रहा था — "मछली ने अभी तक तो अपना वायदा निभाया है। जब भी मैंने उससे बात की है उसने मेरी हर

इच्छा पूरी की है। पर अबकी बार न जाने मुझे क्या देखने को मिलेगा।"

मछियारे का सोचना ठीक ही था। यकीनन एक महल वहाँ मौजूद था, बहुत सारे नौकर और नौकरानियाँ भी इधर उधर आ जा रहे थे।

बीच में एक बड़े से कमरे में एक सिंहासन पर शाही पोशाक पहने और सुनहरा ताज लगाये उसकी पत्नी रानी बनी बैठी थी और मछियारे की तरफ नफरत भरी निगाह से देख रही थी।

वह बोली — "ओ बूढ़े मछियारे, यह शाही महल है जो बहुत बढ़िया गहने, सोना और खजाने से भरा है। तुम तो ऐसा लगता है कि किसी सूअरखाने से आये हो। तुम मेरे महल के नहीं हो सकते। जाओ अपने साथ रहने के लिये कुछ सूअर ढूँढ लो।"

वह बूढ़ा मछियारा मुस्कुराया और सोचा — "कम से कम सूअर तुम्हारे जैसी कोई माँग नहीं करते। कोई उस सूअर से ज़्यादा खुश नहीं जो कीचड़ में रहता है।"

इसमें भी कोई आश्चर्य की बात नहीं कि वह बूढ़ी रानी बहुत जल्दी ही उस सब ऐशो आराम से भी उकता गयी।

एक दिन उसने अपने नौकरों को अपना पति ढूँढने के लिये भेजा। हालाँकि कोई भी नौकर अपने नये कपड़ों पर कीचड़ लगाने को तैयार नहीं था पर यह भी सच था कि कोई रानी को नाराज भी

नहीं करना चाहता था इसलिये वे सब रानी के पति को ढूँढने चल दिये।

मछियारा मिल गया तो उस मछियारे को उसके सूअरखाने से महल में लाया गया। उसको नहलाया धुलाया गया पर फिर भी नौकरों ने रानी की चीख सुनी — "यह सब तुम्हारी गलती है।"

बूढ़े मछियारे ने पूछा — "तुम्हारा मतलब क्या है, मेरी रानी?"

रानी बोली — "मेरा मतलब यह है कि मेरा राज्य काफी बड़ा नहीं है। तुम उस मछली के पास फिर से जाओ और उससे कहो कि मैं समुद्र की भी रानी होना चाहती हूँ। मैं चाहती हूँ कि सारी मछलियाँ मेरे आगे सिर झुकायें।"

बूढ़ा बोला — "मुझे यकीन नहीं है कि वह सुनहरी मछली तुम्हारी यह प्रार्थना मान लेगी।"

रानी बोली — "यह प्रार्थना नहीं है यह तो शाही फरमान है।"

"जैसी तुम्हारी इच्छा, मेरी रानी।"

और उसने वैसा ही किया। सो चौथी बार फिर वह समुद्र की तरफ चल दिया। एक बार फिर वह अपने मुँह पर दोनों हाथों से प्याला बना कर चिल्लाया — "ओ सुनहरी मछली, मुझे इनाम दो। मेरी पत्नी ने अपनी शाही इच्छा बदल दी है।"

पर इस बार कोई सुनहरी मछली पानी में से बाहर नहीं आयी। सो एक बार फिर से उसने अपने मुँह पर अपने दोनों हाथों का प्याला बनाया और चिल्लाया — "मुझे इनाम दो, ओ मेरी सुनहरी

मछली, मेरी पत्नी ने अपनी शाही इच्छा बदल दी है वह इस नीले समुद्र के ऊपर राज करना चाहती है... ।"

पर अबकी बार कोई चमकीला शरीर पानी के बाहर नहीं आया। उसने एक बार फिर अपने मुँह पर अपने दोनों हाथों का प्याला बनाया और चिल्लाया —

"मुझे इनाम दो, ओ मेरी सुनहरी मछली, मेरी पत्नी ने अपनी शाही इच्छा बदल दी है वह इस नीले समुद्र के ऊपर राज करना चाहती है... तुम पर भी।"

इस बार मछियारे को कोई आश्चर्य नहीं हुआ जब पानी में से कोई छपाक की आवाज नहीं आयी। उसको लगा उसने दूर कहीं सुनहरी पूँछ पानी में देखी जो तुरन्त ही गायब हो गयी।

बेचारा मछियारा वापस महल चला आया। वह सोच रहा था कि आज उसकी पत्नी बहुत गुस्सा होगी और भी न जाने क्या क्या होगा।

महल आने के बाद तो उसने वह देखा जिसको वह सोच भी नहीं सकता था। वहाँ न तो कोई महल था, न कोई नौकर चाकर इधर उधर घूम रहे थे। न वहाँ कोई सिंहासन था न कोई ताज, न कोई रोटी थी और न ही कोई चीज़।

वहाँ तो केवल उसका पुराना वाला घर था जो वाकई किसी सूअरखाने से ज़्यादा अच्छा नहीं था और उस घर के सामने खड़ी थी उसकी पत्नी।

वह उसको देखते ही चिल्लायी — "ओ आलसी मछियारे, तुम क्या सोचते हो कि तुम क्या कर रहे हो? क्या तुम घर बिना खाना लिये लौट रहे हो? मैंने रानी की तरह के कपड़े नहीं पहन रखे हैं तो क्या हुआ पर तुम्हारी रानी तो मैं अभी भी हूँ।

तुम अभी अभी वापस जाओ और शाम के खाने के लिये मछली ले कर आओ।" और अब मछियारा मुस्कुरा दिया।

9 आधा नौजवान[23]

एक बार एक लड़की को बच्चे की आशा हुई तो उसकी पार्सले[24] खाने की इच्छा हुई। उसके घर के बराबर में एक जादूगरनी रहती थी। इस जादूगरनी का पार्सले का एक बहुत बड़ा बागीचा था और उस बागीचे का दरवाजा हमेशा खुला रहता था।

क्योंकि पार्सले वहाँ बहुत पैदा होता था सो उस बागीचे में कोई भी अन्दर आ सकता था और अपने आप पार्सले तोड़ कर ले जा सकता था।

सो वह लड़की भी उस जादूगरनी के बागीचे में पार्सले तोड़ने के लिये चली गयी। उसकी पार्सले खाने की इच्छा इतनी ज़्यादा थी कि वह उस जादूगरनी के बागीचे का करीब करीब आधा पार्सले खा गयी।

जब वह जादूगरनी वापस आयी तो उसने देखा कि उसके बागीचे से तो आधा पार्सले गायब हो चुका था। उसने सोचा कि वह अगले दिन अपने पार्सले के खेत पर नजर रखेगी कि उसका इतना सारा पार्सले कौन ले गया।

---

[23] Cloven Youth – a folktale from Venice, Italy, Europe.
Adapted from the book: "Italian Folktales" by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.

[24] Parsley is a kind of herb, looks like green coriander leaves (cilanthro). It is most used in Italian dishes both as fresh and dried herbs. See its picture above.

वह लड़की वहाँ बचा हुआ पार्सले खाने के लिये अगले दिन भी गयी। उसने मुश्किल से उस बागीचे के पार्सले का आखिरी पौधा खाया होगा कि वह जादूगरनी वहाँ आ गयी और बोली — "आहा, तो वह तुम हो जो मेरे बागीचे का सारा पार्सले खा गयीं।"

वह लड़की बेचारी डर गयी और गिड़गिड़ाती हुई बोली — "मेहरबानी कर के मुझे जाने दो। मैं एक बच्चे की माँ बनने वाली हूँ। मेरी पार्सले खाने की इच्छा हुई तो मैं यहाँ आ गयी।"

जादूगरनी बोली — "ठीक है मैं तुमको जाने देती हूँ पर जो भी बच्चा तुमको होगा, चाहे वह लड़का हो या लड़की, जब वह सात साल का हो जायेगा तब वह आधा मेरा होगा और आधा तुम्हारा।"

यह सुन कर वह लड़की बहुत डर गयी सो वह जल्दी से उसको हाँ कर के वहाँ से चली आयी। समय आने पर उसके एक बेटा हुआ। बेटा अपने समय से बड़ा होने लगा।

जब उसका बेटा छह साल का हो गया तो एक दिन सड़क पर उसको वह जादूगरनी मिली। उस बच्चे को देख कर वह बोली — "अपनी माँ को याद दिलाना कि बस अब एक साल ही और बाकी है।"

बच्चा घर आया और अपनी माँ से बोला — "माँ आज मुझे अपनी पड़ोसन मिली थी। वह कह रही थी कि अपनी माँ को याद दिलाना कि बस अब एक साल ही और बाकी है।"

मॉ बोली — "अगर अबकी बार वह तुमको फिर मिले और फिर यह कहे कि "बस अब एक साल ही और बाकी है।" तो तुम कहना कि "तुम पागल हो"।"

जब उस बच्चे के सात साल के होने में तीन महीने बाकी रह गये तो एक दिन उस पड़ोसन ने फिर उस बच्चे से कहा — "अपनी मॉ से कहना कि बस अब केवल तीन महीने ही और बाकी रह गये हैं।"

बच्चे ने घर आ कर अपनी मॉ को अपनी पड़ोसन के शब्द जैसे के तैसे दोहरा दिये। उसकी मॉ ने फिर कहा कि "अगर अबकी बार वह तुमसे ऐसा वैसा कुछ कहे तो तुम उससे कहना कि "मैम तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है क्या"।"

बच्चे ने मॉ के शब्द उस पड़ोसन को बोल दिये तो पड़ोसन बोली — "देखते हैं किसका दिमाग खराब होता है।"

तीन महीने बाद बुढ़िया जादूगरनी उस बच्चे को सड़क पर से उठा कर ले गयी और अपने घर ले जा कर उसे एक मेज पर पीठ के बल लिटा दिया। फिर एक बड़ा सा चाकू उठाया और सिर से ले कर पैर तक उसको दो बराबर हिस्सों में बॉट दिया।

एक हिस्से से उसने कहा — "तुम घर जाओ।" और दूसरे हिस्से से कहा — "तुम मेरे पास रहो।" सो एक हिस्सा अपनी मॉ के पास अपने घर चला गया और दूसरा हिस्सा उसके अपने पास रह गया।

एक हिस्सा जो घर चला गया था अपनी माँ से जा कर बोला — "देखा माँ? उस बुढ़िया ने मेरे साथ क्या किया और तुम कहती थी कि उसका दिमाग खराब हो गया है, वह पागल हो गयी है।"

उसकी माँ ने गुस्से में आ कर अपने हाथ पैर फेंके पर अब वह कर ही क्या सकती थी उसका बेटा तो आधा हो ही चुका था। अब यह आधा लड़का और बड़ा होने लगा पर उसको यही पता नहीं था कि वह आगे चल कर अपनी ज़िन्दगी में क्या करेगा।

आखिर उसने मछियारा बनने का निश्चय किया। एक दिन जब वह ईल मछली[25] पकड़ रहा था तो उसने एक इतनी लम्बी ईल मछली पकड़ी जितना लम्बा वह खुद था।

जब उसने उसे बाहर खींचा तो वह ईल बोली — "तुम मुझे जाने दो और फिर तुम मुझे दोबारा पकड़ना।"

यह सुन कर उस लड़के ने उस मछली को फिर से पानी में फेंक दिया। उस मछली के कहे अनुसार उसने अपना मछली पकड़ने वाला जाल फिर से पानी में डाला और जब फिर से उसे खींचा तो अबकी बार उस जाल में बहुत सारी ईल मछलियाँ थीं।

वह अपनी ईल मछलियों से भरी नाव ले कर किनारे आ गया और उस दिन उसने उनको बेच कर बहुत सारा पैसा कमाया।

[25] Eel fish – a kind of fish like a snake. See its picture above

अगले दिन जब वह मछली पकड़ने गया तो उसके जाल में वही बड़ी ईल मछली फिर से आ गयी। अबकी बार उसने लड़के से कहा — "मुझे जाने दो और छोटी ईल की कसम खा कर जो कुछ भी तुम मॉगोगे तुम्हारी वह इच्छा पूरी होगी।" सो उसने उस बड़ी ईल को फिर पानी में छोड़ दिया।

एक दिन जब वह मछली पकड़ने जा रहा था तो वह राजा के महल के पास से गुजरा। महल की खिड़की पर राजा की बेटी अपनी दासियों के साथ बैठी हुई थी।

उसने रास्ते पर जाता एक ऐसा आदमी देखा जो सिर से पैर तक आधा था - आधा शरीर, आधा सिर, एक बॉह, एक टॉग। वह ऐसे अजीब आदमी को देख कर हॅस पड़ी।

उसकी हॅसी की आवाज सुन कर लड़के ने ऊपर देखा और बोला — "तुम मेरे ऊपर हॅस रही हो? छोटी ईल की कसम, राजा की बेटी के मुझसे एक बच्चा होगा।" यह कह कर वह आगे बढ़ गया।

कुछ समय बाद ही राजा की बेटी को बच्चे की आशा हुई तो राजकुमारी घबरायी।

उसके माता पिता को भी इस बात का पता चल गया तो उन्होंने अपनी बेटी से पूछा — "इसका क्या मतलब है?"

बेटी बोली — "पिता जी, मैं भी आप ही की तरह से इस बात से बिल्कुल अनजान हूॅ। मुझे कुछ नहीं मालूम।"

माता पिता बोले — "हमारी यह समझ में नहीं आया कि हमारी तरह तुम इस बात से अनजान कैसे हो? इसका पिता कौन है?"

राजा की बेटी रुऑसी हो कर बोली — "पिता जी, मुझे सचमुच ही कुछ पता नहीं है। मैं इसके बारे में वाकई कुछ भी नहीं जानती।"

उसके माता पिता उससे कई बार पूछते रहे और यह भी कहते रहे कि वह उनको सच सच बता दे। उसकी अगर कोई भी गलती होगी तो वे उसको माफ कर देंगे पर वह अपनी इसी बात पर अड़ी रही कि उसको इस बारे में कुछ पता नहीं है और वह बेकुसूर है।

जब उस लड़की ने कुछ बता कर नहीं दिया तो उन्होंने उसको बुरा भला कहना शुरू किया और उसके साथ बुरा बर्ताव करना शुरू कर दिया।

समय आने पर उसके एक बेटा हुआ। बजाय खुश होने के उस लड़की के माता पिता खूब रोये क्योंकि उनके घर में एक बिना बाप का बेटा पैदा हुआ था।

इस बात की पहेली सुलझाने के लिये उन्होंने एक जादूगर को बुलवाया। जादूगर बोला — "एक साल तक इन्तजार करो जब तक यह एक साल का होता है तब शायद कुछ पता चले।"

एक साल के बाद जादूगर ने कहा — "तुमको इस बच्चे के जन्म पर एक शानदार दावत देनी चाहिये और उसमें सारे कुलीन लोगों को बुलाना चाहिये।

जब वे सब यहाँ आ जायें तो एक सोने का और एक चाँदी का सेब इस बच्चे के हाथ में देना चाहिये। फिर यह बच्चा उन सेबों को ले कर सबके सामने जाये। यह बच्चा सोने का सेब अपने पिता को दे देगा और चाँदी का सेब अपने नाना को दे देगा।"

सो राजा ने अपने धेवते[26] के लिये दो सेब बनवाये एक सोने का और एक चाँदी का। और फिर उसके जन्म की खुशी में एक बहुत बड़ी शानदार दावत का इन्तजाम किया।

इस दावत में बहुत सारे जाने माने लोगों को बुलाया गया। एक बड़े बन्द कमरे में दीवार के सहारे कुर्सियाँ लगवायी गयीं। जब लोग वहाँ आना शुरू हुए तो उनको उन कुर्सियों पर बिठाया गया।

जब सब लोग वहाँ आ गये तो बच्चे को उसकी आया के साथ वहाँ लाया गया और उसके हाथ में दो सेब, एक सोने का और एक चाँदी का, दे दिये गये।

बच्चे की आया बच्चे और सेबों को ले कर उस कमरे में चारों तरफ घूमने लगी। चारों तरफ घूम कर वह बच्चा राजा के दिये हुए सेबों के साथ वापस आ गया और उसने चाँदी का सेब ला कर राजा को दे दिया।

[26] Grandson – daughter's son is called Dhevataa or Navaasaa

राजा बोला — "मैं इतना तो अच्छी तरह जानता हूँ कि मैं तुम्हारा नाना हूँ पर मैं जानना चाहता हूँ कि तुम्हारा पिता कौन है।" बच्चे को उस कमरे में कई बार चक्कर लगवाया पर वह बिना किसी को सेब दिये हुए ही राजा के पास वापस आ गया।

वह जादूगर फिर से बुलवाया गया तो उसने कहा कि अबकी बार आप अपने शहर के सब गरीब आदमियों को बुलवाइये। सो राजा ने अबकी बार अपने राज्य के सारे गरीब लोगों के लिये एक दावत का इन्तजाम किया और उसमें उन सबको बुलवाया।

जब उस आधे नौजवान ने यह सुना कि राजा के महल में सब गरीबों के लिये एक दावत हो रही है तो वह अपनी माँ से बोला — "माँ मेरी सबसे अच्छी वाली आधी कमीज, आधी पैन्ट, एक जूता, और मेरी आधी टोपी निकाल दो क्योंकि आज मैं राजा के महल में जा रहा हूँ। आज उन्होंने मुझे वहाँ खाने का न्यौता दिया है।"

माँ ने वैसा ही किया और वह अपने सबसे अच्छे कपड़े पहन कर राजा के महल की तरफ चल दिया। कमरा खचाखच भरा था – मछियारे, भिखारी सब तरह के गरीब वहाँ जमा थे। वे सब बैन्चों पर बैठे थे।

राजा ने उनके लिये भी बैन्चें दीवार के सहारे सहारे ही लगवा रखी थीं। जब सब लोग आ गये तो बच्चे की आया बच्चे को ले कर वहाँ आयी। राजा ने बच्चे के हाथ में सोने का सेब दे कर आया को उसको कमरे में चारों तरफ घुमाने के लिये कहा।

आया बच्चे को ले कर चल दी। घुमाते घुमाते वह उस बच्चे से कहती जाती थी — "बेटे, यह सेब अपने पिता को दे दो।"

जैसे ही वह बच्चा उस आधे आदमी के पास पहुँचा तो वह चिल्लाया — "पिता जी यह सेब लीजिये।"

सारे गरीब आदमी यह सुन कर ज़ोर से हॅस पड़े — "हा हा हा हा। ज़रा देखो तो राजा की बेटी पड़ी भी तो किसके प्रेम में पड़ी।"

केवल एक राजा ही था जो उस समय पूरे तरीके से शान्त था। वह बोला — "अगर ऐसा है तो यही मेरी बेटी का पति होगा।"

और उसने अपनी बेटी की शादी उस आधे नौजवान के साथ कर दी।

नये शादीशुदा पति पत्नी चर्च से निकले तो उन्होंने सोचा कि उनको वहॉ से ले जाने के लिये कोई बग्घी उनका इन्तजार कर रही होगी पर वहॉ कोई बग्घी तो नहीं, हॉ एक बड़ा सा खाली बैरल[27] रखा था।

राजा ने उस बैरल में उस आधे नौजवान, उसकी पत्नी और उनके बच्चे को रख कर उस बैरल को बन्द कर दिया और उसे समुद्र में फेंक दिया।

[27] A barrel is a hollow cylindrical container traditionally made of wooden staves bound by wooden or metal hoops. It has a standard size – in UK it is 36 Imperial gallons (160 L, 43 US Gallons). Modern barrels are made of US Oak wood and measure 59, 60 and 79 US Gallons. A US Gallon is 3.8 Liter and an Imperial Gallon is 4.5 Liter. See its picture above.

समुद्र में उस समय तूफान आया हुआ था सो वह बैरल लहरों के ऊपर खूब ऊपर नीचे उछल रहा था। कुछ ही पलों में वह ऑखों से ओझल हो गया। राजा के महल के हर आदमी ने सोचा कि वह बैरल तो अब हमेशा के लिये समुद्र में चला गया।

पर वह बैरल डूबा नहीं था। वह बाहर की तरफ तैरने लगा। आधे नौजवान ने महसूस किया कि राजा की बेटी बहुत डरी हुई थी सो उसने उससे कहा — "प्रिये, क्या तुम चाहती हो कि मैं यह बैरल समुद्र के किनारे ले चलूँ?"

राजा की बेटी डर से सहमी सी बोली — "हॉ, अगर तुम इस को वहॉ ले जा सकते हो तो।" पर उसके कहने से पहले ही यह हो गया।

"छोटी ईल की कसम, ओ बैरल, समुद्र के किनारे चलो।" और वह बैरल समुद्र के किनारे आ कर लग गया। उस आधे नौजवान ने उस बैरल का तला तोड़ा और वे तीनों उसमें से बाहर निकल आये।

यह खाना खाने का समय था सो वह आधा नौजवान बोला — "छोटी ईल की कसम, हमको खाना चाहिये।" बस तुरन्त ही वहॉ एक मेज लग गयी जिस पर बहुत सारा खाना लगा था।

जब वे पेट भर कर खाना खा चुके तो उस आधे नौजवान ने अपनी पत्नी से पूछा — "क्या तुम मुझसे खुश हो?"

राजा की बेटी बोली — "तुम मुझे तब और ज़्यादा अच्छे लगते जब तुम पूरे होते।"

इस पर उसने अपने आपसे कहा — "छोटी ईल की कसम, क्या मैं पूरा और एक सुन्दर नौजवान बन सकता हूँ?" तुरन्त ही वह आधा नौजवान एक सुन्दर और पूरा नौजवान बन गया और एक कुलीन आदमी की तरह दिखायी देने लगा।

उसने राजा की बेटी से फिर पूछा — "अब तो तुम खुश हो न?"

"मैं तब ज़्यादा खुश होती जब तुम एक बढ़िया महल में रह रहे होते। बजाय इसके कि हम समुद्र के इस उजाड़ किनारे पर खड़े हुए हैं।"

उस नौजवान ने फिर कहा — "छोटी ईल की कसम, क्या हम एक बढ़िया महल में रह सकते हैं जिसमें दो सेब के पेड़ लगे हों। एक सेब के पेड़ पर सोने के सेब लगे हों और दूसरे पेड़ पर चाँदी के सेब लगे हों। हमारे पास बहुत सारे दास दासियाँ हों, रसोइये हों और वह सब कुछ हो जो एक महल में होना चाहिये।"

तुरन्त ही वहाँ सब कुछ आ गया – महल, सेब के पेड़, रसोइये, दास, दासियाँ, आदि आदि।

कुछ दिन बाद उस आधे नौजवान ने जो अब आधा नहीं रह गया था बल्कि एक सुन्दर और पूरा नौजवान बन गया था सब

राजाओं और कुलीन लोगों को एक दावत का न्यौता भेजा। इसमें उसकी पत्नी के पिता भी शामिल थे।

जब सब लोग उसके घर आये तो उस नौजवान ने उन सबका अपने दरवाजे पर स्वागत किया और कहा — "मैं आप सबको चेतावनी देता हूँ कि कोई भी इन सोने और चाँदी के सेबों को न छुए। अगर आप लोग इनको छुऐंगे भी तो फिर भगवान ही आप की रक्षा करे।"

वे सब बैठ गये और खाने पीने लगे। आधे नौजवान ने चुपके से कहा — "छोटी ईल की कसम, एक सोने का और एक चाँदी का सेब मेरे ससुर जी की जेब में चला जाये।"

ऐसा ही हुआ। एक सोने का और एक चाँदी का सेब उस नौजवान के ससुर की जेब में चला गया।

जब सबने खाना खा लिया तो वह अपने सब मेहमानों को अपने बागीचे में घुमाने के लिये ले गया तो वहाँ पाया कि उसके दो सेब गायब हैं। उस नौजवान ने पूछा — "अरे मेरे दो सेब गायब हैं एक सोने का और एक चाँदी का। किसने लिये हैं मेरे सेब?"

सब बोले "मैंने नहीं लिये", "मैंने नहीं लिये"।

सबकी तलाशी ली गयी पर किसी के पास भी वे सेब नहीं निकले। आधा नौजवान बोला — "मैंने आप सबको पहले ही कहा था कि इन सेबों को छूना नहीं पर अब मैं सब राजाओं की तलाशी लेने के लिये मजबूर हूँ।"

सो वह भीड़ में खड़े हर राजा रानी की तलाशी लेता चल दिया। आखीर में वह अपनी पत्नी के पिता के पास आया और उनकी दोनों जेबों में उसने दो सेब पाये।

वह बोला — "किसी और की तो सेबों को छूने की हिम्मत भी नहीं हुई और आपने दो सेब चुरा लिये? आपको मुझे इन दोनों सेबों का हिसाब देना पड़ेगा।"

राजा ने उसको समझाने की कोशिश करते हुए कहा — "पर मैं इन सेबों के बारे में कुछ भी नहीं जानता। मैंने इनको नहीं चुराया। मैंने तो इनको छुआ भी नहीं। मैं कसम खाता हूँ।"

आधा नौजवान बोला — "पर सारे सबूत तो आपके खिलाफ हैं फिर भी आप कह रहे हैं कि आप बेकुसूर हैं?"

"हाँ मैं यह इसलिये कह रहा हूँ क्योंकि मैं बेकुसूर हूँ।"

"ठीक। जैसे आप बेकुसूर हैं वैसे ही आपकी बेटी भी तो बेकुसूर हो सकती थी। पर जो बर्ताव आपने उसके साथ किया अगर वैसा ही बर्ताव मैं आपके साथ करूँ तो शायद इसमें कोई अन्याय नहीं होगा।"

उसी समय उसकी पत्नी भी आ गयी और बोली — "अब ऐसा कुछ मत कहना या करना कि मेरे पिता को मेरी वजह से कुछ सहना पड़े। वह अगर मेरे लिये बेरहम थे भी फिर भी वह मेरे पिता हैं और मैं तुमसे उनके ऊपर दया करने की भीख माँगती हूँ।"

आधे नौजवान ने दया कर के राजा को माफ कर दिया।

राजा अपनी बेटी को ज़िन्दा देख कर बहुत खुश था जिसको उसने मरा समझ लिया था और साथ में यह जान कर भी बहुत खुश था कि वह बेकुसूर थी।

राजा उन तीनों को फिर अपने घर ले गया। वहाँ वे सब खुशी खुशी रहने लगे। जब तक वे जिये तब तक सब आपस में हिल मिल कर रहे।

10 सात सिर वाला राक्षस[28]

मछलियों की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये इटली देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार एक मछियारा था जिसके कोई बच्चा नहीं था हालॉकि उसकी शादी को कई साल हो गये थे।

एक दिन उस मछियारे ने अपना जाल उठाया और मछली पकड़ने के लिये पास वाली एक झील पर गया। वहॉ उस दिन उसने एक बहुत बड़ी और सुन्दर मछली पकड़ी।

जैसे ही उसने वह मछली पानी से बाहर निकाली उस मछली ने मछियारे से प्रार्थना की वह उसको छोड़ दे। उसने कहा कि अगर वह उसको छोड़ देगा तो वह उसको एक ऐसे तालाब का पता बतायेगी जहॉ वह बहुत जल्दी से और बहुत सारी मछली पकड़ पायेगा।

मछली को बोलते हुए सुन कर मछियारा डर गया और तुरन्त ही उसने उसको वहीं पानी में छोड़ दिया। मछली ने फिर उसको उस तालाब का पता बताया जहॉ वह बहुत जल्दी से और बहुत सारी

[28] The Dragon With Seven Heads – a folktale from Italy from its Bologna area.
Adapted from the book: “Italian Folktales”, by Italo Calvino. Translated ny George Martin in 1980.
Hindi translation of its most stories is available from hindifolktails@gmail.com in e-book form free of charge.

मछली पकड़ सकता था और वह खुद तुरन्त ही पानी में गायब हो गयी।

मछियारा मछली के बताये गये तालाब पर गया और दो तीन बार में ही उसने इतनी सारी मछलियाँ पकड़ लीं कि वह एक गधे के बोझ के बराबर हो गयीं।

जब वह घर लौटा तो उसकी पत्नी ने पूछा कि उसने इतनी सारी मछली इतनी जल्दी से कैसे पकड़ लीं। मछियारे ने जो कुछ झील भी पर हुआ था सब कुछ उसको विस्तार में बता दिया।

इस पर उसकी पत्नी बहुत नाराज हो कर बोली — "तुम तो बहुत ही सीधे हो। तुमने इतनी सुन्दर मछली को कैसे जाने दिया? कल याद कर के उस मछली को पकड़ लेना और घर ले आना। कल मैं उसका सूप बनाऊँगी। उसका सूप तो बड़ा मजेदार बनना चाहिये।"

अपनी पत्नी को खुश करने के लिये अगले दिन वह उसी झील पर फिर वापस गया और मछली पकड़ने के लिये अपना जाल फेंका। उस दिन भी वह बोलती मछली उसके जाल में आ गयी और उस दिन भी उसने उसकी प्रार्थना पर उसको छोड़ दिया।

पिछले दिन की तरह से उस मछियारे ने उस दिन भी उसी तालाब में से फिर से बहुत सारी मछलियाँ पकड़ीं और फिर जब वह घर लौट कर आया तो उसने अपनी पत्नी को बताया कि उस दिन क्या हुआ था तो वह फिर से बहुत बहुत नाराज हुई।

उसने अपनी कमर पर हाथ रखे और अपने पति को घर से बाहर निकाल कर कहा — "ओ बेवकूफ बैल, खरदिमाग[29], क्या तुमको पता नहीं चल रहा कि खुशकिस्मती तुमसे दूर भाग रही है?

तुम ऐसी मछली को छोड़ कैसे सकते हो? या तो तुम मुझे वह बड़ी मछली कल ला कर दे दो वरना पछताओगे कि तुम उसको ले कर क्यों नहीं आये। आया समझ में?"

सुबह को वह मछियारा फिर उसी झील पर गया। उसने फिर अपना जाल फेंका और उस बड़ी मछली को फिर से पकड़ लिया। आज उसने उस मछली की प्रार्थना पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया।

बस वह उसको ले कर सीधा घर गया। उसकी पत्नी ने उससे वह मछली ले ली। वह मछली अभी भी ज़िन्दा थी सो उसने उसको ताजा पानी से भरे एक टब में डाल दिया।

दोनों पति पत्नी उसके पास खड़े खड़े उसको देखते रहे और बात करते रहे कि उसको किस तरह से बनाया जाये ताकि वह सब से ज़्यादा स्वादिष्ट बने।

इसी समय उस मछली ने अपना सिर पानी में से बाहर निकाला और बोली — "क्योंकि मैं अब मरने से नहीं बच सकती इसलिये मैं तुम लोगों से कुछ कहना चाहती हूँ।"

[29] Translated for the word "Blockheaded"

मछियारे और उसकी पत्नी ने कहा कि "बोलो" तो मछली बोली — "जब मैं मर जाऊँ, पक जाऊँ और काट दी जाऊँ तो मेरा मॉस इस औरत को खाने के लिये दे देना।

मेरा रस घोड़ी को पिला देना। मेरा सिर कुत्ते को खिला देना। मेरी तीन सबसे बड़ी हड्डियॉ बागीचे में गाड़ देना और मेरा गौल ब्लैडर[30] रसोई में एक लट्ठे से टॉग देना। तुम्हारे बच्चे हो जायेंगे। अगर तुम्हारे बच्चों में से किसी भी बच्चे को कोई भी दुख होगा तो मेरे गौल ब्लैडर से खून टपकने लगेगा।"

इसके बाद मछियारे की पत्नी ने उसे काट कर पका लिया। दोनों ने जैसा कि मछली ने उनसे कहा था वैसा ही किया। उसका मॉस उस औरत ने खा लिया। उसका रस घोड़ी को पिला दिया। उसका सिर कुतिया को खिला दिया। उसकी तीन सबसे बड़ी हड्डियॉ बागीचे में गाड़ दीं और उसका गौल ब्लैडर रसोई में एक लट्ठे से टॉग दिया।

कुछ समय बीत गया तो एक ही रात में उस औरत को, उस घोड़ी को और उस कुतिया को सबको तीन तीन नर बच्चे हुए। मछियारा बोला — "ओह, नौ बच्चे एक ही रात में।"

वे तीनों बच्चे आपस में इतने एक से लगते थे कि अगर उनके गले में कोई पट्टा न बॉधा जाये तो उनको अलग अलग करना मुमकिन नहीं था।

[30] Gall Bladder – a part of the body

मछली की जो तीन हड्डियाँ बागीचे में बोयी गयीं थीं उनसे तीन सुन्दर तलवारें पैदा हुईं। मछियारे के तीनों लड़के जब बड़े हो गये तो उसने उनको हर एक को एक एक घोड़ा, एक एक कुत्ता और एक एक तलवार और अपनी तरफ से एक एक बन्दूक भेंट में दे दी।

कुछ दिनों बाद उसका सबसे बड़ा बेटा गरीबी में रहता रहता थक गया तो उसने बाहर जा कर अपनी किस्मत आजमाने का विचार किया। वह अपने घोड़े पर चढ़ा, अपना कुत्ता, तलवार और बन्दूक उठायी और सबको विदा कहा।

अपने भाइयों से उसने कहा — "अगर उस लट्ठे से लटके गौल ब्लैडर से खून टपके तो तुम लोग मुझे ढूँढने निकल पड़ना। क्योंकि उस समय मैं या तो मर गया होऊँगा या फिर किसी भारी मुसीबत में फँस गया होऊँगा।" और वह वहाँ से चला गया।

बहुत दिनों तक वह अनजानी जगहों से गुजरता रहा। आखिर में वह एक बड़े शहर के दरवाजे पर आया। उसने देखा कि सारा शहर दुख में डूबा हुआ है।

वह उस शहर में घुसा तो उसने देखा कि उस शहर के सब रहने वाले शोक मना रहे हैं और काले कपड़े पहने घूम रहे हैं। उसने खाना खाने के लिये उस शहर में एक सराय ढूँढी और उस सराय के मालिक से इस दुख और शोक की वजह पूछी।

सराय के मालिक ने उसको बताया कि एक सात सिर वाला राक्षस है जो यहाँ रोज पुल पर तीसरे पहर में आता है। उस समय अगर उसको कोई कुँआरी लड़की खाने के लिये न दी जाये तो वह शहर के अन्दर घुस आता है और जो कोई भी उसके रास्ते में आता है उसको मार डालता है।

रोज ही बहुत सारे लोग मारे जाते हैं। आज राजा की बेटी का बारी है। आज उस राक्षस के खाने के लिये उसको उस पुल पर दोपहर को होना चाहिये।

राजा ने मुनादी भी पिटवा रखी है कि जो कोई राजा की बेटी को इस सात सिर वाले राक्षस से बचायेगा वह उसी से अपनी बेटी की शादी कर देगा।

वह लड़का बोला — "राजा की बेटी को और सारे शहर को बचाने का कोई न कोई रास्ता तो होना ही चाहिये। मेरे पास एक मजबूत तलवार है, एक कुत्ता है, एक घोड़ा है, और एक बन्दूक है। मैं राजा से मिलना चाहूँगा।"

शहर वाले उसको तुरन्त ही राजा के पास ले गये। उसने राजा से उस राक्षस को मारने की इजाज़त माँगी।

राजा बोला — "ओ साहसी लड़के, ध्यान रखो कि तुमसे पहले और भी कई लोग उस राक्षस को मारने की कोशिश कर चुके हैं और इस कोशिश में मारे जा चुके हैं। बेचारे लोग। मुझे उन पर तरस आता है।

पर अगर तुम अपनी ज़िन्दगी को खतरे में डाल कर उस राक्षस को मारना चाहते हो तो तुम ऐसा कर सकते हो। और अगर तुमने उस राक्षस को मार दिया तो मैं अपनी बेटी की शादी तुमसे कर दूँगा और मरने के बाद अपना राज्य भी तुमको दे जाऊँगा।"

वह लड़का बोला — "राजा साहब, मैं उस राक्षस को मारना चाहता हूँ आप अपनी बेटी को निडर हो कर पुल पर भेजिये।"

यह कह कर उस निडर नौजवान ने अपना कुत्ता लिया और घोड़ा लिया और उस पुल पर जा कर बैठ गया जहाँ वह राक्षस आने वाला था। ठीक बारह बजे राजा की बेटी सिर से पाँव तक काली सिल्क की पोशाक पहने अपनी दासियों के साथ वहाँ आ गयी।

जब वे सब पुल पर आधी दूर चल कर आ गयीं तो उसकी दासियाँ उसको वहाँ उसी के भरोसे छोड़ कर आँखों में आँसू लिये वहाँ से लौट गयीं। उसने इधर उधर देखा तो पुल पर एक आदमी को एक कुत्ते के साथ बैठा पाया।

वह बोली — "ओ कुलीन नौजवान, तुम यहाँ क्या कर रहे हो? क्या तुमको मालूम नहीं कि एक राक्षस यहाँ बस किसी भी समय मुझे खाने के लिये आने वाला है। और अगर उसने तुमको यहाँ देख लिया तो वह तुमको भी खा जायेगा।"

उस लड़के ने जवाब दिया — "मुझे उसके बारे में अच्छी तरह मालूम है राजकुमारी जी और मैं यहाँ तुमको उसी से बचाने और फिर तुमसे शादी करने के लिये ही आया हूँ।"

राजकुमारी बोली — "ओ गरीब नौजवान, तुम भाग जाओ यहाँ से, नहीं तो उस राक्षस को आज मेरी बजाय दो दो लोग खाने को मिल जायेंगे। वह राक्षस बहुत ताकतवर है। तुम उसको मारने की सोच भी कैसे सकते हो।"

उधर वह नौजवान राजकुमारी को देखते ही उससे प्यार करने लगा था। वह बोला — "तुम्हारे प्यार के लिये तो मैं अपनी ज़िन्दगी को भी खतरे में डाल सकता हूँ। और नहीं तो क्या होगा मेरा?"

अभी वह यह सब कह कर ही चुका था कि महल की घड़ी ने बारह बजाये। जमीन काँपने लगी और एक सात सिर वाला राक्षस धुँए और आग की लपटों में से निकल कर आता दिखायी दिया।

वहाँ से निकल कर वह सीधा राजकुमारी की तरफ बढ़ा। उसके सातों मुँह खुले हुए थे और वह खुशी से सीटी बजा रहा था क्योंकि उसने देख लिया था कि आज उसको एक की बजाय दो आदमी खाने को मिल रहे थे।

वह नौजवान बिजली की सी तेज़ी से अपने घोड़े पर चढ़ गया और उस राक्षस की तरफ बढ़ा। उसने अपने कुत्ते को भी राक्षस के ऊपर हमला करने को कहा।

अपनी तलवार लहराते हुए उसने उस राक्षस के एक के बाद एक सात में से छह सिर काट डाले। इसके बाद राक्षस ने सुस्ताने के

लिये कुछ समय माँगा। वह लड़का भी बहुत हाँफ रहा था सो बोला — "ठीक है हम कुछ देर के लिये सुस्ता लेते हैं।"

पर राक्षस ने क्या किया कि उसने अपना सातवाँ सिर जमीन पर रगड़ा और वह फिर से अपने सातों सिरों के साथ उठ कर खड़ा हो गया।

यह देख कर उस नौजवान ने सोच लिया कि उसको उसके सातों सिर एक साथ ही काटने होंगे तभी वह मरेगा। सो वह राक्षस की तरफ दौड़ा और अपनी तलवार तब तक चलाता रहा जब तक कि उसके सातों सिर कट कर जमीन पर नहीं गिर गये।

उसके बाद उसने अपनी तलवार से उसके सातों सिरों की सातों जीभें काट लीं। फिर उसने राजकुमारी से पूछा — "तुम्हारे पास कोई रूमाल है क्या?"

राजकुमारी ने उसको एक रूमाल दे दिया। उस रूमाल में उसने वे सातों जीभें रख लीं और अपने घोड़े पर चढ़ कर अपनी सराय आ गया जहाँ उसने खाना खाया था।

वहाँ आ कर वह नहाया धोया और अपने कपड़े बदल कर राजा के पास जाने के लिये तैयार हुआ।

जैसा कि उसकी किस्मत में लिखा था – उस पुल के पास एक बहुत ही चालाक और नीच कोयला बेचने वाला[31] रहता था। वह दूर से ही यह लड़ाई देख रहा था।

[31] Translated for the word "Coalman"

उसने सोचा आज मैं इस नौजवान को बेवकूफ बनाता हूँ। इसने जो ये कटे हुए सिर यहाँ नीचे छोड़ दिये हैं मैं इनका इस्तेमाल कर के राजकुमारी से शादी कर लेता हूँ।

वह वहाँ गया, उसने सातों सिर उठाये, एक थैले में रखे और राजा के महल की तरफ चल दिया। साथ में उसने राक्षस के खून से सना हुआ बड़ा वाला चाकू भी अपने हाथ में ले लिया।

वहाँ जा कर वह बोला — "राजा साहब देखिये, आपके सामने यह राक्षस को मारने वाला खड़ा है। और ये हैं उसके सातों सिर जो मैंने इस चाकू से एक एक कर के काटे हैं। अब आप अपना शाही वायदा निभायें और अपनी बेटी की शादी मुझ से कर दें।"

राजा तो उस बदसूरत आदमी को देख कर सन्न रह गया। उसको उस आदमी की कहानी की सचाई पर शक हो रहा था।

उसको पूरा विश्वास था कि वह साहसी नौजवान मारा गया और आखिरी पल में जब उसने राक्षस को मार दिया होगा तो यह कोयले वाला आदमी वहाँ पहुँच गया होगा और उसके सिर ले कर यहाँ चला आया है।

पर शाही वायदा तो टाला नहीं जा सकता था सो राजा बोला — "अगर ऐसे ही हुआ है जैसा कि तुम बता रहे हो तो मेरी बेटी तुम्हारी है तुम उसे ले जा सकते हो।"

इस समय राजकुमारी ने जो उस समय दरबार में ही थी और यह सब सुन रही थी चिल्लाना शुरू कर दिया — "यह झूठ बोल रहा है

पिता जी। यह वह नहीं है जिसने उस राक्षस को मारा। वह तो अभी आने वाला होगा।"

इस बात पर कुछ गर्मागर्म बहस होने लगी पर वह कोयला बेचने वाला आदमी अपनी कहानी पर डटा रहा और उसे साबित करने के लिये उसने वे सातों सिर वहाँ रखे हुए थे।

राजा के पास उसकी बात न मानने की कोई वजह नहीं थी क्योंकि राक्षस के सातों सिर वहाँ मौजूद थे।

उसके पास और कोई चारा भी नहीं था सो उसने अपनी बेटी को शान्त रहने के लिये और जा कर शादी के लिये तैयार होने के लिये कहा। उसी समय राजा ने अपनी बेटी की शादी की घोषणा भी कर दी।

तीन दिन में शादी होने वाली थी और तीनों दिन एक शानदार दावत होने वाली थी। उन तीनों दिनों के आखीर में शादी हो जाने वाली थी।

इस बीच वह नौजवान जिसने सचमुच में राक्षस को मारा था राजा के महल में आया। पर राजा के चौकीदारों ने उसको किसी भी कीमत पर अन्दर नहीं जाने दिया।

उसी समय उसने एक शाही मुनादी पीटने वाले को सुना। वह कह रहा था कि राजकुमारी की शादी एक कोयले वाले आदमी के साथ होने वाली है।

उस नौजवान ने राजा के चौकीदारों से बहुत कहा कि वे उसको अन्दर जाने दें पर उन्होंने उसको अन्दर नहीं जाने दिया। कुछ ही देर में वह कोयला बेचने वाला आदमी बाहर आया। उसने उस नौजवान को वहाँ देखा तो उन चौकीदारों को उस नौजवान को बाहर निकालने का हुक्म दे दिया।

चौकीदारों ने उस नौजवान को महल से बाहर निकाल दिया। अब उस नौजवान के पास और कोई चारा नही था कि वह वहाँ से वापस सराय चला जाये।

गुस्से में उसने उस शादी को रोकने का, उस कोयला बेचने वाले की पोल खोलने का और अपने को उस राक्षस को मारने वाला साबित करने का कोई तरीका ढूँढने का निश्चय किया।

दरबार में मेज सजी हुई थी और सारे कुलीन लोग वहाँ मौजूद थे। राजकुमारी के पास वह कोयला बेचने वाला मखमल की पोशाक पहने बैठा हुआ था।

क्योंकि वह कोयला बेचने वाला आदमी बहुत ही ठिगना था इसलिये उसको दूसरे लोगों के बराबर में लाने के लिये उसके नीचे सात गद्दियाँ रखी हुई थीं।

सराय में बैठ कर काफी दिमाग लड़ाने के बाद उस नौजवान ने अपने कुत्ते को उठाया जो उसके पैरों के पास सो रहा था।

वह उससे बोला — "सुन ओ मेरे वफादार कुत्ते, दौड़ कर राजकुमारी के पास महल में जा और जा कर उस अकेली को ही प्यार करना, और किसी को नहीं।

और जब वे सब खाना खाने बैठें तो मेज पर रखा सारा खाना बिगाड़ देना और भाग आना। और हॉ ध्यान रखना पकड़े नहीं जाना।"

जो उस कुत्ते को मालिक ने उससे कहा वह उसने सब समझ लिया और वहॉ से दौड़ लिया। महल में आ कर उसने राजकुमारी को ढूँढा और उसकी गोद में अपने पंजे रख दिये। उसने उँह उँह की और उसके हाथों और चेहरे को चाटा।

राजकुमारी ने उस कुत्ते को पहचान लिया और वह उसको देख कर बहुत खुश हुई। उसको सहलाते हुए उसने उसके कान में फुसफुसा कर उससे पूछा कि उसको बचाने वाला कहॉ है।

वह कोयला बेचने वाला आदमी राजकुमारी के कुत्ते को सहलाने पर शक कर रहा था कि वह उसको क्यों सहला रही थी सो उसने दावत वाले कमरे से उस कुत्ते को बाहर निकालने का हुक्म दे दिया।

उस समय वहॉ पर सूप परसा जा रहा था। कुत्ते ने मेज के मेजपोश का एक कोना पकड़ा और खींच दिया। इससे मेज पर रखी सारी चीज़ें नीचे आ गिरीं। सारा सूप बिखर गया। सारा फर्श खराब हो गया और प्लेटें और गिलास आदि सब टूट गये।

यह सब कर के वह सीढ़ियों से इतनी तेज़ी से नीचे भाग गया कि कोई उसको देख भी नहीं सका कि वह गया किधर, पकड़ना तो दूर की बात थी। सारे मेहमान भौचक्के से देखते रह गये। दावत रुक गयी जिससे सब लोगों में एक खलबली मच गयी।

जब दूसरे दिन दावत का इन्तजाम हुआ तो नौजवान ने अपने कुत्ते से कहा — "जाओ और फिर से वही सब कर के आओ।"

राजकुमारी ने जब कुत्ते को वापस आया देखा तो वह बहुत खुश हुई पर वह कोयले वाला फिर से शक करने लगा और डर गया। उसने फिर ज़ोर दिया कि उस कुत्ते को कोड़े मार कर कमरे से बाहर निकाल दिया जाये।

इस बार राजकुमारी कुत्ते को लिये हुए उठ खड़ी हुई और कोयला बेचने वाला आदमी अपने नीचपने के बावजूद उससे कुछ नहीं कह सका।

इस बार भी जब सूप परसा जा रहा था कुत्ते ने उस मेज का मेजपोश पकड़ कर खींच दिया और सब कुछ नीचे गिरा दिया। चौकीदार और नौकर उसके पीछे पीछे भागे भी पर इससे पहले कि वे उसके पास भी आते वह वहाँ से गायब हो गया।

तीसरी दावत के ठीक पहले नौजवान ने कहा — "फिर जाओ और वही सब एक बार फिर कर के आओ पर इस बार राजा के चौकीदारों को यहाँ तक अपने पीछे पीछे आने देना।"

कुत्ते ने फिर वही किया और इस बार राजा के चौकीदारों को अपना पीछा कराते हुए मालिक के कमरे तक ले आया। वहाँ आ कर चौकीदारों ने उस नौजवान को पकड़ लिया और उसको राजा के पास ले गये।

राजा ने तुरन्त ही उस नौजवान को पहचान लिया और उससे पूछा — "क्या तुम वही आदमी नहीं हो जो उस दिन मेरी बेटी को उस राक्षस से बचाना चाहते थे?"

नौजवान बोला — "जी सरकार। निश्चित रूप से मैं वही आदमी हूँ। और मैंने राजकुमारी जी को बचाया भी है तभी तो वह आपके सामने हैं।"

यह सुन कर कोयला बेचने वाला आदमी चिल्लाया — "ऐसा नहीं है। उस राक्षस को मैंने खुद ने अपने दोनों हाथों से मारा है और इसको साबित करने के लिये मैं उसके सात सिर भी ले कर आया हूँ।"

कह कर उसने वे सातों सिर मँगवाये और मँगवा कर राजा के पैरों पर रख दिये।

तुरन्त ही नौजवान राजा से बोला — "हो सकता है कि यह आदमी उस राक्षस के सात सिर ले कर आया हो पर क्योंकि वे बहुत भारी थे इसलिये मैं तो उन सिरों को वहीं छोड़ आया था।

हाँ मैं उन सात सिरों की सात जीभ काट कर ले आया हूँ। यह देखने के लिये कि ये जीभें उन्हीं सिरों की हैं या नहीं, आप देखें कि इस आदमी के लाये सातों सिरों में उनकी जीभें हैं या नहीं।"

राजा ने उस कोयला बेचने वाले के लाये सातों सिर देखे तो उनमें से तो किसी भी सिर में एक भी जीभ नहीं थी। यह देख कर कोयला बेचने वाला तो सकते में आ गया। उसको तो कुछ समझ में ही नहीं आया क्योंकि उसको तो यह सब कुछ पता ही नहीं था।

तब नौजवान ने अपनी जेब से एक रूमाल निकाला जिसमें वह सातों जीभ रख कर लाया था और वह रूमाल राजा के पैरों पर रख दिया। फिर उसने राजा को अपनी लड़ाई का पूरा हाल बताया।

फिर भी उस कोयले वाले आदमी ने हार नहीं मानी। उसने कहा — "अगर यह जीभें इन्हीं मुँहों की हैं तो वह नौजवान उनको इन मुँहों के अन्दर रख कर दिखाये।"

सो उस नौजवान ने एक एक कर के उन मुँहों में जीभ रखनी शुरू की। जैसे जैसे वह एक एक जीभ उन मुँहों में रखता गया उस कोयला बेचने वाले आदमी ने अपने नीचे से एक एक गद्दी निकाल कर बाहर फेंकनी शुरू कर दी।

जब उस नौजवान ने सातवीं जीभ सातवें मुँह में रखी तो वह कोयले वाला आदमी तो इतना नीचा हो गया कि वह किसी को दिखायी भी नहीं दे रहा था क्योंकि वह मेज के नीचे तक पहुँच गया था। बस वह वहाँ से भाग लिया।

पर राजा के हुक्म से उसको पकड़ लिया गया और उसको शहर के चौराहे पर फाँसी चढ़ा दिया गया।

अब राजा, दुलहिन, दुलहा और मेहमान सब लोग खुशी खुशी खाना खाने और शादी की रस्में पूरी करने बैठे। शादी हो गयी।

X X X X X X X

रात हो गयी और सभी सोने चले गये। सुबह को जब वह नौजवान सो कर उठा तो उसने खिड़की खोली। बाहर झाँका तो उसको अपने सामने एक बहुत बड़ा जंगल दिखायी दिया जिसमें बहुत सारी चिड़ियें चहचहा रही थीं।

उस जंगल को देख कर उसे लगा कि इस जंगल में उसको शिकार के लिये जरूर जाना चाहिये।

उसकी पत्नी ने उसको बहुत मना किया कि वह शिकार के लिये वहाँ न जाये क्योंकि वह जंगल जादुई था। जो कोई भी उस जंगल में जाता था वह फिर वहाँ से कभी घर वापस नहीं आता था।

पर जितना ही वह नौजवान उस जंगल के बारे में सुनता जाता उसको वहाँ के खतरों से खेलने की इच्छा और बढ़ती जाती थी।

सो उसने अपना घोड़ा लिया, कुत्ता लिया और अपनी तलवार और बन्दूक ली और शिकार के लिये चल दिया।

वहाँ जा कर उसने बहुत सारी चिड़ियें मारीं कि तभी वहाँ गरज और बिजली की चमक के साथ एक बहुत बड़ा तूफान आ गया और ज़ोर से बारिश होने लगी।

बारिश इतनी ज़्यादा थी कि वह पूरा का पूरा भीग गया। साथ में अँधेरा होने की वजह से वह उस जंगल में रास्ता भी भूल गया। कि तभी उसको एक गुफा दिखायी दी। उस तूफान से बचने के लिये वह उस गुफा में घुस गया।

उस गुफा के अन्दर संगमरमर की बहुत सारी मूर्तियाँ भिन्न भिन्न मुद्राओं में खड़ी हुई थीं। पर वह नौजवान इतना ज़्यादा थका हुआ था कि इस सब पर ध्यान देने का उसके पास समय ही नहीं था।

अपने आपको गर्म करने के लिये उसने कुछ लकड़ियाँ इकट्ठी की और चकमक पत्थर[32] की सहायता से आग जला ली। उसकी गर्मी में उसने अपने कपड़े भी सुखाये और खाने के लिये कुछ चिड़ियाँ भी भूनी।

तभी एक बुढ़िया भी पानी से बचने के लिये उस गुफा में आ गयी। वह भी बहुत भीगी हुई थी। ठंड के मारे उसके दाँत किटकिटा रहे थे। उसने उस नौजवान से प्रार्थना की कि वह उसे अपनी आग के पास बैठने दे।

[32] Translated for the word “Flintstone”. When these stones are hit at each other they produce fire a fire can be started from them.

नौजवान ने कहा — "हॉ हॉ क्यों नहीं। आप यहॉ आराम से बैठें।"

वह बुढ़िया वहॉ बैठ गयी। उसने उस नौजवान को उसकी भुनी हुई चिड़ियों के लिये नमक और घोड़े के खाने के लिये भूसा दिया। एक हड्डी कुत्ते के लिये और तलवार को चिकना करने के लिये चिकनाई भी दी।

पर जैसे ही उस नौजवान ने उस बुढ़िया की नमक लगी चिड़िया खायी, उसके घोड़े ने भूसा खाया और उसके कुत्ते ने हड्डी खायी और तलवार को चिकनाई लगी सब मूर्तियों में बदल गये।

उधर राजकुमारी अपने पति के लौटने का इन्तजार करती रही पर फिर सोच लिया कि शायद वह मर गया होगा। राजा के हुक्म से सारा शहर दुख में डूब गया।

X X X X X X X

इस बीच उस मछियारे के घर में जबसे वह सबसे बड़ा लड़का घर छोड़ कर गया था उसका पिता और उसके दोनों छोटे भाई रोज उस गौल ब्लैडर की तरफ देखते रहते जो एक लट्ठे से छत से लटका हुआ था।

एक दिन उन्होंने देखा कि रसोई के फर्श पर खून पड़ा है जो गौल ब्लैडर से टपक रहा था।

इस पर दूसरे वाले लड़के ने कहा — "मेरा बड़ा भाई या तो मर गया है या फिर किसी मुश्किल में है। मैं उसको देखने जाता हूँ।"

और विदा कह कर वह भी अपने घोड़े पर चढ़ा, अपना कुत्ता साथ लिया, तलवार और बन्दूक उठायी और चल दिया।

रास्ते में वह लोगों से पूछता गया कि अगर किसी ने उसके भाई को देखा हो। वह उनसे पूछता — "क्या तुमने किसी ऐसे आदमी को देखा है जो देखने में मेरे जैसा लगता हो?"

जो भी उसका यह सवाल सुनता हँसता — "यह तो बड़ा अच्छा मजाक है। क्या तुम वही नहीं हो जो यहाँ कुछ दिन पहले घोड़े पर चढ़ कर आये थे?"

इससे उस बीच वाले लड़के को कम से कम यह पता चल गया कि उसका बड़ा भाई इधर आया था सो वह उसी दिशा में चलता रहा।

चलते चलते वह भी उसी राजा के शहर में आ निकला जिसमें उसके भाई ने सात सिरों वाला राक्षस मारा था। वहाँ उसने देखा कि शहर के सब लोग काली पोशाक पहने घूम रहे हैं।

लेकिन जब शहर वालों ने उसे देखा तो वे खुशी से चिल्लाये — "अरे यह तो यह आ गया। अरे यह तो यह आ गया। यह तो मरा नहीं है। हमारा राजकुमार ज़िन्दाबाद।"

वह उसे पकड़ कर राजा के पास उसके दरबार में ले गये। राजकुमारी भी वहीं बैठी थी। सबने उसको सबसे बड़ा लड़का ही समझा।

राजा ने उसको इतने दिन तक बिना कुछ बताये गायब रहने के लिये बहुत डॉटा। इस बीच वाले लड़के ने भी बिना परेशान हुए राजा से माफी मॉगी और राजकुमारी से भी सुलह कर ली।

उन सबके सवालों के जवाब उसने इतनी अच्छी तरह से दिये कि उसको अपने भाई के बारे में सब पता चल गया – उसकी शादी के बारे में, उसके गायब होने के बारे में आदि आदि।

उस रात जब वह बीच वाला लड़का सोने के लिये गया तो उसने म्यान में से अपनी तलवार निकाल कर उसका फल ऊपर कर के बिस्तर के बीच में रख दी।

उसने राजकुमारी से कहा कि वह तलवार के एक तरफ सोयेगी और वह खुद उसके दूसरी तरफ सोयेगा। राजकुमारी की समझ में कुछ नहीं आया पर वे दोनों सोने चले गये और जल्दी ही सो गये।

वह सुबह भी जल्दी ही उठ गया और उठते ही खिड़की खोली। सामने जंगल देख कर उसको भी लगा कि उसको शिकार के लिये जाना चाहिये। वह राजकुमारी से बोला — "मैं शिकार के लिये जाऊँगा।"

राजकुमारी बोली — "क्या एक बार वहाँ से बच कर आ जाना तुम्हारे लिये काफी नहीं है? क्या तुम मुझे और परेशान करना चाहते हो?"

पर उसने तो राजकुमारी की बात सुनी ही नहीं। वह भी अपने घोड़े पर चढ़ा, अपना कुत्ता साथ लिया और तलवार और बन्दूक उठायी और शिकार खेलने के लिये उस जंगल में चल दिया।

इसका भी वही हाल हुआ जो सबसे बड़े लड़के का हुआ था। वे सब भी उसी गुफा में मूर्ति बन कर खड़े हो गये।

इस बार राजकुमारी को लगा कि उसका पति सचमुच ही मर गया है और राजा के हुक्म से एक बार फिर सारा शहर शोक और दुख में डूब गया।

इस बीच उस मछियारे के घर में उसकी रसोई में उस गौल ब्लैडर से एक बार फिर खून टपक पड़ा।

क्योंकि उन तीनों लड़कों का पिता और सबसे छोटा लड़का उस गौल ब्लैडर को बराबर देख रहे थे सो उस खून के टपकते ही वह तीसरा लड़का भी तुरन्त ही अपने घोड़े पर सवार हुआ।

उसने भी अपने कुत्ते को साथ लिया, अपनी तलवार और बन्दूक उठायी और अपने दोनों भाइयों की खोज में चल दिया।

वह भी रास्ते में पूछता जाता था — "क्या तुम लोगों ने बिल्कुल मेरे जैसे दो आदमी घोड़े पर सवार इधर से जाते देखे हैं?"

लोग उससे पूछते — "तुम कैसे हॅसोड़िये हो? तुम हम लोगों से कब तक बार बार यही सवाल पूछते रहोगे?"

इस जवाब से उसको यह विश्वास हो गया कि वह सही रास्ते पर जा रहा है। चलते चलते वह भी उसी राजा के शहर में आ पहुँचा। उसने भी देखा कि सारा शहर दुख और शोक में डूबा है और सब काले कपड़े पहने घूम रहे हैं।

पर उसको देखते ही लोग खुश हो गये और उसको राजा के पास ले गये। राजा भी उसको देख कर इतना खुश हो गया जैसे उसका अपना दामाद मर कर ज़िन्दा हो गया हो।

अपने भाई की तरह वह भी जब सोने गया तो उसने भी बिस्तर के बीच में अपनी नंगी तलवार उसका फल ऊपर कर के खड़ी कर दी और वे दोनों तलवार के दो तरफ सो गये।

वह भी सुबह जल्दी ही उठ गया और सुबह उठते ही उसने भी खिड़की खोली और जब अपने सामने जंगल फैला हुआ देखा तो उसने भी कहा कि वह शिकार खेलने जाना चाहता है।

यह सुन कर राजकुमारी अबकी बार तो बहुत ही दुखी हो गयी और रो कर बोली — "क्या तुमने मरने की कसम खा रखी है? तुम मुझे प्यार करते हो या नहीं? तुम्हें पता है जब भी तुम शिकार पर जाते हो मुझे हमेशा तुम्हारे मरने का डर लगा रहता है।"

पर यह तीसरा लड़का तो घर से बाहर निकलने के लिये बेचैन हो रहा था क्योंकि उसको तो अपने भाइयों को ढूँढना था।

सो उसने उसकी कोई बात नहीं सुनी और शिकार खेलने चल दिया। जब वह जंगल में निकला तो उसके साथ भी वही हुआ जो उसके दो बड़े भाइयों साथ हुआ था। उसने भी तूफान से बचने के लिये उसी गुफा में शरण ली।

वहाँ उस गुफा में इतनी सारी मूर्तियाँ देख कर वह आश्चर्य में पड़ गया। उसने एक एक कर के जो उन मूर्तियों को देखना शुरू किया तो उसने उनमें से अपने दोनों भाइयों को पहचान लिया।

वहाँ का हाल देख कर उसको लगा कि यहाँ जरूर कुछ गड़बड़ है। मुझे यहाँ सँभल कर रहना होगा।

उसने भी वहाँ अपनी चिड़ियाँ भूनने के लिये आग जलायी और चिड़ियों को उसमें भूनने के लिये रख दिया। तभी वह बुढ़िया वहाँ आयी और झुकते हुए नम्रता से उससे आग के पास बैठने की इजाज़त माँगी।

पर इस लड़के ने उसको डाँटा — "दूर हट ओ बदसूरत जादूगरनी, मैं तुझे अपने पास भी नहीं बिठाना चाहता।" उस बुढ़िया को उस लड़के का ऐसा बर्ताव देख कर बहुत दुख हुआ।

वह कुछ भुनभुना कर बोली — "क्या तुम्हारे मन में इन्सान के लिये ज़रा सा भी प्यार नहीं है? तुम कैसे आदमी हो? कोई बात नहीं पर फिर भी मैं तुम्हारे खाने को स्वादिष्ट बनाने के लिये तुमको कुछ चीज़ें देना चाहती हूँ।

नमक तुम्हारी भुनी हुई चिड़ियों के लिये, भूसा तुम्हारे घोड़े के लिये और एक हड्डी तुम्हारे कुत्ते के लिये। और थोड़ी चिकनाई तुम्हारे हथियार को जंग लगने से बचाने के लिये।"

वह लड़का उस बुढ़िया पर चिल्लाया — "ओ बुढ़िया, तू यहाँ से जाती है या नहीं या फिर मैं तुझे मार कर भगाऊँ? तू मुझे नहीं पकड़ सकती, सुना तूने?" और यह कह कर वह उस पर कूद गया। उसको जमीन पर गिरा कर उसने उसको अपने घुटने से वहीं नीचे ही दबाये रखा।

फिर अपने बाँये हाथ से उसने उसका गला दबाया और दाँये हाथ से अपनी तलवार निकाल कर उसकी नोक उसकी गर्दन पर रख कर कहा — "ओ नीच जादूगरनी, मेरे भाई मुझे वापस कर नहीं तो मैं अभी तेरा गला काट दूँगा।"

बुढ़िया बोली कि उसने कभी किसी का कोई बुरा नहीं किया। पर जब उस लड़के की तलवार की नोक को अपने गले पर महसूस किया तो उसने अपना जादू मान लिया। और उससे वायदा किया कि अगर वह उसको छोड़ देगा तो वह उसकी बात मान लेगी।

लड़के ने उसको छोड़ दिया। बुढ़िया ने अपनी जेब से एक मरहम निकाला और उसको उन सबकी मूर्तियों पर लगा कर उन सबको ज़िन्दा कर दिया।

पर उस लड़के ने उसको तब तक नहीं जाने दिया जब तक कि उसने वहाँ रखी सब मूर्तियों को ज़िन्दा नहीं कर दिया। इस तरह

सारी मूर्तियाँ एक एक कर के ज़िन्दा हो गयीं और वह गुफा बहुत सारे लोगों से भर गयी।

जब भाइयों ने एक दूसरे को देखा तो वे खुशी से एक दूसरे के गले लग गये। जब कि दूसरे लोग बेचारे खुशी के मारे बोल ही नहीं पा रहे थे। वे उस तीसरे भाई के बहुत ऋणी थे।

इस बीच वह जादूगरनी वहाँ से खिसक ली पर उन तीनों भाइयों ने उसको पकड़ लिया और काट कर उसके टुकड़े टुकड़े कर दिये। उस जादूगरनी के मरते ही उस जंगल का जादू टूट गया।

सबसे बड़े भाई ने उस जादूगरनी के मरहम की वह बोतल ले ली जिससे मुर्दा भी ज़िन्दा हो जाते थे।

उसके बाद वे सब राजा के शहर वापस आ गये। शहर के सारे लोग उनके बारे में बात कर रहे थे और वे आपस में अपने बारे में बात कर रहे थे कि उनके साथ क्या हुआ।

जब बड़े भाई ने यह सुना कि उसके दोनों भाई उसकी पत्नी के पलंग पर लेटे थे तो उसने गुस्से में आ कर उन दोनों को अपनी तलवार से मार डाला। पर तुरन्त ही उसको उनके मारने का पछतावा हुआ और उसने अपने आपको मारने के लिये तलवार अपने गले पर रखी।

दूसरे लोगों ने उसको ऐसा करने से रोका तो उसको वह मरहम वाली बोतल याद आयी। उसने तुरन्त ही वह मरहम अपने भाइयों को लगाया और वे ज़िन्दा हो गये।

सबसे बड़ा भाई अपने दोनों छोटे भाइयों को ज़िन्दा देख कर बहुत खुश हुआ और उसने उनसे अपने किये की माफी माँगी।

तब उसके भाइयों ने उसको बताया कि वे अपने और उसकी पत्नी के बीच में तलवार लगा कर सोये थे इसलिये ऐसा कुछ नहीं था जैसा कि वह सोच रहा था। उनको अफसोस था कि यह बात वे उसको पहले नहीं बता पाये थे।

बातें करते करते वे राजा के महल आ गये। वहाँ आ कर उन्होंने राजकुमारी को बुलाया। राजकुमारी रोती हुई आयी तो उसने वहाँ तीन एक से भाइयों को खड़े देखा तो कुछ बोल ही नहीं सकी।

वह तो यह भी नहीं पहचान सकी कि उन तीनों में से उसका पति कौन सा था। तब सबसे बड़े लड़के ने कहा कि वही उसका पति था और फिर उसने अपने दोनों छोटे भाइयों का उससे परिचय कराया।

राजा ने अपने दामाद के दोनों छोटे भाइयों की शादी दो कुलीन सभासदों की दो बेटियों से कर दी। उन सभासदों को अपना दरबारी बना लिया और उस बूढ़े मछियारे और उसकी पत्नी को भी वहीं बुला लिया।

11 बेवकूफ इमैल्यान[33]

मछलियों की यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के रूस देश में कही सुनी जाती है।

एक बार की बात है कि एक बहुत दूर के देश में, रूस में ही कहीं किसी जगह एक किसान रहता था जिसके तीन बेटे थे। उसके दो बेटे तो होशियार थे पर उसका तीसरा बेटा जिसका नाम इमैल्यान था कुछ बेवकूफ सा था।

किसान बहुत दिनों तक जिया और जब वह बहुत बूढ़ा हो गया तो उसने अपने तीनों बेटों को अपने पास बुलाया और कहा — "मेरे प्यारे बच्चों मुझे लगता है कि अब मैं जल्दी ही मर जाऊँगा सो मैं तुमको अपना घर और जानवर देता हूँ जिन्हें तुम तीनों आपस में बराबर बराबर बाँट लेना। मैंने तुम तीनों को सौ सौ रूबल[34] और भी दिये हैं।"

इसके कुछ दिन बाद ही वह बूढ़ा मर गया। उसके तीनों बेटों ने उसको दफ़ना दिया और कुछ दिन आराम से रहते रहे।

---

[33] Emelyan the Fool – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Web Site : https://www.worldoftales.com/European_folktales/Russian_Folktale_13.html
From the Book "The Russian Garland: Being Russian Folk Tales", Edited by Robert Steele. NY: Robert McBride. 1916. 17 tales. Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com in e-book form free of charge.
This tale is just like "Bevakoof Ivan Aur Pike Machhlee" given in "Roos Ki Lok Kathayen-1" by Sushma Gupta in Hindi language.

[34] Rouble is the Russian currency.

कुछ अमय बाद इमैल्यान के दोनों बड़े भाइयों का मन किया कि वे शहर जायें और अपने पिता के दिये हुए सौ रूबल से कुछ व्यापार करें।

सो उन्होंने इमैल्यान से कहा — "ओ बेवकूफ हम लोग व्यापार करने शहर जा रहे हैं इसलिये हम तेरे सौ रूबल भी अपने साथ लिये जा रहे हैं। अगर हम अपने व्यापार में कामयाब हो गये तो हम तेरे लिये एक लाल कोट एक जोड़ी लाल बूट और एक लाल टोपी ले कर आयेंगे।

पर तू इस सारा समय घर पर ही रहना और जब हमारी पत्नियाँ यानी तेरी भाभियाँ तुझसे कोई काम करने के लिये कहें तो तू उनका काम कर देना।"

उस बेवकूफ को लाल कोट लाल जूते और लाल टोपी बहुत अच्छी लगती थी सो वह उनका कहा मानने के लिये तैयार हो गया कि वह घर पर ही रहेगा और अपनी भाभियों का कहा सारा काम कर देगा।

इस तरह उसके दोनों भाई व्यापार करने शहर चले गये और वह अपनी भाभियों के पास घर में ही रह गया।

एक दिन जब जाड़ा आने वाला था और ठंड बहुत पड़ रही थी तो उसकी भाभियों ने उससे कहा कि वह उनके लिये पानी ले आये। पर वह तो अपनी अँगीठी पर ही लेटा रहा और बोला — "अरे तुम हो कौन?"

इस पर उसकी भाभियों ने उसको बहुत डाँटा और कहा — "हम क्या हैं यह तुम अब देखोगे ओ बेवकूफ। तुम्हें पता है न कि कितनी ठंड पड़ रही है और पानी लाना तो आदमी का काम है।"

"पर मुझे बहुत आलस आ रहा है।"

उसकी भाभियाँ बोलीं — "तुमने क्या कहा कि तुम आलसी हो। तो क्या तुमको खाना नहीं खाना? अगर हमारे पास पानी नहीं है तो हम खाना नहीं बना सकते।

पर कोई बात नहीं जब हमारे पति आयेंगे तो हम उनसे कह देंगे कि वह इसको इसके लिये लाया हुआ लाल कोट और और सब सामान न दें।"

बेवकूफ ने जब यह सब सुना जो उन्होंने कहा तो उसको लगा कि उसको उनके लिये पानी लाने जाना ही चाहिये क्योंकि उसको लाल कोट और लाल टोपी पहनने की बहुत इच्छा थी।

सो वह अँगीठी के ऊपर से नीचे उतरा और बाहर जाने के लिये अपने जूते मोजे पहनने शुरू किये। तैयार होने पर उसने अपनी कुल्हाड़ी और बालटियाँ उठायीं और पास की नदी की तरफ पानी लाने के लिये चल दिया।

नदी पर पहुँच कर उसने नदी में एक बहुत बड़ा सा छेद खोदा और अपनी बालटियों में पानी भरने लगा और उनको बर्फ पर रखने लगा। फिर उसने वहीं खड़े खड़े उस छेद के पानी की तरफ देखा तो उसने देखा कि बड़ी सी पाइक मछली उस पानी में तैर रही थी।

अब इमैल्यान कितना भी बेवकूफ था पर उसकी इच्छा हुई कि वह इस पाइक मछली को पकड़ ले। उसने तुरन्त ही हाथ बढ़ा कर उसको पकड़ लिया और पानी से बाहर निकाल लिया।

उसको उसने अपनी छाती के पास रख लिया और उसको ले कर घर की तरफ जल्दी जल्दी चल दिया।

तो पाइक मछली चिल्लायी — "तुमने मुझे क्यों पकड़ा?"

"तुमको घर ले जाने के लिये और अपनी भाभियों को देने के लिये ताकि वे तुमको पका सकें।"

"ओ बेवकूफ मुझे अपने घर मत ले जाओ मुझे तुम पानी में ही फेंक दो। मैं तुम्हें बहुत अमीर बना दूँगी।"

पर बेवकूफ इस बात के लिये तैयार ही नहीं हुआ और कूदता हुआ अपने घर की तरफ चलता चला गया।

जब पाइक ने देखा कि वह बेवकूफ तो उसको जाने ही नहीं दे रहा तो वह फिर बोली — "अरे बेवकूफ तू मुझे वापस पानी में छोड़ दे मैं तेरे लिये वह सब कुछ करूँगी जो तू खुद नहीं करना चाहता। तुझको केवल यह इच्छा प्रगट करनी होगी कि तुझे क्या करवाना है और तेरा काम हो जायेगा।"

यह सुन कर वह बेवकूफ बहुत बहुत बहुत खुश हो गया क्योंकि वह खुद तो बहुत ही आलसी था। उसका काम कोई और कर दे इससे अच्छी बात उसके लिये और क्या हो सकती थी।

उसने सोचा "अगर पाइक मेरा वह सब काम कर दे जो मैं नहीं करना चाहता या जिसमें मुझको बहुत मेहनत लगती है तो यह तो बहुत ही अच्छा है।"

सो उसने पाइक से कहा — "मैं तुमको पानी में जरूर फेंक देता हूँ अगर तुम वह सब करो जिसका तुमने वायदा किया है।"

पाइक बोली — "पहले मुझे जाने दो उसके बाद ही मैं अपना वायदा निभाऊँगी।"

बेवकूफ बोला — "नहीं पहले तुम अपना वायदा निभाओ तभी मैं तुमको वहाँ छोड़ूँगा।"

जब पाइक ने देखा कि इमैल्यान उसको पानी में नहीं छोड़ रहा तो वह बोली — "अगर तुमको मुझसे कोई काम कराना है तो तुमको उस इच्छा को पहले मुझसे कहना पड़ेगा।"

यह सुन कर वह बेवकूफ बोला — "मेरी इच्छा है कि मेरी पानी की बालटियाँ बिना पानी छलकाये नदी से पहाड़ी के ऊपर अपने आप चल कर पहुँच जायें।"

इस पर पाइक बोली — "इस तरह से नहीं। अब सुनो और इन शब्दों को याद रखना जो मैं अब तुमसे कहती हूँ तभी तुम अपनी इच्छा पूरी करवा सकोगे – "पाइक के हुक्म से और मेरी इच्छा से बालटियों तुम अपने आप पहाड़ी पर जाओ।"

इमैल्यान ने जैसे ही पाइक के ये शब्द दोहराये तो बालटियाँ उठ कर अपने आप पहाड़ी के ऊपर चल दीं। वह तो यह देख कर

हक्का बक्का रह गया। उसने पाइक से पूछा — "क्या ऐसा हर बार होता रहेगा?"

पाइक बोली — "हाँ जब भी तुम कोई भी इच्छा प्रगट करोगे तुम्हारी वह इच्छा उसी समय पूरी हो जायेगी। पर तुम उन शब्दों को हमेशा याद रखना जो मैंने तुम्हें बताये हैं तभी तुम्हारी वह इच्छा पूरी होगी।"

तब इमैल्यान ने मछली को पानी में छोड़ दिया और अपनी बालटियों के पीछे पीछे अपने घर चला गया।

उसके पड़ोसी तो यह तमाशा देख कर आश्चर्य में पड़ गये। वे एक दूसरे से कहने लगे — "इस बेवकूफ की बालटियाँ तो नदी से घर तक अपने आप ही चल कर आ गयी हैं और यह खुद उनके पीछे पीछे आराम से चल कर आ रहा है।"

पर इमैल्यान ने उनकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया और अपने रास्ते अपने घर चला गया। बालटियाँ अब तक घर पहुँच चुकी थीं और अपनी जगह बैन्च पर जा कर बैठ गयी थीं सो बेवकूफ फिर से अपनी अँगीठी पर जा कर लेट गया।

कुछ समय बाद उसकी भाभियों ने उससे फिर कहा — "इमैल्यान तुम वहाँ आलसी बने क्यों पड़े हो। उठो और जा कर थोड़ी सी लकड़ी काट लाओ।"

पर बेवकूफ बोला — "तुम? और तुम होती कौन हो?"

उसकी भाभियाँ बोलीं — "तुमको दिखायी नहीं देता कि जाड़ा आ गया है और अगर तुम लकड़ियाँ नहीं काटोगे तो तुम ठंड से जम जाओगे।"

बेवकूफ बोला — "हाँ मैं आलसी हूँ।"

उसकी भाभियाँ बोलीं — "क्या? तुम आलसी हो। अगर तुम तुरन्त ही लकड़ी काटने नहीं गये तो हम अपने अपने पतियों से कह देंगी कि वे तुमको लाल कोट लाल बूट और लाल टोपी ला कर न दें।"

अब बेवकूफ की तो बड़ी इच्छा थी कि वह लाल कोट लाल बूट और लाल टोपी पहने तो उसके लिये उसको लकड़ी काटने के लिये बाहर जाना पड़ेगा और इस समय तो कड़ाके की ठंड पड़ रही थी और वह अपनी अँगीठी के ऊपर से नीचे नहीं उतरना चाहता था सो उसने दबे मुँह से पाइक मछली वाले शब्द दोहरा दिये —

"पाइक के हुक्म से और मेरी इच्छा से कुल्हाड़ी तुम उठो और लकड़ी काट कर लाओ। और तुम सब लट्ठे अँगीठी में आ कर अपने आप लग जाओ।"

बस उसका यह कहना था कि उसकी कुल्हाड़ी उठी और कूद कर उनके घर के पीछे के मैदान में लकड़ी काटने चली गयी। उसके काटे हुए लट्ठे अपने आप आ कर घर में अँगीठी में इकट्ठे होने लगे।

जब उसकी भाभियों ने यह देखा तो वह तो अपने बेवकूफ की होशियारी पर हैरान रह गयीं। और क्योंकि कुल्हाड़ी भी लकड़ी

अपने आप ही काट रही थी तो अब इमैल्यान को जब भी मौका मिलता वह काम से आराम पा जाता।

कुछ देर बाद सारी लकड़ी खत्म हो गयी तो उसकी भाभियों ने कहा — "इमैल्यान अब हमारे पास कोई लकड़ी नहीं है सो अब तुम जंगल जाओ और कुछ लकड़ी काट कर लाओ।"

पर बेवकूफ बोला — "अरे तुम हो कौन?"

उसकी भाभियों ने कहा — "जंगल तो बहुत दूर है और आजकल जाड़ा है। हमारे जाने के लिये अब बहुत ठंडा है।"

पर बेवकूफ ने जवाब दिया — "मुझे तो बहुत आलस आ रहा है।"

वे चिल्लायीं — "तुम इतने आलसी क्यों हो? पता है अगर तुम लकड़ी काट कर नहीं लाये तो तुम इस ठंड में जम जाओगे। इसके अलावा हम यह भी देख लेंगे कि जब हमारे पति आयेंगे तो वे तुमको लाल कोट लाल बूट और लाल टोपी न दें।"

अब क्योंकि बेवकूफ को तो लाल कोट लाल बूट और लाल टोपी चाहिये थी तो उसको लगा कि उसको जंगल लकड़ी काटने जाना ही चाहिये।

सो वह अँगीठी से नीचे उतरा अपने जूते मोजे पहने और कपड़े पहन कर तैयार हुआ। तैयार हो कर बाहर वाले मैदान में गया शैड से स्ले निकाली साथ में एक रस्सी ओर एक कुल्हाड़ी ली और अपनी भाभियों से बोला — "फाटक खोलो।"

जब उसकी भाभियों ने देखा कि उनका देवर तो बिना घोड़े जोते ही स्ले को ले कर जा रहा है तो उन्होंने कहा — "अरे इमैल्यान तुम तो स्ले बिना घोड़े जोते ही ले कर जा रहे हो।"

पर उसने जवाब दिया कि उसको घोड़ों की जरूरत ही नहीं थी और उनसे उनसे केवल घर का फाटक खोलने के लिये ही कहा। सो उन्होंने घर का फाटक खोल दिया।

बेवकूफ ने शब्द दोहराये "पाइक के हुक्म से और मेरी इच्छा से मेरी यह स्ले जंगल की ओर चले।"

स्ले तुरन्त ही मैदान के बाहर इस तेज़ी से कूदी कि गॉव के लोगों ने जब उसे देखा तो वे तो इमैल्यान की बिना घोड़ों की स्ले की सवारी देख कर बहुत आश्चर्य में पड़ गये। और वह स्ले भी इतनी तेज़ी से जा रही थी कि दो घोड़े भी उसको इतनी तेज़ नहीं खींच सकते थे।

बेवकूफ को जंगल शहर के बीच से हो कर जाना था और वह अपनी पूरी गति से जा रहा था।

पर उस बेवकूफ को यह पता नहीं था कि जब वह इतनी तेज़ गति से जा रहा था तो उसको शहर वालों को पहले से ही उसके रास्ते से हट जाने के लिये सावधान कर देना चाहिये था कि "रास्ता छोड़ो।" ताकि वह किसी से टकराये नहीं।

पर वह तो ऐसे ही चला गया सो वह कई लोगों के ऊपर चढ़ कर चला गया। हालॉकि कई लोग उसके पीछे दौड़े भी पर कोई

उसको पकड़ नहीं पाया क्योंकि वह बहुत तेज़ जा रहा था और इसलिये उसको वापस भी नहीं ला पाया।

आखिरकार इमैल्यान शहर से बाहर निकल गया और जंगल में आ गया। वहाँ आ कर उसने अपनी स्ले रोक दी और कहा "पाइक के हुक्म से और मेरी इच्छा से कुल्हाड़ी तुम जाओ और लकड़ी काटो।"

उसके मुँह से ये शब्द निकले ही थे कि कुल्हाड़ी उठी और जंगल में लकड़ी काटने जा पहुँची। वहाँ से कटे लट्ठे अपने आप स्ले में आ कर इकट्ठे होने लगे।

जब कुल्हाड़ी ने अपना काम कर लिया तो वह स्ले पर बैठा और बोला "पाइक के हुक्म से और मेरी इच्छा से अब तुम उठो और घर की तरफ चलो।" और स्ले अपनी सबसे तेज़ गति से दौड़ चली।

जब वह शहर में आया जहाँ उसने कई लोगों को अपनी स्ले से घायल किया था तो उसने देखा कि वहाँ तो उसको पकड़ने के लिये बहुत सारी भीड़ जमा थी। जैसे ही वह शहर के फाटक में घुसा उन्होंने उसे पकड़ लिया।

उन्होंने उसे स्ले में से बाहर खींच लिया और नीचे गिरा कर खूब पीटा। जब बेवकूफ ने देखा कि लोग उसके साथ कैसा बर्ताव कर रहे थे तो उसने मुँह ही मुँह में कहा "पाइक के हुक्म से और मेरी इच्छा से ओ डंडे इन्हें खूब मारो।"

तुरन्त ही डंडा उठा और उसने उनको चारों तरफ से मारना शुरू कर दिया। डंडे की मार खाते ही वे सब लोग वहाँ से भाग गये। उनके वहाँ से भागते ही बेवकूफ भी वहाँ से अपने घर भाग आया। डंडा उनको भगाने के बाद उसके पीछे पीछे घर आ गया। और इमैल्यान अपनी अँगीठी के ऊपर जा कर लेट गया।

जब इमैल्यान शहर से चला गया तो वहाँ के सारे लोग एक दूसरे से आपस में बात करने लगे कि किस तरह से वह बिना घोड़ों की स्ले पर कितनी तेज़ी से जा रहा था। आखिर यह बात राजा के पास भी पहुँची।

और जब राजा ने यह सुना तो उसकी भी उसको देखने की इच्छा हो आयी। उसने अपना एक औफीसर अपने कुछ सिपाहियों के साथ उसको ढूँढने के लिये भेजा। औफीसर तुरन्त ही उसकी खोज में चल दिया।

उसने भी वही रास्ता लिया जो बेवकूफ ने लिया था। वह भी उसी गाँव में आ पहुँचा जिसमें इमैल्यान रहता था। वहाँ वह गाँव के सरदार के पास गया और उससे कहा "मुझे राजा ने फलाँ फलाँ बेवकूफ को लाने के लिये भेजा है।"

सरदार ने तुरन्त ही उसको बेवकूफ का घर दिखा दिया। औफीसर उस घर के अन्दर गया और पूछा कि बेवकूफ कहाँ है। अब वह तो अपनी रोजमर्रा की जगह याने अँगीठी के ऊपर लेटा हुआ था। उसने वहीं से पूछा "तुम्हें मुझसे क्या चाहिये।"

औफीसर बोला — "क्या? मुझे तुमसे क्या चाहिये। तुम अभी अभी उठो तैयार हो और मेरे साथ राजा के पास चलो।"

इमैल्यान ने पूछा — "मगर क्यों?"

औफीसर उसके इस बदतमीजी के जवाब से बहुत गुस्सा हो गया कि उसने उसके गाल पर एक थप्पड़ मार दिया। बेवकूफ को भी गुस्सा आ गया वह बोला — "पाइक के हुक्म से और मेरी इच्छा से ओ डंडे उठ और इनको मार।"

डंडा तुरन्त ही उठा और उन सबको चारों तरफ से मारने लगा। औफीसर को भी वहॉ से जितनी तेज़ी से वह भाग सकता था भाग जाना पड़ा। भागता भागता जब वह राजा के सामने आया तो उसने उसे बताया कि कैसे उसको उस बेवकूफ ने डंडे से मारा।

राजा ने उसकी तारीफ तो बहुत की पर उसकी कहानी पर विश्वास नहीं किया।

तब राजा ने अपने एक अक्लमन्द आदमी को बुलाया और उससे उस बेवकूफ को चालाकी से लाने के लिये कहा। अक्लमन्द आदमी इमैल्यान के गॉव गया और उस गॉव के सरदार के पास पहुॅचा

उसने उससे कहा — "मुझे तुम्हारे गॉव के बेवकूफ को राजा के पास ले जाने का हुक्म हुआ है। इसलिये मुझे बताओ कि वह किसके साथ रहता है।"

सरदार दौड़ा हुआ गया और बेवकूफ की भाभियों को बुला लाया। अक्लमन्द आदमी ने उनसे पूछा कि बेवकूफ को क्या पसन्द था।

वे बोलीं — "ओ कुलीन जनाब, अगर हमारे बेवकूफ को कोई उसकी पसन्द की कोई चीज़ देना चाहता है तो पहले एक दो बार तो वह बिल्कुल ही मना कर देता है पर हॉ तीसरी बार में वह राजी हो जाता है।

उसके बाद तो आप उससे वह करा सकते हैं जो आप कराना चाहते हैं। हॉ अगर उससे कोई बुरी तरीके से बर्ताव करे तो उसको अच्छा नहीं लगता।"

राजा के दूत ने उनको विदा किया और उनसे यह कहने को मना कर दिया कि वह उससे यह न कहें कि राजा के दूत ने उससे मिलने से पहले उनको बुलाया था।

उसके बाद उसने कुछ किशमिश कुछ भुने हुए आलूबुखारे और कुछ अंगूर खरीदे और उनको ले कर वह बेवकूफ के पास जा पहुँचा। वह उस समय भी अपनी अँगीठी पर लेटा हुआ था।

वहॉ जा कर वह उससे बोला — "अरे इमैल्यान तुम यहॉ क्यों लेटे हुए हो?" कहते हुए उसने उसको किशमिश भुने हुए आलूबुखारे और अंगूर दिये।

वह आगे बोला — "इमैल्यान हम दोनों एक साथ राजा के पास चलेंगे। मैं तुमको अपने साथ ले जाऊँगा।"

पर बेवकूफ ने जवाब दिया — "मैं यहाँ ठीक से गर्म हूँ।" क्योंकि बेवकूफ को इससे ज़्यादा कुछ और अच्छा लगता ही नहीं था।

तब दूत ने उसकी खुशामद करनी शुरू की — "ओ भले इमैल्यान चलो चलते हैं न। तुमको उनका दरबार बहुत अच्छा लगेगा।"

बेवकूफ बोला — "नहीं मैं बहुत आलसी हूँ।"

पर दूत ने एक बार उसकी और खुशामद की — "तुम मेरे साथ चलो तो। वहाँ एक और बहुत अच्छा आदमी है। और फिर राजा तुमको एक बहुत बढ़िया लाल कोट लाल टोपी ओर बहुत अच्छे लाल बूट भी तो देगा।"

जैसे ही बेवकूफ ने लाल कोट का नाम सुना तो बोला — "ठीक है तुम आगे आगे चलो मैं तुम्हारे पीछे पीछे आता हूँ।" यह सुन कर दूत ने उससे ज़्यादा जिद नहीं की और वहाँ से चला गया।

वह वहाँ से निकल कर उसकी भाभियों के पास गया और उनसे पूछा कि अब ऐसा कोई खतरा तो नहीं था कि वह न आये। भाभियों ने उसको चिश्वास दिलाया कि नहीं अब ऐसी कोई बात नहीं थी। वह वहाँ जरूर पहुँच जायेगा।

इमैल्यान ने जो अभी तक अँगीठी के ऊपर लेटा हुआ था सोचा "उफ़ मुझे राजा के पास जाने में बिल्कुल अच्छा नहीं लगता।" पर

फिर एक मिनट के बाद ही कुछ सोच कर वह बोला "पाइक के हुक्म से और मेरी इच्छा से ओ अँगीठी तू उठ और शहर चल।"

तुरन्त ही दीवार खुल गयी और अँगीठी वहाँ से बाहर निकल आयी। अब वह बाहर की तरफ चल दी और जैसे ही उसने घर का मैदान पार किया तो वहाँ से तो वह बहुत तेज़ भाग ली। उसको तो कोई पकड़ ही नहीं सकता था।

तुरन्त ही उसने राजा के दूत को पकड़ लिया और उसके साथ साथ ही राजा के महल में घुस गयी।

जब राजा ने बेवकूफ को आते देखा तो वह और उसके सारे दरबारी उससे मिलने के लिये आगे गये।

जब राजा और उसके दरबारियों ने देखा कि बेवकूफ तो अँगीठी पर चढ़ कर आया है तो सबने दाँतों तले उँगली दबा ली। पर बेवकूफ बिना हिले डुले वहीं पड़ा रहा और कुछ बोला भी नहीं।

राजा ने उससे पूछा — "जब तुम जंगल जा रहे थे तो तुमने इतने सारे लोगों को परेशान क्यों किया?"

बेवकूफ बोला — "इसमें मेरा कोई कुसूर नहीं है यह उन्हीं की गलती है। वे लोग रास्ते से हटे क्यों नहीं?"

इत्तफाक से उसी समय राजा की बेटी अपनी खिड़की पर आ गयी। इमैल्यान ने भी अचानक ही ऊपर देखा तो देखा कि राजकुमारी तो बहुत सुन्दर थी। बस तुरन्त ही वह फुसफुसाया

"पाइक के हुक्म से और मेरी इच्छा से यह सुन्दर लड़की मेरे प्रेम में पड़ जाये।"

जैसे ही उसने ये शब्द कहे लो वह तो उसके प्रेम में पड़ गयी। उसके बाद वह बोला "पाइक के हुक्म से और मेरी इच्छा से ओ ॲगीठी अब तुम उठो और घर चलो।"

तुरन्त ही ॲगीठी वहॉ से उठी और शहर में हो कर बेवकूफ के घर की तरफ चल दी। घर जा कर वह अपनी जगह लग गयी और इमैल्यान वहॉ कुछ समय तक शान्ति और खुशी से रहा।

पर अब शहर कुछ अलग हो गया था क्योंकि इमैल्यान के कहने पर राजा की बेटी अब इमैल्यान के प्रेम में पड़ गयी थी। वह अब अपने पिता से जिद कर रही थी कि उसको उस बेवकूफ से शादी करनी थी। और राजा उन दोनों से बहुत गुस्सा था पर नहीं जानता था कि वह बेवकूफ को कैसे पकड़े।

तब उसके मन्त्री ने उसको एक सुझाव दिया कि उसे उसी आदमी को उस बेवकूफ को पकड़ने के लिये सजा के तौर पर फिर से भेजना चाहिये कि क्योंकि पहली बार उसका काम ठीक से नहीं हुआ था इसलिये वह उसको दोबारा वहॉ ले कर आये।

यह सलाह राजा को अच्छी लगी और उसने अपने औफीसर को बुलाया और कहा — "दोस्त, मैंने तुम्हें पहले भी उस बेवकूफ को यहॉ लाने के लिये भेजा था और तुम उसको बिना लिये ही चले आये थे सो अब तुम्हारी सजा यही है कि तुम वहॉ दोबारा जाओ।

अबकी बार अगर तुम उसको ले आये तो मैं तुम्हें इनाम दूँगा और अगर तुम उसको नहीं ला पाये तो मैं तुम्हें सजा दूँगा।"

जब औफीसर ने यह सुना तो वह राजा के पास से तुरन्त ही उस बेवकूफ को ढूँढने चल दिया। जब वह गॉव आया तो वह फिर से गॉव के सरदार से मिला।

उसने उसे कुछ पैसे दिये और कहा — "लो यह पैसे लो और इससे एक बहुत ही बढ़िया खाने का इन्तजाम करो। फिर इमैल्यान को खाना खाने के लिये बुलाओ और जब वह आ जाये तो उसको इतनी पिलाओ कि वह सो जाये।"

सरदार को पता था कि यह औफीसर राजा के पास से आया है इसलिये वह उसका काम करने पर मजबूर था। उसने एक खाने के लिये जो कुछ भी जरूरी था वह सब खरीदा और इमैल्यान को खाना खाने के लिये बुलाया। इमैल्यान ने कहा कि वह आयेगा। यह सुन कर औफीसर बहुत खुश हुआ।

अगले दिन इमैल्यान शाम को सरदार के घर खाना खाने आया। अपने प्लान के अनुसार सरदार ने उसको इतनी पिलायी कि वह सो गया।

जब औफीसर ने यह देखा कि बेवकूफ अब सो गया है तो उसने गाड़ी बुलायी बेवकूफ को उसमें डाला और शहर की तरफ चल दिया। वह सीधा महल पहुँच गया।

जैसे ही राजा ने सुना कि उसका औफीसर बेवकूफ को ले आया है तो उसने तुरन्त ही एक बहुत बड़ा सा बक्सा[35] मँगवाया जो मजबूत लोहे के छल्लों से बँधा हुआ हो।

राजा के हुक्म से बक्सा तुरन्त ही आ गया। जब राजा ने देखा कि वहाँ सब कुछ उसकी मर्जी के मुताबिक तैयार है तो उसने हुक्म दिया कि बेवकूफ को और उसकी बेटी को दोनों को उस बक्से में रख दिया जाये। फिर उसको मजबूती से बन्द कर दिया गया और जब यह सब हो गया तो उस बक्से को समुद्र में उसकी उछलती कूदती लहरों की दया पर फेंक दिया गया।

यह सब कर के राजा अपने महल वापस लौट गया। बक्सा समुद्र की लहरों पर नाचता रहा। इस सबके बीच बेवकूफ सोता ही रहा। जब उसकी आँख खुली तो उसने देखा कि उसके चारों तरफ तो अँधेरा ही अँधेरा है। उसको लगा कि वह अकेला ही है तो उसने सोचा "मैं कहाँ हूँ।"।

इस पर राजकुमारी बोली — "तुम एक बक्से में हो इमैल्यान और मैं तुम्हारे साथ इसके अन्दर हूँ।"

बेवकूफ ने पूछा — "और तुम कौन हो?"

राजकुमारी बोली — "मैं राजा की बेटी।" फिर उसने उसको यह भी बताया कि वह उसके साथ वहाँ बन्द क्यों है और उससे

[35] Translated for the word "Cask". It might be like a barrel. See its picture above

प्रार्थना की कि वह अपने आपको और उसे दोनों को उस बक्से में से आजाद करे।

वह बेवकूफ बोला — "पर क्यों? मैं तो बहुत अच्छे से गर्म हूँ।"

राजकुमारी बोली — "ठीक है। तुम यहाँ पर गर्म हो तो हो पर मेरा एक काम तो कर दो। मेरे आँसुओं पर रहम खाओ और कम से कम मुझे तो इससे बाहर निकाल दो।"

इमैल्यान बोला — "ऐसा क्यों? मैं तो बहुत आलसी हूँ।"

इस पर राजकुमारी ने उसको और ज़्यादा खुश करने की कोशिश की तो वह बोला — "ठीक है ठीक है मैं तुम्हारी खुशी के लिये यह कर देता हूँ।"

सो उसने बहुत ही धीरे से कहा "पाइक के हुक्म से और मेरी इच्छा से ओ समुद्र हमको अपने किनारे पर फेंक दो जहाँ हम सूखी जमीन पर रह सकें। पर यह जगह हमारे देश के पास ही होनी चाहिये। और ओ बक्से तू भी किनारे पर जा कर टूट जाना।"

बेवकूफ के मुँह से ये शब्द निकले ही थे कि लहरें उठीं और उन्होंने बक्से को सूखी जमीन पर ले जा कर फेंक दिया। बक्सा भी वहाँ जा कर अपने आप ही टूट गया।

इमैल्यान उठा और जहाँ वे लोग जा कर पड़े थे उसके आस पास राजकुमारी के साथ इधर उधर घूमा। बेवकूफ ने देखा कि वे

तो एक बहुत ही सुन्दर टापू पर उतरे हैं। उस टापू पर बहुत सारे फलों के बहुत सारे पेड़ हैं।

जब राजकुमारी ने यह देखा तो वह तो बहुत ही खुश हो गयी और बोली — "पर इमैल्यान हम रहेंगे कहाँ? यहाँ तो कोई झोंपड़ी भी नहीं है।"

बेवकूफ बोला — "तुमको तो कुछ ज़्यादा ही चाहिये।"

अब तक राजकुमारी को यह पता चल गया था कि वह जो कुछ भी चाहता था वही कर सकता था सो वह बोली — "बस मेरा एक काम और कर दो। कम से कम एक छोटा सा मकान बनवा दो ताकि हम उसमें बारिश से बचने के लिये रह तो सकें।"

पर बेवकूफ बोला "मैं तो आलसी हूँ।" फिर भी राजकुमारी उसकी खुशामद करती ही रही और आखिर इमैल्यान को वही करना पड़ा जो वह चाहती थी।

वह कुछ दूर पर खड़ा हुआ और बोला "पाइक के हुक्म से और मेरी इच्छा से इस टापू के बीच में राजा के किले से भी अच्छा एक किला बन जाये और यहाँ से राजा के किले तक क्रिस्टल का एक पुल बन जाये। इस किले में एक राजा के लायक जो जो लोग रहते हों वह सब लोग वहाँ आ जायें।"

उसने मुश्किल से ये शब्द बोले होंगे कि वहाँ एक बहुत ही शानदार किला बन कर खड़ा हो गया जहाँ से एक क्रिस्टल का पुल राजा के महल तक जाता था।

बेवकूफ राजकुमारी के साथ किले में दाखिल हुआ और देखा कि महल के कमरे तो सब बहुत अच्छी तरह से सजे हुए थे। बहुत सारे नौकर चाकर लोग और सब तरह के औफीसर उसके हुक्म के इन्तजार में हैं।

जब उसने इन सब आदमियों को आदमियों की तरह देखा तो वह अपने आपको बहुत बदसूरत और बेवकूफ लगा। वह उन सबसे अच्छा बनना चाहता था सो उसने एक बार फिर कहा "पाइक के हुक्म से और मेरी इच्छा से मैं अब इन सबसे सुन्दर और एक बहुत ही अक्लमन्द आदमी बन जाऊँ।"

बस जैसे ही उसने ये शब्द बोले कि वह तो एक इतना सुन्दर और अक्लमन्द नौजवान बन गया कि लोग तो उसे देख कर आश्चर्यचकित रह गये।

अब इमैल्यान ने अपना एक नौकर राजा के पास राजा को और उसकी सारे दरबार को अपने यहाँ बुलाने के लिये भेजा। वह नौकर उस किस्टल के पुल पर से हो कर गया था जो बेवकूफ ने अपने किले से ले कर राजा के महल तक बनवाया था।

जब वह नौकर राजा के महल में पहुँचा तो उसके मन्त्री उसको ले कर राजा के दरबार में गये। वहाँ पहुँच कर इमैल्यान के दूत ने कहा — "योर मैजेस्टी हमारे राजा ने आपको खाने को लिये बुलाया है।"

राजा ने पूछा — "और तुम्हारे राजा कौन हैं?"

नौकर बोला — "योर मैजेस्टी मैं आपको अभी अपने मास्टर के बारे में कुछ नहीं बता सकता पर अगर आप उनके साथ खाना खायेंगे तो वह आपको अपने आप बता देंगे कि वह कौन हैं।"

ऐसा उसने इसलिये कहा क्योंकि बेवकूफ ने उसे अपने बारे में बताने से मना किया था।

यह सुन कर राजा की उत्सुकता बहुत बढ़ गयी ऐसा कौन सा राजा हो सकता है जिसने उसे खाने पर बुलाया है। उसने उस नौकर को बोल दिया कि वह यकीनन वहाँ आयेगा। यह सुन कर नौकर चला गया। राजा भी अपने दरबारियों के साथ क्रिस्टल के पुल से हो कर बेवकूफ के घर चल दिया।

राजा को आते देख कर इमैल्यान उसके स्वागत के लिये आगे आया। उसको अपने सफेद हाथों से अन्दर ले गया उसके चीनी वाले होठों को चूमा और उन सबको ले जा कर ओक की मेजों के चारों तरफ बिठाया जिनके ऊपर बहुत बढ़िया किस्म के मेजपोश बिछे हुए थे और जिनके ऊपर बहुत सारी मिठाइयाँ और बहुत सारे मीठे मीठे पेय रखे हुए थे।

राजा और उसके मन्त्रियों ने खूब खाया पिया और आनन्द मनाया। खा पी कर जब वे सब वहाँ से उठे तो बेवकूफ ने राजा से कहा — "क्या योर मैजेस्टी को पता है कि मैं कौन हूँ?"

अब क्योंकि इमैल्यान ने बहुत ही अच्छे कपड़े पहन रखे थे और साथ में वह बहुत सुन्दर भी हो गया था तो उसको पहचानना

किसी भी तरह मुमकिन नहीं था। राजा ने साफ कह दिया कि उसे बहुत अफसोस था कि वह उसको पहचान नहीं सका।

इस पर बेवकूफ बोला — "योर मैजेस्टी को याद होगा कि एक बार एक बेवकूफ अँगीठी पर सवार हो कर आपके महल आया था और आपने उसको अपनी बेटी के साथ एक बक्से में बन्द करवा कर समुद्र में फिंकवा दिया था। तो अब आप मुझे जान लीजिये कि मैं वही बेवकूफ हूँ। मेरा नाम इमैल्यान है।"

जब राजा ने उसको इस तरह देखा तो वह तो डर गया और सोचने लगा कि वह क्या करे। पर बेवकूफ राजकुमारी के पास गया और वह उसको अन्दर से बाहर ले आया।

राजा अपनी बेटी को ज़िन्दा देख कर बहुत खुश हुआ। वह बोला — "मैंने तुम दोनों के साथ बहुत अन्याय किया है इसलिये अब मैं खुशी से अपनी बेटी तुमको देता हूँ।"

बेवकूफ ने नम्रतापूर्वक उसको धन्यवाद दिया और जब इमैल्यान ने शादी की सब तैयारियाँ कर लीं तो उनकी शादी बड़ी शानदार ढंग से मनायी गयी।

बेवकूफ ने मन्त्रियों और सब लोगों को एक बहुत बड़ी दावत दी। जब सब कुछ खत्म हो गया तो राजा अपना राज्य अपने दामाद को देना चाहता था पर इमैल्यान उसका ताज लेना नहीं चाहता था सो राजा अपने राज्य वापस चला गया और वह बेवकूफ अपने किले में आराम से खुशी खुशी रहा।

12 बेवकूफ इवान और जादुई पाइक मछली[36]

एक बार की बात है कि रूस में एक जगह तीन भाई रहते थे। उनमें से दो भाई तो बहुत अक्लमन्द थे पर तीसरा भाई कुछ बेवकूफ सा था। इस तीसरे भाई का नाम था इवान[37]। इवान सारा दिन अँगीठी के पास बैठा बैठा अँगूठा चूसता रहता और सपने देखता रहता।

जाड़े के मौसम के एक दिन जब दोनों बड़े भाई बाजार जाने के लिये तैयार हो रहे थे तो उन्होंने अपने छोटे भाई से कहा कि वे बाजार जा रहे हैं। उनके पीछे वह उनकी पत्नियों का कहना माने।

उन्होंने साथ में यह भी कहा — "अगर तुम ऐसा करोगे तो हम तुम्हारे लिये लाल रंग के जूते ला कर देंगे।"

यह सुन कर वह बेवकूफ मुस्कुराया और जा कर अँगीठी पर लेट गया। जब उसके भाई लोग चले गये तो उसके उन बड़े भाइयों की पत्नियों ने उससे कहा — "जाओ और ज़रा हमारे लिये नदी से पानी ला दो।"

बेवकूफ बोला — "बाहर बहुत ठंडा है। मैं पानी नहीं ला सकता।"

पत्नियों ने कहा — "अगर तुम नहीं जाओगे तो हम अपने पतियों से कह देंगी और फिर तुमको नये जूते नहीं मिलेंगे।"

---

[36] Ivan the Fool and the Magic Pike – a folktale from Russia, Asia. Adapted from the Book : "Russian Folk-Tales". Retold by James Riordan. Oxford, OUP. 2000. 96 p.

[37] Ivan – a name of a Russian man, name of the youngest brother

इवान कुछ भुनभुनाते हुए बोला — "अच्छा अच्छा ठीक है। मैं आपके लिये पानी लाने जाता हूँ।"

वह अँगीठी से नीचे उतरा, उसने अपना पुराना कोट पहना और दो बालटी और एक कुल्हाड़ी ले कर जमी हुई नदी की तरफ पानी लाने चल दिया।

वहाँ जा कर उसने जमी हुई नदी की बर्फ में एक छेद किया और उसमें से दो बालटी पानी निकाला और उनको ले कर घर चला।

उसने बस ऐसे ही पानी की तरफ एक निगाह डाली तो उसको बड़ा आश्चर्य हुआ। उनमें से एक बालटी में तो एक बहुत बड़ी मछली तैर रही थी – एक पाइक मछली[38]।

उस मछली को देख कर इवान को बहुत खुशी हुई। वह बोला — "वाह मेरी कितनी अच्छी किस्मत है। आज रात तो मैं खाने में इस मछली का सूप खाऊँगा।"

पर तभी एक दूसरे आश्चर्य ने उसको आश्चर्य में डाल दिया। वह मछली आदमी की आवाज में बोली — "मुझे जाने दो इवान, मुझे जाने दो। मैं एक दिन तुमको इसका बदला जरूर दूँगी।"

बेवकूफ इवान हँस पड़ा — "तुम मेरे लिये क्या अच्छा काम कर सकती हो? इससे अच्छा तो यह है कि मैं तुमको घर ले जाऊँ और शाम को खाने में खाऊँ।"

[38] Pike fish is a large size fish

पर मछली ने उससे फिर से प्रार्थना की — "मुझे जाने दो इवान, मुझे जाने दो। मैं तुम्हारी हर इच्छा पूरी करूँगी।"

यह सुन कर इवान अपना सिर खुजाता हुआ बोला — "अगर मैं तुमको जाने दूँ तो तुम साबित करो कि जो कुछ तुम कह रही हो सच कह रही हो। तुम मेरी बालटियों को बिना एक बूँद पानी बिखेरे घर तक पैदल चला कर भेज दो।"

मछली बोली — "ठीक है। बस तुमको यह कहना है "पाइक की इच्छा से जो मैं चाहूँ वह तुम करो।"

सो वह बेवकूफ इवान तुरन्त ही बोला — "पाइक की इच्छा से जो मैं चाहूँ वह तुम करो। ओ बालटियों तुम अपने आप घर चली जाओ।"

बस तुरन्त ही उन बालटियों के लकड़ी के पैर निकल आये और वे उन लकड़ी के पैरों से पहाड़ों पर चढ़ने लगीं। इवान ने भी उस मछली को तुरन्त ही नदी में छोड़ दिया और अपनी बालटियों के पीछे भाग लिया।

इस बीच वे बालटियाँ गाँव के बाजार की सड़क से हो कर जा रही थीं। गाँव के लोग उन बालटियों को चलता देख कर आश्चर्य से उनको घूर रहे थे। उनका मुँह तो बस खुला का खुला ही रह गया था।

इवान मुस्कुराता हुआ उन बालटियों के पीछे पीछे भागा जा रहा था। बालटियाँ जा कर सीधी उसके लकड़ी के मकान में घुस गयीं

और जा कर एक बैन्च पर बैठ गयीं। जबकि वह बेवकूफ इवान अपनी गर्म अँगीठी के पीछे जा कर बैठ गया।

जब उसकी भाभियों ने यह देखा कि इवान पानी ले आया तो वे इवान से बोलीं — "जाओ अँगीठी के लिये थोड़ी लकड़ी और काट लाओ।"

बेवकूफ अपनी जगह से हिला भी नहीं बस ज़रा सा फुसफुसाया — "पाइक की इच्छा से जो मैं चाहूँ वह तुम करो। ओ कुल्हाड़ी तुम आलमारी में से नीचे उतरो और अपने आप लकड़ी काट कर लाओ।"

जैसे ही इवान यह फुसफुसाया कि उसकी कुल्हाड़ी आलमारी पर से कूदी और मकान के पीछे की तरफ भाग कर अपने आप ही लकड़ी काटने लगी। कटे हुए लकड़ी के लट्ठे एक एक कर के घर में आ कर जमा होने लगे और फिर अँगीठी में जा कर कूद गये।

फिर उसके भाइयों की पत्नियों ने उससे जंगल से लकड़ी काटने के लिये जाने के लिये कहा। अब उसके करने के लिये कुछ नहीं था बस वह अँगीठी से नीचे उतरा और अपने जूते पहने। इस बार उसने एक कुल्हाड़ी और एक लम्बी सी रस्सी और साथ में ले ली।

फिर उसने मकान के कम्पाउंड में से स्ले[39] उठायी और बोला — "भाभियों दरवाजा खोलो।"

यह देख कर उसकी भाभियाँ चिल्लायीं — "अरे, यह क्या? तुमने तो स्ले में घोड़े भी नही जोते। कैसे जाओगे?"

इवान मुस्कुरा कर बोला — "मुझे घोड़ों की जरूरत नहीं है।"

उसकी भाभियों ने घर का दरवाजा खोल दिया और वह चिल्लाया — "पाइक की इच्छा से जो मैं चाहूँ वह तुम करो। ओ स्ले तुम पेड़ों की तरफ भाग चलो और वही करो जो मुझे अच्छा लगे।"

यह कहते ही उसकी स्ले दरवाजे में से हो कर इतनी तेज़ी से उड़ चली कि उसकी दोनों भाभियाँ तो उसको आश्चर्य से देखती हुई वहीं बर्फ पर गिर पड़ीं। उस स्ले को उड़ता देख कर और दूसरे गाँव वाले भी आश्चर्य से नीचे गिर पड़े।

वे चिल्लाये — "पकड़ लो इसको, पकड़ लो इसको।" पर बेवकूफ ने उनकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया बल्कि अपनी स्ले को और ज़्यादा तेज़ भगा दिया।

[39] Sleigh – Sleigh is a wheelless snow vehicle which is used by the people living in icy regions. It just slips on the ice and normally is drawn by two or four powerful dogs or horses. See its picture above.

जब वह जंगल पहुँचा तब उसने अपनी स्ले को रुक जाने को कहा — "पाइक की इच्छा से जो मैं चाहूँ वह तुम करो। मुझे और चालें दिखाओ और मेरे लिये लकड़ी काटो।"

तुरन्त ही कुल्हाड़ी ने लकड़ी काटनी शुरू कर दी। एक एक कर के लकड़ी कट कर इवान की स्ले में इकट्ठी होने लगी और अपने आप ही बँध कर उनके गट्ठर भी बनने लगे।

जब उसकी स्ले भर गयी तब वह उन गट्ठरों के ऊपर चढ़ कर बैठ गया और बोला — "पाइक की इच्छा से जो मैं चाहूँ वह तुम करो। हमारा काम खत्म हो गया अब घर की तरफ चलो।"

उसकी स्ले तुरन्त ही उसके घर की तरफ उड़ चली। घर पहुँच कर वह फिर अपनी अँगीठी पर जा कर लेट गया और सो गया।

कुछ दिन बीत गये, जल्दी से या देर से यह तो पता नहीं, पर एक दिन ज़ार[40] को इस बेवकूफ के बारे में पता चला तो उसने अपना एक नौकर इसको अपने महल में लाने के लिये भेजा।

जब शाही नौकर गाँव में आया तो वह इन भाइयों के मकान में आया और इस बेवकूफ को महल चलने के लिये कहा। पर बेवकूफ इवान ने अँगीठी के ऊपर से सोते हुए नींद में कहा — "चले जाओ यहाँ से और मुझे सोने दो।"

यह सुन कर ज़ार का नौकर बहुत गुस्सा हो गया। उसने उसकी पीठ पर एक डंडा मारा। पर डंडा मार कर तो उसको पछताना पड़ा

[40] Tsar or Tzar, pronounced as Zaar – a title of the emperor of Russia before 1917.

क्योंकि तुरन्त ही इवान बुड़बुड़ाया — "पाइक की इच्छा से जो मैं चाहूँ वह तुम करो। ओ डंडे, इस आदमी को बताओ कि इसने मुझे मार कर क्या हासिल किया है।"

बस फिर क्या था उस शाही नौकर का मोटा लकड़ी का डंडा उसी नौकर को मारने लगा। वह बेचारा नौकर वहाँ से सिवाय महल की तरफ भागने के और कुछ नहीं कर सका।

जब वह ज़ार के पास पहुँचा और उसको सब बताया तो ज़ार को बहुत आश्चर्य हुआ। उसने अपने सलाहकार को बुलाया और उससे कहा — "उस बेवकूफ लड़के को ढूँढो और उसको यहाँ ले कर आओ।"

उस अक्लमन्द सलाहकार ने एक टोकरी में शहद के केक, सूरजमुखी के बीज और बिलबैरीज़[41] भरीं और उस बेवकूफ के गाँव चल दिया।

उसने उस बेवकूफ के भाइयों को ढूँढा और उनसे पूछा कि उनके भाई को सबसे ज़्यादा क्या पसन्द था। भाइयों ने जवाब दिया — "वह तुम्हारे लिये कुछ भी करेगा अगर तुम उसके साथ दया का बर्ताव करो तो। और उसको अगर सबसे ज़्यादा चमकीले लाल रंग के कपड़े देने का वायदा करो तो।"

[41] Bill Berries is the other name of Blueberries. See its picture above

सो उस अक्लमन्द सलाहकार ने उस बेवकूफ को वह खाने की टोकरी दी और कहा — "अगर तुम मेरे साथ महल चलोगे तो ज़ार तुमको बहुत बढ़िया लाल रंग की पोशाक देगा। लाल रंग के जूते देगा और एक लाल रंग का काफ्तान भी देगा।"

बेवकूफ ने इसका जवाब देखने से पहले कुछ सोचा फिर बोला — "ठीक है। तो फिर मैं चलता हूँ। पर जब मैं चाहूँगा मैं तभी आऊँगा और अपने रास्ते से ही आऊँगा।"

यह सुन कर सलाहकार चला गया। उधर इवान भी अपनी अँगीठी पर फिर से सो गया। जब वह जागा तो वह बोला — "पाइक की इच्छा से जो मैं चाहूँ वह तुम करो। ओ अँगीठी, जैसे हम यहाँ बैठे हुए हैं उसी हालत में तुम अपनी पूरी गति के साथ ज़ार के घर चलो।"

बस इवान के मुँह से शब्द निकलने की देर थी कि अँगीठी अपने आप उठी, दरवाजे में से बाहर निकली, बाहर कम्पाउंड में आयी, गाँव की सड़क पर गयी और ज़ार के महल की तरफ चल पड़ी। बेवकूफ इवान उस अँगीठी के ऊपर बैठा हुआ था।

जब अँगीठी महल के पास आयी तो ज़ार ने खिड़की के बाहर झाँका तो उसको अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ कि एक अँगीठी उड़ कर उसके महल की तरफ आ रही थी।

जब इवान महल में आया तो ज़ार महल के दरवाजे पर खड़ा हुआ था।

ज़ार चिल्लाया — "ओ बेवकूफ इधर देखो। मैंने तुम्हारे बारे में कई शिकायतें सुनी हैं कि तुमने बहुत सारे भले लोगों को नीचे गिराया है। अब मैं तुमको जेल में बन्द करने वाला हूँ।"

उसी पल ज़ार की बहुत सुन्दर बेटी लुडमिला[42] महल की खिड़की पर खड़ी हुई थी और नीचे का दृश्य देख रही थी। जब बेवकूफ ने उसको देखा तो वह उससे तुरन्त ही प्यार करने लगा।

वह फुसफुसाया — "पाइक की इच्छा से जो मैं चाहूँ वह तुम करो। मैं चाहता हूँ कि यह सुन्दर लड़की इस बेवकूफ के प्यार में पड़ जाये।"

इसके बाद में उसने यह भी कहा — "ओ ॲगीठी, जल्दी से घर चलो।"

ॲगीठी घूमी और बर्फ के ऊपर फिसलती हुई इवान के गॉव की तरफ चल दी। वह घर पहुँच गयी और अपनी जगह जा कर खड़ी हो गयी। वह बेवकूफ भी घर पहुँच कर सो गया।

इस बीच महल में एक और हल्ला गुल्ला मच गया। राजकुमारी लुडमिला बीमार पड़ गयी। वह अपने प्रेमी के लिये रोती रही और चिल्लाती रही। उसने अपने पिता से कहा कि वह उसको उस बेवकूफ से शादी करने दे।

ज़ार को अपनी बेटी पर बहुत गुस्सा आया कि उसकी बेटी एक बेवकूफ से शादी करना चाहती है पर वह क्या करता सो उसने

[42] Ludmilla – the name of the daughter of Tsar (Tzar)

अपने सलाहकार को फिर से उस बेवकूफ को महल लाने के लिये भेजा।

तो एक बार फिर वह अक्लमन्द सलाहकार उस बेवकूफ के गॉव कई तरह की केक और मीठी शराब ले कर चला। वहॉ पहुँच कर उसने इवान को बहुत अच्छे अच्छे खाने का लालच दे कर ललचाया।

जब इवान पेट भर कर खा चुका तो वह फिर से सो गया। सलाहकार ने उसको अपनी गाड़ी में रखा और महल ले गया।

नाराज ज़ार ने तुरन्त ही एक ऐसे बहुत बड़े बैरल[43] को बनाने का हुक्म दिया जिसमें दो लोग बन्द किये जा सकें और उसको लोहे की पत्तियों से बॉधा जा सके।

जब वह बैरल बन गया तो उसने बेवकूफ इवान और राजकुमारी लुडमिला दोनों बदकिस्मत प्रेमियों को इस बैरल में बन्द कर दिया और समुद्र में फेंक दिया।

जब इवान जागा तो राजकुमारी ने रो कर उससे अपनी बदकिस्मती के बारे में कहा पर इवान को तो कोई डर ही नहीं था। उसने साफ साफ ज़ोर से कहा — "पाइक की इच्छा से जो मैं चाहूँ

[43] A barrel is a hollow cylindrical container traditionally made of wooden staves bound by wooden or metal hoops. It has a standard size – in UK it is 36 Imperial gallons (160 L, 43 US Gallons). Modern barrels are made of US Oak wood and measure 59, 60 and 79 US Gallons. A US Gallon is 3.8 Liter and an Imperial Gallon is 4.5 Liter. See its picture above.

वह तुम करो। हवा तुम बह कर इस बैरल को जमीन पर ले चलो और सूखे रेत पर ले जा कर ठहरा दो।"

अचानक एक बहुत बड़ा तूफान आया, बहुत ऊँची ऊँची लहरें उठीं और वे बैरल को किनारे पर ले जा कर सूखे रेत पर छोड़ आयीं।

जब वे बैरल से बाहर निकले तो राजकुमारी बोली — "यहाँ हम रहेंगे कहाँ? इस ठंडी रेत पर तो हम मर ही जायेंगे।"

इस पर इवान बोला — "तुम चिन्ता न करो राजकुमारी।"

और फिर वह बोला — "पाइक की इच्छा से जो मैं चाहूँ वह तुम करो। यहाँ एक सोने का महल बन जाये।"

तुरन्त ही एक सोने के गुम्बद वाला महल रेत पर आ कर खड़ा हो गया। उसके चारों तरफ हरे हरे पत्तों के बागीचे थे जिनमें खुशबूदार फूल लगे हुए थे और उनमें बहुत सारी चिड़ियें चहचहा रही थीं।

राजकुमारी और वह बेवकूफ उस सोने के महल के सोने के दरवाजे से उस महल के अन्दर गये। वे उसके संगमरमर के बने हुए कमरों मे घूमे और फिर उसमें रखे साटिन के काउचों पर बैठ गये।

राजकुमारी ने अपने प्रेमी को प्यार से देखा तो उसने एक गहरी साँस ली। वह बोली — "ओह इवान, काश तुम इतने सीधे न होते। काश तुम्हारी नाक इतनी लम्बी न होती। काश तुम्हारे बाल इतने लाल न होते।"

इवान को इस बारे में तय करने कोई देर नहीं लगी।

वह बोला — "पाइक की इच्छा से जो मैं चाहूँ वह तुम करो। मैं एक लम्बा सुन्दर आदमी बन जाऊँ जो अपनी प्यारी राजकुमारी को खुश रख सकूँ।"

और वह एक बहुत ही सुन्दर नौजवान बन गया जैसे सुबह का आसमान। एक इतना सुन्दर आदमी जो शायद ही कभी इस धरती पर पैदा हुआ हो। और दोनों उस सोने के महल में रहने लगे।

कुछ समय बाद एक दिन ज़ार शिकार खेलने के लिये बाहर निकला तो यह देख कर हैरान रह गया कि समुद्र के किनारे रेत पर एक सोने का महल खड़ा था जो वहाँ पहले कभी नहीं था।

वह चिल्लाया — "मेरी जमीन पर यह इतना बड़ा महल बनाने की हिम्मत किसने की?"

इवान ज़ार को अपने महल के दरवाजे पर मिला और उसको अपने महल में अन्दर ले गया। वहाँ जा कर उसको एक ऐसी मेज पर बिठाया जिस पर बहुत सारे खाने लगे हुए थे। ज़ार ने वहाँ खाया पिया और उसके खाने पीने की बहुत तारीफ की।

आखिर ज़ार ने इवान से पूछा — "पर तुम कौन से इतने बड़े ज़ार या ड्यूक हो जिसने इतना बड़ा महल यहाँ बनवा लिया?"

इवान बोला — "क्या आपको उस बेवकूफ की याद है जो एक अँगीठी के ऊपर सवार हो कर आपके घर आया था? क्या आपको उस बेवकूफ की याद है जिसको आपने अपनी बेटी

राजकुमारी लुडमिला के साथ बैरल में बन्द कर के समुद्र में फिंकवा दिया था? मैं वही बेवकूफ इवान हूँ।

अगर मैं चाहूँ तो अभी इसी समय आपको और आपके पूरे राज्य को इस समुद्र की तली में पहुँचा सकता हूँ।"

ज़ार ने डर के मारे अपने हाथ ऊपर कर दिये और उससे माफी माँगी। वह बोला — "तुम मेरी बेटी को मेरे आशीर्वाद के साथ ले सकते हो। और साथ ही मेरा आधा राज्य भी। पर तुम मेरी ज़िन्दगी बख्श दो। मैं तुमसे अपनी ज़िन्दगी की भीख माँगता हूँ।"

इवान ने ज़ार को माफ कर दिया और राजकुमारी से शादी कर ली। अपनी इस शादी की उसने इतनी बड़ी दावत की जितनी कि रूस में शायद ही कभी हुई हो। इसमें उसने बहुत सारे लोगों को बुलाया था।

जब पुराना ज़ार मर गया तो इवान रूस का इतना अच्छा राजा हो गया जितना कि रूस ने पहले कभी शायद ही देखा हो।

13 गुलाम्बरा और सुलाम्बरा[44]

मछलियों की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के जियोर्जिया देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार की बात है कि या तो था और या फिर नहीं था एक अन्धा राजा राज्य करता था। राज्य के सारे डाक्टरों ने अपनी पूरी कोशिश कर ली थी पर वे राजा की ऑखों की रोशनी नहीं ला सके थे।

आखिर एक डाक्टर बोला — "फलॉ फलॉ सागर में एक खून के रंग जैसी लाल मछली है। अगर उसको पकड़ लिया जाये और उसको मार कर उसका खून आपकी ऑखों पर छिड़का जाये तो वह शायद आपका कुछ भला कर सके।

वह आपकी ऑखों की रोशनी वापस ला सके। अगर उससे ऐसा नहीं होता तो फिर और कोई इलाज नजर नहीं आता।"

यह सुन कर राजा ने अपने राज्य के सारे मछियारों को बुलाया और उनको हुक्म दिया कि वे वहॉ भी जायें जहॉ उनको जाना है और वहॉ भी जायें जहॉ उनको नहीं जाना है और ऐसी मछली ढूँढें और उसे पकड़ कर यहॉ लायें। मैं उनको बहुत सारा इनाम दूँगा।

यह सुन कर सब मछियारे वैसी मछली के ढूँढने चले गये।

---

[44] Gulambara and Sulambara – a folktale from Georgia, Europe.
Taken from "Georgian Folk-Tales" by Marjorie Wardrop. Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com in e-book form free of charge.

कुछ समय गुजर गया। एक बूढ़े मछियारे ने वैसी ही लाल मछली पकड़ी और उसको राजा के पास ले कर आया। राजा उस समय सो रहा था। कोई उसको जगाने की हिम्मत नहीं कर सका। सो वह मछली पानी से भरे एक बर्तन में रख दी गयी।

उसी समय राजा का बेटा अपनी पढ़ाई से वापस लौटा तो उसने पानी से भरे बर्तन में एक लाल मछली तैरती देखी। उसको वह बहुत अच्छी लगी।

उसने उसको अपने हाथ में उठा लिया और प्यार से उसको सहलाया और अपने नौकरों से पूछा — "तुम्हें पानी के बर्तन में रखी हुई इस सुन्दर सी मछली से क्या चाहिये।"

उन्होंने जवाब दिया — "यह मछली आपके पिता के लिये बहुत अच्छी है। इसको मारा जायेगा और इसका खून आपके पिता की ऑखों पर छिड़का जायेगा। और इससे उनकी ऑखों की रोशनी वापस आ जायेगी।"

राजकुमार ने पूछा — "पर इसको मारना क्या पाप नहीं है।" और यह कह कर राजकुमार ने वह मछली पानी में से निकाली और मैदान में बहती एक नदी की तरफ ले गया और उसमें डाल दी। इस तरह से उसने उसको आजाद कर दिया।

कुछ देर बाद राजा जागा तो उसके वजीर ने कहा — "योर मैजेस्टी, एक बूढ़ा मछियारा आपको लिये खून जैसी लाल मछली ले कर आया था पर आपके बेटे ने जो अभी अभी पढ़ कर आया था

उसको वहाँ से आजाद कर दिया। उन्होंने उसको नदी में फेंक दिया।"

राजा यह सुन कर बहुत गुस्सा हुआ और उसने अपने बेटे को उसके घर से बुला भेजा और कहा — "तू जा। मैं अपने आप ठीक हो जाऊँगा। तू तो राज्य में याद भी नहीं किया जायेगा। मैं अपनी आँखों से तुझे देख भी नहीं सकूँगा। मुझे तो अब तेरी यह बुरी आवाज भी नहीं सुननी। तू जा।"

राजकुमार यह सब सुन कर बहुत दुखी हुआ। वह उठा और उठ कर वहाँ से चला गया। वह चलता गया चलता गया। उसको यही नहीं पता था कि वह कहाँ जा रहा है।

रास्ते में एक नदी पड़ी। वह बहुत थक गया था सो वह उस नदी के किनारे सुस्ताने के लिये बैठ गया। लो कुछ देर में उसी की उम्र का एक लड़का नदी में से बाहर आया।

वह राजकुमार के पास आया उसने उसको नमस्ते की और पूछा — "तुम कहाँ से आ रहे हो और तुम परेशान क्यों हो।"

राजकुमार ने उसको अपनी सारी कहानी बता दी। उसके नये साथी ने कहा — "मैं भी अपने घर से बहुत परेशान हूँ सो चलो हम दोनों भाई बन जाते हैं और दोनों एक साथ रहते हैं।" राजकुमार राजी हो गया और वे दोनों एक तरफ चल दिये।

वे लोग कुछ दूर ही चले थे कि एक शहर आ गया। वे वहाँ रहने लगे। अगले दिन राजकुमार के नये भाई ने राजकुमार से कहा

— "तुम घर पर ही रहो। घर के बाहर मत जाना कहीं ऐसा न हो कि वे तुम्हें खा जायें क्योंकि यहाँ का यही रिवाज है।"

राजकुमार ने उससे वायदा किया कि वह घर से बाहर बहीं निकलेगा। और वह सारे दिन घर में ही बैठा रहा। दूसरा लड़का सारे दिन शहर में रहा। शाम को वह घर लौटा तो उसके हाथ में एक चादर भर कर खाने का सामान था।

इस तरह से रहते रहते कुछ दिन बीत गये। राजकुमार सारे दिन घर में रहता और उसका मुँहबोला भाई बाहर से खाने पीने का सामान लाता।

आखिर राजकुमार ने एक दिन सोचा "यह तो बड़े शर्म की बात है कि मेरा भाई तो रोज बाहर खाना पीना लेने जाता है और मैं कुछ नहीं करता। मैं कुछ क्यों नहीं करता। मैं इतना आलसी क्यों हूँ। मैं भी बाहर जाऊँगा और कुछ करूँगा।"

और फिर ऐसा ही हुआ। एक दिन राजकुमार शहर में चला गया। वह इधर से उधर घूमता रहा। घूमते घूमते एक जगह उसने देखा कि उसका भाई जमीन पर पालथी मारे बैठा था।

उसके पैरों के पास एक रूमाल बिछा हुआ था। उसके हाथों में एक तार वाला बाजा था जो वह बजा रहा था और उसके साथ साथ अपनी मीठी आवाज में कुछ गा भी रहा था। जो कोई उधर से गुजरता वह उसके रूमाल में कुछ पैसे डालता जाता।

राजकुमार सुनता रहा सुनता रहा फिर बोला — "नहीं यह नहीं होना चाहिये। इस बात का मुझसे कोई मतलब नहीं है।" कह कर वह वहाँ से पलटा और चल दिया।

पास में ही उसको एक मीनार दिखायी दी। उसके बाहर की तरफ एक दीवार थी और उसकी चोटी पर आदमियों के सिर कतारों में लगे हुए थे। उनमें से कुछ चेहरों पर झुर्रियाँ पड़ी हुई थीं और कुछ पुराने थे जिनमें से सड़ने की बू आ रही थी और कुछ वहाँ अभी टाँगे गये थे।

वह उनको देखता रहा देखता रहा। जब उसकी कुछ समझ में नहीं आया तो उसने एक आदमी से पूछा — "यह किसकी मीनार है। और ये आदमियों के सिर इस तरह से कतार में क्यों लटके हुए हैं।"

आदमी ने जवाब दिया — "इस मीनार में एक लड़की रहती है। वह इतनी सुन्दर है जैसे सूरज। किसी भी राजा का बेटा उसका हाथ माँग सकता है।

पर वह उससे एक सवाल पूछती है और अगर वह उसका जवाब नहीं दे पाता तो वह उसका सिर कटवा देती है। और अगर वह उसके सवाल का जवाब दे दे तो वह उससे शादी कर सकता है। अभी तक कोई उसके सवाल का जवाब नहीं दे पाया है सो ये सब उन्हीं आदमियों के सिर हैं।"

राजकुमार ने बहुत सोचा बहुत सोचा और फिर यह तय किया "मैं उसके पास जरूर जाऊँगा और मैं उस लड़की का हाथ शादी के लिये माँगूँगा। इससे मैं यह जान जाऊँगा कि मेरी किस्मत में क्या है।

हालाँकि जो होना है वह तो हो कर ही रहेगा। पर वह मुझसे क्या पूछ सकती है यह तो मैं नहीं जानता।" सो वह उठा और उधर ही चल दिया।

वह मीनार में गया उस सूरज जैसी राजकुमारी से मिला और उससे उसका हाथ माँगा।

वह बोली — "यह तो ठीक है कि तुम मुझसे शादी करना चाहते हो पर पहले मुझे तुमसे एक सवाल पूछना है। अगर तुम मेरे सवाल का जवाब दे दोगे तो मैं तुम्हारी हूँ और अगर नहीं दे पाये तो मै तुम्हारा सिर कटवा दूँगी।"

राजकुमार बोला — "ऐसा ही सही।"

राजकुमारी बोली — "अच्छा तो यह बताओ कि गुलाम्बरा और सुलाम्बरा कौन हैं।"

राजा के बेटे ने अपने मन में सोचा "यह तो में जानता हूँ कि गुलाम्बरा और सुलाम्बरा फूलों के नाम हैं पर मैंने अपनी ज़िन्दगी में यह कभी नहीं सुना कि ये नाम किसी आदमी के भी हैं। अब मैं क्या बताऊँ कि ये कौन हैं।"

उसने राजकुमारी से तीन दिनों की मोहलत माँगी और घर चला गया। घर जा कर उसने अपने भाई को बताया कि उस दिन क्या हुआ था। फिर वह बोला — "अगर अब तुम मेरी सहायता नहीं कर सकते तो तीन दिन बाद मेरा यह सिर कट जायेगा।"

उसके भाई ने उसको डाँटा — "क्या मैंने तुमसे यह नहीं कहा था कि तुम घर में अन्दर ही रहो। यह बहुत ही बुरा शहर है। और तुम माने नहीं।"

लेकिन फिर उसने उसको तसल्ली देते हुए कहा — "ठीक है जाओ एक पैनी का खुशबूदार गोंद और एक मोमबत्ती खरीद लाओ। मेरी एक दादी हैं। मै तुमको उनके पास ले जाऊँगा और इस मामले में वह तुम्हारी सहायता करेंगी।

पर जब मेरी दादी हमको देख रहीं हो तो उस समय तुम वह गोंद और मोमबत्ती उनको दे देना नहीं तो वह तुमको खा जायेंगी।"

सो राजकुमार ने एक पैनी का खुशबूदार गोंद और एक मोमबत्ती खरीदी और दोनों उस लड़के की दादी के पास चल दिये। दादी दरवाजे पर ही खड़ी हुई थी। राजकुमार ने तुरन्त ही वह गोंद और मोमबत्ती दादी को दे दी।

राजकुमार के भाई की दादी ने पूछा — "यह क्या है और तुम्हारे साथ क्या मामला है।"

राजकुमार का भाई आगे बढ़ा और उसने उसको सब कुछ विस्तार से बताया और कहा — "यह मेरा बहुत अच्छा भाई है और आपको इसकी सहायता जरूर करनी चाहिये।"

बुढ़िया ने राजकुमार से कहा — "ठीक है। मै तुम्हारी सहायता जरूर करूँगी। तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ।"

राजकुमार उसकी पीठ पर बैठ गया और वह बुढ़िया ऊँची और बहुत ऊँची उड़ चली। पर पलक झपकते ही वह नीचे गहराइयों उतर गयी।

वहाँ वह उसको एक शहर में ले गयी। वहाँ वे लोग बाजार में घुसने ही वाले थे कि वहाँ जा कर बुढ़िया ने एक दूकानदार की तरफ इशारा करते हुए उससे कहा — "तुम इस दूकानदार को देख रहे हो न। जाओ और इस दूकानदार के यहाँ जा कर काम करो।

पर जब शाम को जब यह दूकानदार अपना काम खत्म कर के अपने घर जाये तो उससे कहना कि वह तुमको भी अपने साथ ले जाये। वह तुमको अपनी दूकान में किसी भी हालत में न छोड़े।

जब तुम उसके साथ जाओगे तब तुम गुलाम्बरा और सुलाम्बरा की कहानी जान पाओगे। फिर जब तुमको मेरी जरूरत हो बस एक सीटी बजा देना और मैं हाजिर हो जाऊँगी।"

राजकुमार ने ठीक वैसा ही किया जैसा कि उस बुढ़िया ने उससे करने के लिये कहा था। वह उस कसाई की दूकान पर गया और उसके साथ काम करने लगा।

शाम को जब कसाई घर जाने लगा तो वह बोला — "मैं इस जगह मैं एक अजनबी हूँ मेहरबानी कर के मुझे यहाँ अकेला दूकान में मत छोड़ें मुझे डर लगता है। मुझे आप अपने साथ अपने घर ले चलिये।"

कसाई ने बहुत मना किया कि वह उसको अपने साथ अपने घर नहीं ले जा सकता पर राजकुमार तब तक उससे जिद करता रहा जब तक वह उसको अपने घर ले जानो के लिये राजी नहीं हो गया। सो मजबूरन कसाई उसको अपने साथ ले कर घर चला गया।

वे एक दीवार के पास आये, वहाँ एक दरवाजा खोला, वे अन्दर गये और दरवाजा बन्द हो गया। उसके बाद एक और दीवार थी। वे उसमें से भी हो कर गये और वह भी उनके अन्दर पहुँचते ही बन्द हो गयी। इस तरह से वे नौ दीवारों से हो कर गुजरे। उसके बाद ही वे उस कसाई के घर में पहुँचे।

घर में पहुँच कर कसाई ने एक आलमारी खोली उसमें से एक स्त्री का सिर निकाला और लोहे का एक कोड़ा निकाला। उसने उस सड़े हुए सिर को नीचे रखा और एक कोड़ा मारा। फिर वह उसको तब तक कोड़े मारता रहा जब तक कि वह सिर बिल्कुल ही खत्म नहीं हो गया।

राजकुमार ने जब यह देखा तो वह तो बहुत ही आश्चर्यचकित रह गया। वह उस कसाई से बिना पूछे न रह सका — "अगर आप

बुरा न माने तो क्या में आपसे पूछ सकता हूँ कि आप यह क्या कर रहे थे। यह सिर तो वैसे ही सड़ा हुआ था फिर आप इसे क्यों मार रहे थे। और यह सिर किसका है।"

कसाई बोला — "मैं इस बात को किसी को नहीं बताता यह मेरा अपना भेद है। पर जब भी मैं यह बात जिस किसी को भी बताऊँगा उसका सिर धड़ से अलग हो जायेगा।"

राजकुमार बोला — "फिर भी मैं यह बात जानना चाहूँगा।"

कसाई उठा उसने एक तलवार उठायी अपने आपको तैयार किया और राजकुमार से बोला — "मेरी एक पत्नी थी जो इतनी सुन्दर थी कि सूरज भी उसके मुकाबले में कुछ नहीं था। उसका नाम गुलाम्बरा था। मैं इसी लिये उसको इन नौ तालों के अन्दर रखता था।

मैं उसको इतनी सँभाल कर रखता था कि स्वर्ग की हवा भी उसको नहीं छू सकती थी। वह जो कुछ भी चाहती थी मैं उसको वह तुरन्त ही दे दिया करता था। मैं उसे अपने प्यार की हद तक प्यार करता था और उस पर विश्वास भी करता था। एक दिन उसने मुझसे कहा भी कि वह भी दुनियाँ में केवल मुझे ही प्यार करती थी।

उन दिनों मेरा एक नौकर था जिसका नाम सुलाम्बरा था। मेरी पत्नी ने मुझे धोखा दिया वह मेरे उस नौकर से प्यार करने लगी। एक बार मैंने उन दोनों को एक साथ देख लिया तो उनको पकड़

लिया। मैंने उन दोनों को दो आलमारियों में अलग अलग बन्द कर दिया।

जब मैं अपना काम खत्म कर के घर आता तो उनको एक एक कर के उन आलमारियों में से बाहर निकालता और खूब मारता। मैंने कल उन दोनों को इतना मारा इतना मारा कि सुलाम्बरा तो कल ही मर गया पर गुलाम्बरा का सिर अभी भी बच गया। और गुलाम्बरा का सिर आज तुम्हारे सामने ही खत्म हो गया।"

कहानी खत्म हो गयी थी सो कसाई ने अपनी तलवार सँभाली और बोला — "अब मैं अपनी धमकी पूरी करने जा रहा हूँ। सो अब तुम यहाँ आओ और मैं अब तुम्हारा सिर धड़ से अलग करता हूँ।"

राजकुमार उससे दया की भीख माँगता हुआ बोला — "मुझे थोड़ा सा समय दो। मैं दरवाजे की तरफ जा कर ज़रा भगवान की प्रार्थना कर लूँ।"

कसाई ने सोचा "इसमें तो मेरा कोई नुकसान नहीं है कि यह मरने से पहले दरवाजे के पास जा कर भगवान की प्रार्थना कर ले क्योंकि यह तो पक्की बात है कि यह नौ दरवाजे तो किसी हालत में खोल ही नहीं सकता।"

राजकुमार दरवाजे के पास गया और जा कर सीटी बजायी। तुरन्त ही वह बुढ़िया वहाँ आ गयी। राजकुमार उसकी पीठ पर बैठा और वह बुढ़िया उसको ले कर उड़ चली।

राजकुमार सीधे राजकुमारी के महल पहुँचा और उस सूरज जैसी राजकुमारी को गुलाम्बरा और सुलाम्बरा की कहानी सुनायी।

राजकुमारी तो यह सुन कर आश्चर्यचकित रह गयी। अब वह अपनी शर्त के मुताबिक उससे शादी करने को तैयार थी। सो उनकी शादी हो गयी। राजकुमारी ने अपना सारा सामान उठाया और राजकुमार के साथ उसके पिता के राज्य जाने के लिये तैयार हो गयी।

जब वे नदी के किनारे आये तब उसका वह मुँहबोला भाई आया और उससे बोला — "तुम्हारी मुसीबत में मैंने तुमसे अपनी दोस्ती निभायी। और अब जब कि तुम खुश हो तो क्या हमारी दोस्ती टूट जायेगी।

जे कुछ तुम्हें मिला वह तुम्हें मेरी दोस्ती की वजह से मिला अब तुम्हें उसे मुझसे बॉटना चाहिये।"

राजकुमार ने सब कुछ आधा आधा बॉट दिया फिर भी उसका मुँहबोला भाई सन्तुष्ट नहीं था। वह बोला — "मेरे साथ यह सब बॉटना तो ठीक है पर तुम्हारे पास तो राजकुमारी भी है। उसका क्या होगा।"

राजकुमार उठा और उसने अपने हिस्से का सामान भी उसको दे दिया। पर उसका मुँहबोला भाई उसको लेने के लिये तैयार नहीं था। वह उससे बोला — "अगर तुम्हें मुझसे अपनी दोस्ती कायम

रखनी है तो तुम्हें मुझसे यह राजकुमारी भी बॉटनी पड़ेगी जो तुम्हारी सबसे ज़्यादा प्यारी चीज़ है।"

कहते हुए उसने राजकुमारी का हाथ पकड़ा और उसको एक पेड़ से बॉध दिया। फिर उसने अपनी तलवार निकाली और उसको मारने ही वाला था कि डरी हुई राजकुमारी के मुँह से एक हरे रंग की धारा निकल पड़ी। भाई ने फिर से अपनी तलवार उठायी पर फिर से वही हुआ। उसने तीसरी बार तलवार उठायी पर फिर भी वही हुआ।

यह देख कर वह मुँहबोला भाई राजकुमारी के पास आया उसे खोला और उसे राजकुमार को सौंप दिया और राजकुमार से बोला — "हालॉकि राजकुमारी बहुत सुन्दर थी फिर भी वह जहरीली थी और जल्दी या देर से तुम्हें मार डालती। अब उसका सारा जहर निकल गया है सो अब तुमको उससे डरने की बिल्कुल जरूरत नहीं है।

अब तुम जा सकते हो भगवान तुम्हारी रक्षा करे। जहॉ तक इन सब चीज़ों का सवाल है ये सब तुम्हारी हैं। मुझे ये सब नहीं चाहिये। भगवान तुम्हें शान्तिपूर्वक रखे।"

फिर उसने अपनी जेब से एक रूमाल निकाला और उसे राजकुमार को देते हुए कहा — "जब तुम घर पहुँच जाओ तो इस रूमाल से अपने पिता की ऑखें पोंछ देना वह देखने लग जायेंगे।

मैं वही मछली हूँ जो तुम्हारे महल में पानी के बर्तन में पड़ी हुई थी और जिसे तुमने आजाद किया था। इससे तुम यह जान लो कि किसी के ऊपर की गयी दया कभी खाली नहीं जाती।"

इतना कहने के बाद राजकुमार का मुँहबोला भाई वहीं गायब हो गया। राजकुमार एक बार फिर आश्चर्य में पड़ गया। इससे पहले कि वह अपने उस भाई का धन्यवाद करता वह तो गायब ही हो चुका था।

आखिर जब वह अपने आपे में आया तो वह अपनी पत्नी के साथ अपने पिता के पास चला गया। उसने अपने भाई का दिया हुआ रूमाल अपने पिता की ऑखों पर रखा तो तुरन्त ही राजा की ऑखों की रोशनी वापस आ गयी।

जब उसने अपने बेटे और बहू को देखा तो वह तो इतना खुश हो गया कि उसकी ऑखों में तो ऑसू ही आ गये। फिर उसके बेटे ने उसको अपनी वह सारी कहानी सुनायी जो कुछ भी उसके साथ घटा था।

14 मछली हँसी क्यों[45]

एक बार की बात है कि एक मछियारिन अपनी मछलियाँ ले कर राजा के महल के पास से गुजर रही थी कि रानी ने अपने महल की एक खिड़की से बाहर झाँका और उसको अपने पास बुलाया और उसके पास जो कुछ था वह उसे दिखाने के लिये कहा।

उसी पल एक बहुत बड़ी मछली उसकी टोकरी की तली में से बाहर कूद गयी। रानी ने पूछा कि यह नर मछली है या मादा मछली। मुझे तो मादा मछली चाहिये।

यह सुन कर मछली बहुत ज़ोर से हँस पड़ी। मछियारिन बोली "यह तो नर मछली है।" और उसे बेचने के लिये महल का चक्कर काटने चल दी।

रानी गुस्सा हो कर अपने कमरे में लौट आयी। जब राजा शाम को अपनी रानी से मिलने आया तो उसने देखा कि उसकी रानी कुछ परेशान है। राजा ने पूछा — "क्या तुम परेशान हो।"

रानी बोली — "नहीं पर मैं एक मछली के व्यवहार से कुछ नाराज हूँ। आज एक स्त्री एक मछली ले कर मेरे पास आयी थी

[45] Why the Fish Laughed – a folktale of Kashmir, India. Taken from the book "Folk-Tales of Kashmir", by James Hinton Knowles. 2nd edition. Its Hindi translation is available from hindifolktales@gmail.com in e-book form free of charge.

और जब मैंने उससे पूछा कि यह मछली नर है या मादा तो वह मछली बड़े बुरे तरीके से हॅस पड़ी।"

राजा हॅस कर बोला — "तुमने क्या कहा कि मछली हॅस पड़ी? यह तो नामुमकिन है। तुमने जरूर कोई सपना देखा होगा।"

रानी बोली — "मैं कोई बेवकूफ नहीं हूॅ। मैं वही बोल रही हूॅ जो मैंने अपनी ऑखों से देखा और अपने कानों से सुना।"

राजा बोला — "बड़ी अजीब सी बात है। चलो ऐसा ही सही कि मछली हॅसी। मैं मालूम करूॅगा कि क्या मामला था।"

अगले दिन राजा ने अपने वजीर को बुला कर उससे वही कहा जो रानी ने उससे कहा था और उससे इस मामले की जॉच करने के लिये कहा कि मछली क्यों हॅसी। और कहा कि अगर छह महीनों के अन्दर अन्दर उसने इस बात का जवाब ला कर नहीं दिया तो वह उसको मार देगा।

वजीर ने राजा से वायदा किया कि वह अपनी पूरी कोशिश करेगा हालॉकि उसको लग रहा था कि वह यह बात कभी मालूम नहीं कर पायेगा और उसकी मौत अब उसके सामने खड़ी थी।

पूरे पॉच महीने तक वह मछली के हॅसने की वजह ढूॅढता ढूॅढता थक गया। उसने हर जगह ढूॅढा हर किसी से पूछा – अक्लमन्द से और विद्वान से जादू जानने वालों से और बहुत तरीके की चालें खेलने वालों से। कोई भी तो उसको मछली के हॅसने की वजह नहीं बता सका। सो वह टूटा दिल ले कर अपने घर लौट आया।

अब उसने अपनी मौत की तैयारी करनी शुरू कर दी थी क्योंकि उसको राजा के बारे में बहुत अच्छा अनुभव था कि वह अपनी धमकी से वापस नहीं फिरेंगे। और दूसरी तैयारियों के साथ साथ उसने अपने बेटे को भी तब तक घूमने फिरने भेज दिया था जब तक राजा का गुस्सा थोड़ा कम होता है।

वजीर का नौजवान बेटा सुन्दर भी था और अक्लमन्द भी। वह अपने घर से चल दिया जहाँ भी उसको उसकी किस्मत ले जाये। उसको गये हुए कुछ ही दिन हुए थे कि उसको एक बूढ़ा किसान मिल गया जो किसी गाँव को जा रहा था।

उसको वह बूढ़ा अच्छा लगा तो उसने यह बताते हुए कि वह भी उसी जगह जा रहा था उससे पूछा कि क्या वह उसके साथ जा सकता था। बूढ़ा राजी हो गया और वे दोनों एक साथ चलने लगे। दिन गर्म था और रास्ता लम्बा और थका देने वाला।

नौजवान बोला — "क्या वह आसान नहीं होता अगर हम एक दूसरे को बारी बारी से उठा कर ले चलते?"

बूढ़े ने सोचा यह नौजवान कितना बेवकूफ है। हम लोग एक दूसरे को उठा कर कैसे ले जा सकते हैं। सो उसने उसकी बात को टाल दिया।

इस समय वे लोग मक्का के एक खेत से हो कर गुजर रहे थे जो कटने के लिये तैयार खड़ा था। जब वह हवा से हिलता था तो ऐसा लगता था जैसे सोने का समुद्र हो।

नौजवान ने पूछा — "यह खा लिया गया है या नहीं।"

बूढ़े की यह बात बिल्कुल समझ में नहीं आयी तो वह बोला "पता नहीं।"

कुछ देर बाद ये दोनों यात्री एक बड़े से गॉव में आ गये जहॉ आ कर नौजवान ने अपने बूढ़े साथी को एक चाकू दिया और कहा — "दोस्त यह लो और इससे दो घोड़े खरीद लो। पर ध्यान रहे कि तुम इसे वापस ले आना क्योंकि यह बहुत कीमती है।"

बूढ़े को उसकी यह बात सुन कर हॅसी भी आयी और गुस्सा भी आया। उसने उसका चाकू कुछ ऐसे बड़बड़ाते हुए उसी को वापस कर दिया जैसे कि उसका दोस्त या तो कुछ पागल था या फिर बेवकूफ था।

नौजवान ने उसके जवाब की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया और जब तक चुप ही रहा जब तक वे लोग शहर नहीं पहुॅच गये। शहर के कुछ दूर बाहर ही उस बूढ़े किसान का घर था। वे बाजार से हो कर मस्जिद गये पर किसी ने भी उनको अन्दर आने और सुस्ताने के लिये नहीं कहा।

नौजवान के मुॅह से निकला — "अरे यह तो एक बहुत बड़ी कब्रगाह लगती है।"

बूढ़े किसान ने सोचा पता नहीं इस नौजवान के यह कहने का क्या मतलब है जो इतने बड़े शहर को यह कब्रगाह कह रहा है। यहॉ से आगे चलने के बाद वे एक कब्रगाह से गुजरे जहॉ कुछ लोग

कब्रों पर प्रार्थना कर रहे थे और अपने मरे हुए प्यारों के नाम पर आने जाने वालों को रोटी और कुलचे बाँट रहे थे। उन्होंने इन दोनों यात्रियों को भी अपने पास बुलाया और इनको भी खाने के लिये दिया जितना भी इनको चाहिये था।

नौजवान बोला — "ओह कितना सुन्दर शहर है।"

यह सुन कर तो बूढ़े को यकीन हो गया कि यह नौजवान बिल्कुल ही पागल है। पता नहीं आगे यह क्या कहेगा – पानी को जमीन और जमीन को पानी। और जब रोशनी होगी तो यह अँधेरे की बात करेगा और जब अँधेरा होगा तब उसे रोशनी कहेगा। पर उसने अपने ये विचार अपने तक ही रखे।

चलते चलते वे एक नदी से हो कर गुजरे जो कब्रगाह के बराबर से गुजरती थी। पानी थोड़ा गहरा था सो बूढ़े किसान ने अपने जूते उतार दिये और अपना पाजामा ऊपर चढ़ा लिया पर नौजवान ने वह नदी जूते और पाजामा पहने ही पार की।

यह देख कर बूढ़े ने अपने मन में कहा "मैंने आज तक ऐसा बेवकूफ नहीं देखा जो ऐसी बेवकूफी की बातें करता है और ऐसी बेवकूफी के काम करता है।"

फिर भी उसको यह आदमी अच्छा लगा। उसने सोचा कि यह आदमी उसकी पत्नी और बेटी को हँसायेगा सो उसने उसको अपने घर बुलाया और उसको तब तक रहने के लिये कहा जब तक वह उस गाँव में रहे।

नौजवान बोला — "आपका बहुत बहुत धन्यवाद पर अगर आपको बुरा न लगे तो पहले मैं आपसे एक बात पूछ लूँ। क्या आपकी छत की शहतीर[46] काफी मजबूत है।"

बूढ़े किसान ने उसकी इस बात का कोई जवाब नहीं दिया और हँसते हुए अपने घर में घुसा। घर वालों के आदाब का जवाब देते हुए वह बोला — "बाहर एक आदमी खड़ा है। वह मेरे साथ बहुत दूर से आ रहा है। मैं उसको तब तक यहाँ ठहराने के लिये ले आया हूँ जब तक वह इस गाँव में रहता है क्योंकि उसको इसी गाँव में ठहरना है।

पर यह आदमी इतना बेवकूफ है कि मैं तो इसकी एक भी बात का कोई मतलब नहीं निकाल सका। अभी यह यह जानना चाहता है कि मेरे घर की शहतीर मजबूत है कि नहीं। अरे उसको इस बात से क्या मतलब कि मेरे घर की शहतीर मजबूत है या नहीं। मुझे तो यह आदमी कुछ पागल सा लगता है।"

और यह कह कर वह अपने आप ही बड़े ज़ोर से हँस पड़ा। किसान की बेटी बहुत अक्लमन्द थी बोली — "पिता जी जो भी यह आदमी है वह बेवकूफ नहीं है जैसा कि आप सोचते हैं। वह केवल

[46] Big wooden logs on which the roof of the house is rested. See their picture above.

यह जानना चाहता है कि आप उसको अपने घर में रखने का खर्चा उठा सकते हैं या नहीं।"

किसान बोला — "क्यों नहीं क्यों नहीं। अब मैं समझा। तो शायद तुम मेरी दूसरी पहेलियों को भी सुलझाने में मेरी सहायता कर सको। जब हम साथ साथ आ रहे थे तो इसने मुझसे कहा "या तो मैं उसको ले चलूँ या वह मुझे ले चले" क्योंकि उसको लगा कि उस तरीके से शायद हम लोग ज़्यादा खुश खुश आयेंगे।

लड़की बोली — "यकीनन पिता जी। इससे उसका मतलब था कि या तो वह आपको कहानी सुनाता जाये या फिर आप उसको कहानी सुनाते जायें इससे रास्ता आसानी से कट जायेगा।"

किसान बोला — "अच्छा। जब हम मक्का के खेत में से गुजर रहे थे तो इसने मुझसे पूछा "क्या यह खेत खाया हुआ है।" इसका क्या मतलब हुआ।"

लड़की बोली — "और इसका मतलब आपको पता नहीं था? वह केवल यह जानना चाहता था कि जिस आदमी का यह खेत था उसके ऊपर कोई कर्जा था या नहीं। क्योंकि अगर खेत के मालिक के ऊपर कोई कर्जा था तो उस खेत की पैदावार उसके लिये वैसी ही थी जैसी कि खायी हुई होती थी क्योंकि वह पैदावार तो उसका कर्जा निबटाने में ही चली जायेगी।"

किसान फिर बोला — "ओह हॉ। यह तो ठीक है। फिर हम लोग एक गॉव में घुसे तो इसने मुझे एक चाकू दे कर कहा कि मैं

उससे दो घोड़े खरीद लूँ और वह चाकू वापस ला कर उसको दे दूँ क्योंकि इसका वह चाकू बड़ा कीमती है।"

लड़की बोली — "क्या दो मोटे मोटे डंडे दो घोड़ों के बराबर नहीं हैं पिता जी जो किसी यात्री को सड़क पर चलने में सहायता कर सकें। इस बात से उसका मतलब यह था कि आप दो मोटे मोटे डंडे काट कर ले आयें और उसका चाकू भी वापस ले आयें।"

किसान बोला — "ओह अब मैं समझा। फिर हम लोग एक शहर से गुजर रहे थे तो वहाँ हमको कोई दिखायी नहीं दिया जिसको हम जानते और किसी ने भी हमको कुछ खाने को भी नहीं दिया।

फिर हम एक कब्रगाह के पास से गुजरे तो वहाँ कुछ लोगों ने हमें अपने पास बुलाया और रोटी और कुलचा खाने के लिये दिया। इसलिये मेरे साथी ने शहर को कब्रगाह और कब्रगाह को शहर कहा।"

लड़की बोली — "यह बात भी बिकुल्ल साफ है पिता जी। अगर कोई यह सोचता है कि शहर में सब कुछ मिल जायेगा पर वहाँ ऐसे लोग बसते हैं जो मेहमाननवाजी जानते ही नहीं तो वहाँ के लोग तो मरे लोगों से भी बदतर हुए न। शहर जो लोगों से भरा हुआ था ऐसा था वह आपके लिये ऐसा था जैसे उसमें सब मरे हुए लोग रहते हों।

और वह कब्रगाह जहाँ कोई यह सोचता है कि वहाँ तो कोई ज़िन्दा आदमी उसकी मेहमाननवाजी करने के लिये होगा ही नहीं वहाँ उसको भर पेट खाना मिल जाता है तो वह शहर जैसा हो गया।"

किसान ने आश्चर्य प्रगट करते हुए कहा — "तुमने ठीक कहा बेटी। फिर चलते चलते हम एक नदी से गुजरे तो इसने बिना जूते और पाजामा उतारे ही उसे पार कर लिया।"

लड़की बोली — "पिता जी मुझे उसकी अक्लमन्दी अच्छी लगी। मैंने अक्सर सोचा है कि वे लोग कितने बेवकूफ हैं जो इतनी तेज़ बहती नदी को जिसमे नुकीले पत्थर पड़े रहते हैं जूते उतार कर पार करते हैं।

अगर उनका पैर ज़रा सा भी इधर उधर पड़ जाये और वे गिर जायें तो वे तो सिर से ले कर पैर तक भीग जायेंगे। आपका यह दोस्त तो बहुत ही अक्लमन्द है। पिता जी मैं इस आदमी से मिलना चाहती हूँ और इससे बात करना चाहती हूँ।"

किसान बोला — "ठीक है। मैं उसको ढूँढता हूँ और बुला कर लाता हूँ।"

लड़की बोली — "आप उनसे कहियेगा पिता जी कि हमारे मकान की शहतीरें बहुत मजबूत हैं तो वह आपके साथ आ जायेंगे। मैं उनके लिये आपके हाथों एक भेंट भी भेजूँगी ताकि वह समझ जायें कि हम उनकी मेहमाननवाजी कर सकते हैं।"

सो उसने एक नौकर को बुलाया और उसको एक बर्तन भर कर ग्यव[47] दिया, बारह रोटियाँ दीं और एक बोतल दूध दे कर उसको उस आदमी के पास यह सन्देश दे कर भेजा "ओ दोस्त चाँद पूरा है। बारह महीनों का एक साल होता है और समुद्र में से पानी बह बह कर बाहर निकल रहा है।"

वह नौकर जब इस भेंट और सन्देश को ले कर चला तो आधे रास्ते में ही उसको अपना छोटा बेटा मिल गया। बेटे ने देखा कि उसके पिता जी के पास टोकरी में खाना था तो उसने उससे कुछ खाना माँगा। उसका पिता थोड़ा बेवकूफ था सो उसने उसको कुछ खाना दे दिया।

उसी समय उसने उस नौजवान को देखा जिसके लिये वह वह खाना और सन्देश ले कर जा रहा था। उसने बचा हुआ खाना और सन्देश उस नौजवान को दे दिया।

नौजवान ने कहा — "अपनी मालकिन को मेरा सलाम कहना और उनसे कहना कि चाँद नया है[48] मुझे साल में केवल ग्यारह महीने ही मिले और समुद्र भी पूरा नहीं है।"

नौकर इन शब्दों का मतलब तो नहीं समझा पर उसने घर जा कर उसका सन्देश लड़की को ऐसा का ऐसा ही दे दिया। इस तरह उसकी चोरी पकड़ी गयी और उसको उसकी सजा भुगतनी पड़ी।

[47] "Gyav" means melted butter or "Ghee".

[48] Translated for the words "Moon is new" – means New Moon or Amaavasyaa

कुछ देर बाद ही वह नौजवान किसान के साथ घर आया तो उसका ज़ोर शोर से स्वागत किया गया और उसका इस तरह से स्वागत किया जैसे वह कोई बड़े बाप का बेटा है हालाँकि उसके मेजबान को उसके बारे में कुछ पता नहीं था।

काफी देर बात करने के बाद उसने उनको अपनी कहानी सुनायी – मछली के हँसने के बारे में उसके पिता की मौत की सजा के बारे में और फिर अपने घर से निकाले जाने के बारे में। फिर उसने उनसे इस बारे में उनकी सलाह माँगी।

लड़की बोली — "ऐसा लगता है कि मछली की हँसी ही इस सब मुसीबत की जड़ है। और मछली इसलिये हँसी लगती है कि राजा के महल में कोई एक ऐसा आदमी है जिसका राजा को पता नहीं है।"

नौजवान बोला — "बहुत अच्छे बहुत अच्छे। अभी मेरे लौट जाने में कुछ समय बाकी है जिससे मैं अपने पिता को उनकी अन्यायपूर्ण मौत से बचा सकूँगा।"

अगले ही दिन वह किसान की बेटी को अपने साथ ले कर वापस अपने घर की तरफ लौट पड़ा।

अपने घर पहुँचते ही वह महल की तरफ दौड़ गया और जा कर उसे जो कुछ मछली के हँसने का मतलब पता चला था बताया। बेचारा वजीर तो मौत के डर से अभी से मरा हुआ हो रहा था।

उसको तुरन्त ही राजा के पास ले जाया गया। उसने राजा को वही बता दिया जो उसके बेटे ने उसे बताया था।

राजा बोला — "नहीं कभी नहीं। ऐसा कभी नहीं हो सकता।"

वजीर बोला — "पर ऐसा ही होना चाहिये राजा साहब। जो कुछ भी मैंने सुना है उसकी सच्चाई को साबित करने के लिये मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप पहले तो एक गड्ढा खोदें फिर अपनी सारी दासियों को अपने महल में बुलायें और उन सबको उस गड्ढे के ऊपर से कूदने के लिये कहें। ऐसा करने से आदमी का पता चल जायेगा।"

यह सुन कर राजा ने एक गड्ढा खुदवाया और अपनी सब दासियों को उसके ऊपर से कूद जाने के लिये कहा। सब दासियों ने कोशिश की पर केवल एक ही दासी वह गड्ढा पार कर सकी। वह कोई दासी नहीं बल्कि एक आदमी था।

इस तरह रानी सन्तुष्ट हुई और वजीर अपनी मौत से बच सका। उसके कुछ दिन बाद वजीर के बेटे की शादी किसान की बेटी से हो गयी जो आगे चल कर बहुत सफल रही।

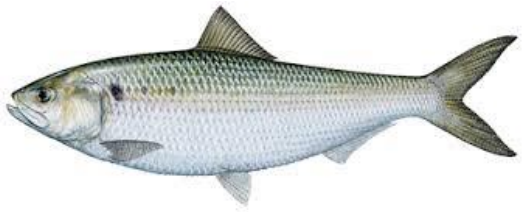

15 किसान ज्योतिषी[49]

एक बार एक राजा की बड़ी कीमती अँगूठी खो गयी। उसने उसको सब जगह ढूँढ लिया पर वह उसे कहीं भी नहीं मिली।

सो उसने ऐलान करवा दिया कि अगर कोई ज्योतिषी यह बतायेगा कि उसकी अँगूठी कहाँ है तो वह उसको ज़िन्दगी भर के लिये मालामाल कर देगा।

अब वहाँ एक किसान भी रहता था जिसका नाम था गैम्बारा[50]। वह बहुत ही गरीब था। उसके पास बिल्कुल भी पैसे नहीं थे। वह पढ़ा लिखा भी नहीं था।

उसने सोचा — "क्या ज्योतिषी बनने का बहाना करना बहुत मुश्किल होगा? मुझे लगता है कि कम से कम मुझे ज्योतिषी बनने की कोशिश तो करनी चाहिये।" यही सोच कर वह राजा के पास चला।

वहाँ जा कर उसने राजा को बताया कि वह एक ज्योतिषी था और राजा की अँगूठी का पता बताने के लिये आया था। तो राजा उसको देख कर बहुत खुश हुआ और उसका कहा मान गया। उसने उसको एक कमरा दे दिया ताकि वहाँ वह शान्ति से बैठ कर पढ़ लिख कर उसकी अँगूठी का पता बता सके।

---

[49] The Peasant Astrologer. Tale No 25. A folktale from Italy from its Mantua area.

[50] Gambara – the name of the peasant

उस कमरे में सिवाय एक चारपाई, एक मेज पर रखी बहुत बड़ी ज्योतिष की किताब, कागज, कलम और दवात के अलावा और कुछ नहीं था।

गैम्बारा मेज पर बैठ गया और बिना एक भी शब्द समझे बूझे उस किताब के पन्ने पलटने लगा। कभी कभी वह उस किताब पर कलम से कुछ निशान भी बनाता जाता था।

वह क्योंकि पढ़ना लिखना तो जानता नहीं था इसलिये उसने उस किताब पर जो निशान बनाये थे वे तो बस निशान ही थे उनका कोई मतलब तो था नहीं। उसको ज्योतिष जानने का कुछ न कुछ तो बहाना करना ही था।

जब राजा के नौकर उसका दोपहर का और शाम का खाना ले कर आते थे तो जिस तरीके से वह किताब खोल कर रखता था और उस पर निशान बनाता था उससे उनको लगता था कि वह एक बहुत बड़ा ज्योतिषी था।

उधर गैम्बारा के मन में भी चोर था क्योंकि वह ज्योतिषी तो था नहीं सो वह भी जब वे उसके कमरे में आते थे कनखियों से उनकी तरफ देखता रहता था कि कहीं उनको उसका राज़ पता न चल जाये।

असल में ये ही वे नौकर थे जिन्होंने राजा की अँगूठी चुरायी थी सो जब भी गैम्बारा उनकी तरफ देखता तो उनको यह लगता कि वह उनको शक की निगाहों से देख रहा है जबकि वह तो उनको

साधारण तरीके से ही उनकी तरफ देखता था क्योंकि उसको तो कुछ पता ही नहीं था – न तो ज्योतिष का और न ही चोरों का।

और उन नौकरों को यह लग रहा था कि गैम्बारा अपनी विद्या में बहुत होशियार है सो डर के मारे वे बेचारे ठीक से उसके आगे झुक भी नहीं सकते थे। उनको हमेशा ही यह लगता रहता कि कब वह अपनी ज्योतिष विद्या से उनको पहचान न जाये।

वे बेचारे "ओ ज्योतिषी, आपकी छोटी से छोटी इच्छा भी हमारे लिये आपका हुक्म है।" कह कर डर के मारे जल्दी से वहाँ से चले जाते।

अब गैम्बारा काई ज्योतिषी तो था नहीं और पढ़ा लिखा भी नहीं था पर किसान था इसलिये चालाक था। उसको कुछ शक हो गया कि ये नौकर अँगूठी के बारे में जरूर कुछ जानते हैं तभी ये लोग इस तरीके से बर्ताव कर रहे हैं सो उसने उनके लिये एक जाल बिछाया।

एक दिन जब उनमें से एक नौकर उसके लिये दोपहर का खाना ले कर आया तो वह अपनी चारपाई के नीचे छिप गया। नौकर जब उसके कमरे के अन्दर आया तो उसने कमरे में किसी को नहीं देखा।

गैम्बारा चारपाई के नीचे से ज़ोर से चिल्लाया — "यह उनमें से एक है। यह उनमें से एक है।" यह सुनते ही नौकर ने खाने की थाली नीचे रखी और डर के मारे भाग गया।

अब दूसरा नौकर आया तो उसने भी कुछ ऐसी ही आवाज सुनी जैसे वह जमीन के नीचे से आ रही हो — "यह उनमें से दूसरा है। यह उनमें से दूसरा है।" यह सुनते ही वह दूसरा नौकर भी भाग गया।

फिर तीसरा नौकर कमरे में आया तो वह चिल्लाया — "यह उनमें से तीसरा है। यह उनमें से तीसरा है।" यह सुन कर वह नौकर भी भाग गया।

अब तीनों नौकरों ने आपस में बात की — "लगता है कि इस ज्योतिषी को हमारी चोरी के बारे में पता चल गया है। अब अगर यह ज्योतिषी राजा को हमारे बारे में बता देता है तो हमारी तो नौकरी ही खत्म।"

सो उन लोगों ने उस ज्योतिषी के पास जाने का निश्चय किया और अपनी चोरी की बात मान लेने का फैसला किया। वे तीनों उस ज्योतिषी के पास गये।

उन्होंने शुरू किया — "हम लोग गरीब आदमी हैं। जो कुछ भी आपने मालूम किया है अगर आप वह राजा साहब से कह देंगे तो हम तो कहीं के नहीं रहेंगे। आप सोने से भरा हुआ यह बटुआ ले लीजिये और हमें छोड़ दीजिये।"

गैम्बारा ने वह बटुआ तो उनसे ले लिया और बोला — "मैं तुमको नहीं पकड़वाऊँगा पर इस शर्त पर कि तुम लोग जैसा मैं कहूँ वैसा ही करोगे।" वे चोर राजी हो गये।

गैम्बारा फिर बोला — "तुम अँगूठी लो और उस टर्की को बाहर खेत में निकाल कर उसको यह अँगूठी निगलवा दो। उसके बाद तुम सब कुछ मेरे ऊपर छोड़ दो मैं देख लूँगा।" नौकरों ने वैसा ही किया।

अगले दिन गैम्बारा राजा के पास गया और बोला कि काफी कुछ पढ़ने के बाद मैं यह जान गया हूँ कि वह अँगूठी कहाँ है।

राजा खुश हो कर बोला — "कहाँ है?"

"एक टर्की ने उसको निगल लिया है।"

हालाँकि ज्योतिषी की बात पर राजा को विश्वास तो नहीं हुआ कि कोई टर्की मेरी अँगूठी कैसे निगल सकती है पर फिर भी उसने उस टर्की को अपने सामने लाने का हुक्म दिया।

वह टर्की राजा के सामने लायी गयी और उसको काटा गया तो उसमें से अँगूठी निकल आयी।

इसके बदले में राजा ने ज्योतिषी को बहुत सारी दौलत दी और साथ में एक दावत भी दी जिसमें उसने अपने राज्य के और आस पास के राज्यों के बहुत सारे लोग बुलाये थे।

बहुत सारी खाने की चीज़ों में एक गैम्बैरी[51] भी पकायी गयी थी। गैम्बैरी केफ़िश का दूसरा नाम है।

केफ़िश को उस देश में कोई जानता

[51] Gamberi is the other name of crayfish, See the picture of crayfish above.

नहीं था। असल में दूसरे देशों को लोग उसको उस देश के राजा के लिये वह भेंट में ले कर आये थे और वहाँ के लोग इस मछली को पहली बार देख रहे थे।

राजा उस किसान से बोला — "तुम तो ज्योतिषी हो तुम बताओ कि इस प्लेट में रखी यह क्या चीज़ है।"

बेचारा किसान जिसने उसको पहले कभी सुना नहीं कभी देखा नहीं था अपने आप में बुदबुदाया — "आह गैम्बारा, गैम्बारा, आज तू मारा गया।"

राजा जो उस ज्योतिषी का असली नाम नहीं जानता था खुशी से चिल्लाया — "बहुत अच्छे, बहुत अच्छे ज्योतिषी। तुमने ठीक जाना। इसका नाम गैम्बैरी ही है। तुमसे बड़ा ज्योतिषी तो इस दुनियाँ में कोई है ही नहीं।"

16 एक सुन्दर लड़की और मछली[52]

बहुत पुरानी बात है जब नाइजीरिया में हर जगह जादू का बोलबाला था। वहाँ के एक गाँव में एक बहुत सुन्दर लड़की रहती थी।

उस गाँव के बहुत सारे लड़के उससे शादी करना चाहते थे परन्तु उसने सारे लड़कों को मना कर दिया था। उसका कहना था कि उसका पति तो बहुत ही ज़्यादा सुन्दर होना चाहिये।

एक दिन जब वह बाजार में घूम रही थी तो उसने सचमुच में एक बहुत ही सुन्दर लड़का देखा और तुरन्त ही उसको उस लड़के से प्रेम हो गया।

वह उस लड़के के पास गयी और उसको बताया कि किस तरह वह उसकी सुन्दरता पर रीझ गयी थी और अब उससे शादी करना चाहती थी।

उस अजनबी ने जवाब दिया — "मैं तुमसे शादी कर के बहुत ही खुश होता परन्तु बदकिस्मती से मैं इन्सान नहीं हूँ और तुम लोगों में से एक भी नहीं हूँ।

मैं एक मछली हूँ और मैं इडुनमायबो[53] में जो नदी है उसमें रहता हूँ। देवताओं ने मुझे एक ऐसी ताकत दे रखी है जिससे मैं

[52] The Beautiful Girl and the Fish – a folktale of Yoruba Tribe from Nigeria, Africa

[53] Idunmaibo – name of a place

जब चाहूँ अपने आपको एक आदमी के रूप में बदल सकता हूँ पर मेरा घर तो नदी ही है और मैं फिर वहीं वापस चला जाऊँगा।"

यह सुन कर लड़की बोली — "कोई बात नहीं, चाहे तुम मछली हो या आदमी पर मैं तुमसे प्रेम करती हूँ। अगर तुम समय समय पर पानी से निकल कर इसी रूप में मेरे पास आने का वायदा करो तो मैं तुमसे खुशी खुशी शादी कर लूँगी।"

मछली आदमी बोला — "हाँ ऐसा तो हो सकता है। ठीक है फिर ऐसा ही होगा।"

और ऐसा कह कर वह उस लड़की को इडुनमायबो की तरफ ले चला। वहाँ पहुँच कर वह एक नदी के पास एक जगह पर रुका और बोला — "यही मेरा घर है। तुम जब भी मुझे बुलाना चाहो तो मैं तुमको जादू का एक गीत बता देता हूँ, उसे गाना तो मैं तुम्हारे पास इसी रूप में चला आऊँगा। वह गीत है —

ओ नदी की सुन्दर मछली क्या मैं इस बहते पानी में से देख सकती हूँ
नदी की सतह से मैं तुम्हें देखूँगी ओ प्यारी नदी जो चाँदी और रत्न जैसी लगती है
जिसके नीचे महल है जो आदमियों के महल से भी ज़्यादा सुन्दर है।

यह कह कर वह मछली आदमी नदी में कूद पड़ा और गायब हो गया। लड़की भी वहाँ से चली गयी।

बाद में वह लड़की अपने प्रेमी के लिये रोज कुछ मिठाई बनाती और इडुनमायबो ले जाती। वहाँ जा कर वह जादू भरा गीत गाती और मछली पानी की सतह पर दिखायी देने लगती।

फिर वह मछली अपने आपको आदमी के रूप में बदल कर किनारे पर आ जाती। तब दोनों कुछ समय साथ में गुजारते।

जब वह आदमी नदी में से बाहर आता तो बहुत तरीके के मूँगे और रत्न ले कर आता और अपनी पत्नी को भेंट करता। वे लोग आपस में बहुत खुश थे और एक दूसरे को बहुत प्यार करते थे।

जब लड़की के माता पिता ने देखा कि लड़की बड़ी होती जा रही है और वह किसी से शादी नहीं कर रही है तो उन्होंने उससे पूछा कि क्या उसकी निगाह में कोई ऐसा आदमी था जिससे वह शादी करना चाह रही हो।

तो लड़की ने जवाब दिया कि एक आदमी उसका पति था तो पर वह अभी उसके बारे में उनको बता नहीं सकती थी।

इस जवाब से वे बड़े परेशान हुए। वे उसको देखते रहते कि वह अपने पति के लिये खाना बनाती और उसे ले जाती।

उसके छोटे भाई ने उससे कई बार कहा कि वह उसके साथ चलेगा परन्तु लड़की ने कहा कि नहीं, यह काम वह अकेले ही करेगी और कोई उसके पीछे भी नहीं आये।

पर इस जवाब ने उस लड़के की उत्सुकता और जगा दी और एक दिन उसने तय कर लिया कि वह उसके पीछे पीछे जायेगा और देखेगा कि वह कहाँ जाती है और उस खाने का क्या करती है।

जादू से उसने अपने आपको एक मक्खी के रूप में बदला और अपनी बहिन के पीछे पीछे उड़ चला।

उसने देखा कि उसकी बहिन इडुनमायबो की तरफ गयी और वहाँ जा कर नदी के पास पहुँच कर उसने जादू का एक गीत गाया।

फिर एक मछली नदी की सतह पर आयी और वह एक सुन्दर नौजवान बन कर नदी के किनारे पर आ गयी। दोनों ने मिल कर खाना खाया, कुछ देर बातें कीं और फिर वह सुन्दर नौजवान नदी में कूद कर गायब हो गया।

लड़के ने उस जादुई गीत के बोल याद कर लिये और तुरन्त ही घर की तरफ उड़ चला। घर आ कर उसने अपने आपको फिर से लड़के के रूप में बदला और भागा भागा सीधा अपने माता पिता के पास गया।

उसने नदी के किनारे जो कुछ देखा था उसका पूरा हाल उनको सुना दिया और कहा कि उनकी बेटी ने तो एक मछली से शादी कर रखी है।

माता पिता यह सब सुन कर गुस्सा भी हुए और मन ही मन दुखी भी हुए। उन्होंने तय किया कि वे अपनी बेटी को अभी कुछ नहीं कहेंगे। वे अपनी बेटी को उसके बाबा के घर भेज देंगे और उसके जाने के बाद सोचेंगे कि उन्हें क्या करना चाहिये।

सो उस लड़की को उसके बाबा के घर भेज दिया गया। उसके बाबा का घर वहाँ से काफी दूर था और वहाँ से वह इतनी दूर आ कर अपने पति से नहीं मिल सकती थी।

जब लड़की चली गयी तब उन्होंने अपने बेटे से कहा कि वह उनको उस नदी के किनारे ले चले और वहाँ जा कर वह जादुई गीत गाये। बेटे ने ऐसा ही किया। वे सब नदी के किनारे पहुँचे और लड़के ने अपनी बहिन की आवाज में वह जादुई गीत गाया।

गीत सुन कर वह मछली पानी के ऊपर आयी और एक सुन्दर नौजवान का रूप रख कर नदी के किनारे पर कूद गयी। पिता एक झाड़ी के पीछे खड़ा था।

जैसे ही मछली नौजवान के रूप में नदी के किनारे पर कूदी पिता ने अपने हँसिये से उसे मार डाला और उसे पानी में वापस फेंक दिया। आश्चर्य, वह नौजवान पानी में गिरने के बाद धीरे धीरे फिर से मछली के रूप में आ गया।

पिता यह देख कर चिल्लाया — "मैं अपनी बेटी को इस बुरे काम की सजा जरूर दूँगा।"

उसने अपने बेटे को वह मरी हुई मछली पानी से बाहर निकाल कर घर ले चलने के लिये कहा। घर जा कर उन्होंने उस मछली को सुखाया और लड़की के वापस आने तक रख दिया।

दो दिन बाद लड़की खुशी खुशी घर वापस लौटी कि अब वह नदी के पास जा कर अपने पति से फिर से मिल सकेगी।

वह घर आते ही नदी पर जाने के लिये तैयार हुई तो उसके पिता ने कहा — "पहले कुछ खा लो। तुम्हारी माँ ने तुम्हारे लिये बहुत ही स्वाद मछली पकायी है।"

लड़की बोली — "पिता जी मुझे भूख भी नहीं है और मैं मछली भी नहीं खाना चाहती।"

पिता ने उसको डॉटा — "जैसा मैं कहता हूँ वैसा ही करो। चलो बैठो और पहले खाना खाओ।"

लड़की बेचारी दुखी सी चुपचाप बैठ गयी और मछली खाने लगी। जैसे ही वह मछली खाने लगी कि उसने अपने भाई को गुनगुनाते हुए सुना।

उसका गाना सुन कर तो वह हक्का बक्का रह गयी। उसके हाथों से खाने का कटोरा गिर गया और वह उसको भौंचक्की सी देखती रह गयी।

उसके भाई ने अपना गीत फिर दोहराया —

कितनी बुरी बात है स्त्रियों के लिये अपने पति का मॉस खाना
जबकि वे अपने पति को बहुत प्यार करती हैं
क्योंकि उनके पीछे उनके पति नदी में से निकाल लिये गये हैं
मछली के रूप में परिवार के खाने के लिये

लड़की यह गीत सुन कर तुरन्त नदी की तरफ दौड़ी गयी और उसने अपना जादुई गीत गाया पर उसका पति नदी से बाहर नहीं आया। फिर उसने एक और गीत गाया —

ओलूवेरी[54] ओलूवेरी ओ नदी देवी
मैं अपनी चॉदी जैसी ऑखें और सितारों जैसे बाल लिये लौटी हूँ
अगर मेरा पति मर गया है तो नदी की पानी की सतह लाल हो जाये

[54] Oluweri – the goddess of the Rivers

और अगर मेरा पति ज़िन्दा है तो वह बाहर आये
और आ कर अपनी प्रेमिका को देखे
जिसको कठोरता के साथ इतनी दूर भेज दिया गया था

उसी समय नदी का पानी लाल हो गया और लड़की जान गयी कि उसके पिता ने उसके पति को मार डाला है। वह तुरन्त नदी में कूद गयी। पर वह डूबी नहीं बल्कि नीचे बैठती चली गयी और मत्स्यांगना बन गयी।

लोगों का कहना है कि आज भी कभी कभी एक मत्स्यांगना नदी में गुनगुनाती सुनायी पड़ती है।

17 बोलती हुई मछली–2[55]

एक बार की बात है कि एक बहुत ही गरीब आदमी था जो एक मछियारे के लिये काम करता था। इसके बदले में उसको कुछ मछलियाँ मिल जाती थीं। इसी पर उसे और उसकी पत्नी को रहना पड़ता था।

एक दिन मछियारे ने बहुत सुन्दर छोटी सी मछली पकड़ी। उसने मछियारे से सहायता माँगी कि वह उसको अलग उठा कर रख दे और उसको फिर से वापस नदी में डाल दे। जब वह मछियारा उसे अपने हाथों में उलट पुलट रहा था तो उसने सोचा —

"यह बेचारी छोटी मछली। आखिर यह भी तो एक ज़िन्दा जीव है। इसके भी तो माँ बाप होंगे दोस्त होंगे अपनी खुशियाँ होंगी अपने दुख होंगे जैसे कि हम आदमियों के होते हैं।"

अचानक मछली एक आदमी की आवाज में बोली — "इधर देखो भाई आदमी। मैं अपने साथियों के साथ कितनी खुशी से खेल रही थी कि मैं सावधानी रखना बिल्कुल भूल गयी और तुम्हारे जाल में फँस गयी।

अब मेरे माता पिता और मेरे साथी मुझे ढूँढ रहे हैं और मेरे लिये दुखी हो रहे हैं। और मैं यहाँ हूँ धरती पर कष्ट सहन कर रही

[55] he Talking Fish. An Armenian folktale. Taken from Armenian Encyclopedia : https://www.armeniapedia.org/wiki/Hovhannes_Tumanian:_The_Talking_Fish
Translated by Hovahnnes Tumanian, 1908.

हूँ। इसलिये मैं पानी में वापस जाना चाहती हूँ वहाँ रह कर ठंडे साफ पानी में बढ़ना चाहती हूँ। मेहरबानी कर के मेरे ऊपर दया करो और मुझे वापस साफ पानी में फेंक दो।"

आदमी को छोटी मछली पर दया आ गयी और उसने उस मछली को पानी में वापस नदी में फेंक दिया — "ठीक है ओ मेरी छोटी मछली। जाओ पानी में जाओ और पानी में खेलो। मैं नहीं चाहता कि तुम्हारे माता पिता तुम्हारे लिये इससे और अधिक दुखी हों।"

इस बात पर मछियारा गुस्सा था। वह बोला — "आ बेवकूफ। ऐसा कैसे हुआ कि तुमने उसे वापस नदी में फेंक दिया। अब तुम यहाँ से चले जाओ। मैं तुम्हारा चेहरा कभी देखना नहीं चाहता। मैं चाहता हूँ कि तुम भूख से मर जाओ।"

गरीब आदमी दुखी हो गया और अपने घर की ओर चल दिया — "अब मैं क्या करूँ।"

अब वह दुखी मन से अपने घर की ओर चला जा रहा था कि तभी उसने सामने से एक राक्षस आदमी के रूप में आता देखा। वह राक्षस अपने सामने एक गाय हाँकते हुए आ रहा था।

राक्षस बोला — "गुड डे भाई। तुम इतने दुखी क्यों दिखायी दे रहे हो?"

आदमी ने उसे अपना सारा हाल बता दिया और कहा — "मैं अब नहीं जानता कि मैं अपनी जीविका कैसे कमाऊँ। मैं कैसे यह खबर अपनी पत्नी को सुनाऊँ।"

राक्षस बोला — "इधर देखो मेरे दोस्त। तुम यह गाय देख रहे हो न। मै इसको तुम्हें तीन साल के लिये देता हूँ यह तुम्हें रोज बहुत अच्छा दूध देगी। इससे तुम और तुम्हारी पत्नी कभी भूखे नहीं रहेंगे। पर एक शर्त है। जब तीन साल समाप्त हो जायेंगे तब मैं तुम्हारे पास आऊँगा और तुमसे कुछ सवाल पूछूँगा। यदि तुमने उनके जवाब ठीक दे दिये तो यह गाय तुम्हारी हो जायेगी।

और यदि तुमने उनके सही जवाब नहीं दिये तो मैं तुम दोनों को उस गाय के साथ साथ अपने साथ ले जाऊँगा। फिर मैं तुम्हारे साथ जो चाहे करूँ। क्या तुम इस बात पर राजी हो?"

आदमी ने कुछ पल सोचा "भूखे रहने से तो अच्छा है कि गाय को ले लिया जाये। कम से कम हम तीन साल तक तो ज़िन्दा रहेंगे उसके बाद जो होगा देखा जायेगा। हो सकता है कि हमारा भाग्य अच्छा हो तो हम इसके सवालों के जवाब देने में सफल हो जायें।"

सो उसने राक्षस की शर्त को स्वीकार कर लिया। उसने उससे गाय ली और खुशी खुशी घर चला गया।

तीन साल जल्दी ही बीत गये। गाय ने उस आदमी और उसकी पत्नी के लिये काफी दूध दिया। फिर भी वे हर शाम घर के दरवाजे पर बैठते और सोचते कि जल्दी ही वह राक्षस उनके पास आ

जायेगा। यह सोच कर वे लम्बी लम्बी साँसें लेते और फिर चिन्ता में डूब जाते। जबकि वह अभागी रात और पास आती जा रही थी।

एक शाम जब वे इस तरीके से बैठे हुए थे कि बहुत सुन्दर नौजवान उनके पास आया और बोला — "गुड ईवनिंग। मैं बहुत थक गया हूँ। क्या मैं यह रात आपके घर में गुजार सकता हूँ?"

"हाँ हाँ क्यों नहीं। केवल आज की रात हमारे घर में कुछ अनहोनी होने जा रही है। हमने एक राक्षस से एक गाय इस शर्त पर ली थी कि यदि हमने तीन साल तक इस्तेमाल किया तो वह तीन साल समाप्त होने पर हमारे पास आयेगा और हमसे कुछ सवाल पूछेगा। वह रात आज की रात है।

यदि हमने उसके सवालों का जवाब दे दिया तो वह गाय हमारी हो जायेगी पर यदि हम उसके सवालों का जवाब नहीं दे सके तो हम राक्षस के बन्दी हो जायेंगे इसलिये अपना ख्याल रखना कि कहीं तुम्हारा कोई नुकसान न हो जाये।"

नौजवान बोला — "उसका कोई मतलब नहीं है। जो कुछ भी तुम्हारे साथ होगा वही मेरे साथ भी होगा।" और वह नौजवान उस रात के लिये उनके साथ ही उस घर में रह गया।

जब आधी रात का घंटा बजा तो किसी ने बड़ी जोर से दरवाजा खटखटाया।

"कौन है वहाँ?"

"यह मैं हूँ राक्षस। तीन साल बीत गये हैं। अब मेरे सवालों के जवाब दो।"

बेचारे आदमी और उसकी पत्नी ने रोते हुए कहा — "हम तो कभी तुम्हारे सवालों के जवाब नहीं दे पायेंगे।"

पर नौजवान बोला — "तुम चिन्ता मत करो। उसके सवालों के जवाब तुम्हारी जगह मैं दूँगा।" और वह दरवाजे की ओर चला गया।

राक्षस बाहर से चिल्लाया — "मैं तुम्हारे इन्तजार में यहाँ खड़ा हूँ।"

नौजवान भी दरवाजे के पीछे से शान्ति से बोला — "मैं भी यहाँ हूँ।"

"तुम कहाँ से हो?"

"समुद्र के ऊपर से।"

"तुम यहाँ कैसे आये?"

"लँगड़े पिस्सू के ऊपर सवार हो कर।"

"तब तो समुद्र बहुत ही छोटा रहा होगा।"

ओह बिल्कुल नहीं। यहाँ तक कि एक गरुड़ तक उसे पार नहीं कर सकता।"

"तब वह गरुड़ कोई बच्चा रहा होगा।"

"बिल्कुल नहीं। उसके पंख तो इतने बड़े हैं कि उनका साया एक पूरे शहर को ढक ले।"

"तब वह शहर छोटा होगा।"

"नहीं बिल्कुल नहीं। यहाँ तक कि एक खरगोश भी उसके एक किनारे से दूसरे किनारे तक नहीं भाग सकता।"

"तब वह खरगोश ही बहुत छोटा होगा।"

"नहीं बिल्कुल नहीं। उसकी खाल तो इतनी बड़ी है कि एक उससे बड़े साइज़ के आदमी के लिये एक कोट बनाया जा सकता है और साथ में एक गर्म टोपी भी।"

"तब वह आदमी बौना होगा।"

"नहीं बिल्कुल नहीं। यदि कोई मुर्गा उसके पैरों में खड़ा हो कर बाँग दे तो उसकी बाँग की आवाज उस आदमी के कानों तक भी नहीं पहुँचेगी। वह आदमी इतना लम्बा है।"

"तब वह आदमी बहरा होगा।"

"नहीं बिल्कुल नहीं। वह आदमी तो दूर पहाड़ों पर एक हिरन को घास खाते भी सुन सकता है।"

राक्षस तो यह सुन कर आश्चर्यचकित रह गया। वह नहीं जानता था कि अब वह और कौन सा दूसरा सवाल पूछे। वह वहाँ दरवाजे पर कुछ देर तक खड़ा रहा फिर अँधेरे में गायब हो गया।

वह गरीब आदमी बहुत खुश हुआ। जब सुबह हो रही थी तो वह नौजवान जाने के लिये तैयार हआ। आदमी और उसकी पत्नी ने कहा — "नहीं हम तुम्हें जाने नहीं दे सकते। तुमने तो हमारी

जान बचायी है। तुम बोलो धन्यवाद देने के लिये हम तुम्हारे लिये क्या करें।"

नौजवान ने जवाब दिया — "तुमको मुझे कोई धन्यवाद नहीं देना। बस अब मुझे अपने रास्ते जाना चाहिये।"

तब आदमी ने उससे विनती करते हुए पूछा — "तब कम से कम तुम हमें यह तो बता दो कि तुम हो कौन।"

"क्या तुम्हें वह कहावत याद है "भलाई करो और यदि तुम उसे कुँए में भी दाल दोगे तो भी वह किसी दिन तुम्हारे पास लौट कर अवश्य ही आयेगी।" मैं वही छोटी बात करने वाली मछली हूँ जिसे तुमने पकड़ लिया था और फिर से पानी में डाल आये थे।"

और फिर इससे पहले कि वे सँभलने लायक हो सकें वह नौजवान गायब हो गया था।

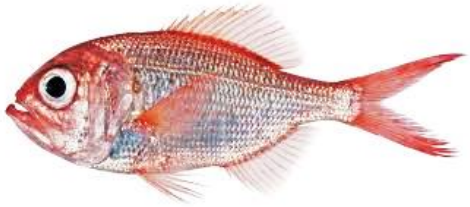

18 मछली और चीते की पत्नी[56]

यह बहुत साल पुरानी बात है जब नाइजीरिया के कैलैबार प्रदेश में ईयो[57] नाम का एक राजा राज करता था। उन दिनों मछलियाँ भी पानी में नहीं बल्कि जमीन पर रहा करती थीं।

एक नर मछली एक चीते[58] का बड़ा अच्छा दोस्त था। वह जंगल में चीते के घर अक्सर जाया करता था और चीता भी उसका खूब अच्छे से स्वागत करता था।

चीते की एक बहुत ही सुन्दर पत्नी थी। यह नर मछली उससे बहुत प्यार करता था। जब उनकी दोस्ती को कुछ समय बीत गया तब अगर चीता घर पर नहीं भी होता था तो भी वह नर मछली चीते के घर पहुँच जाता और उसकी पत्नी से प्यार करता।

एक दिन पड़ोस की एक बूढ़ी स्त्री ने देख लिया कि जब चीता घर में नहीं होता तो चीते के घर में क्या क्या होता है और चीते को बता दिया।

पहले तो चीते को विश्वास ही नहीं हुआ कि वह नर मछली जो उसका इतने दिनों से इतना अच्छा दोस्त था ऐसी नीच हरकत कर

---

[56] The Fish and the Leopard's Wife OR Why the Fish Lives in the Water? - A folktale from Nigeria, Africa.

[57] Eyo ruled in Calabar city of Nigeria in its Cross River State

[58] Translated for the word "Leopard". See its picture above.

सकता था पर एक रात उसने अचानक ही घर आ कर यह सब अपनी ऑखों से देख लिया।

वह सब देख कर तो चीते के तन बदन में आग लग गयी और वह उस नर मछली को मारने ही वाला था कि बाद में उसने सोचा कि यह नर मछली तो उसका बहुत पुराना दोस्त था इसलिये यह सब काम वह उसके साथ खुद नहीं करेगा बल्कि जा कर राजा ईयो को इस बारे में सब कुछ बतायेगा और उसी से न्याय मॉगेगा।

सो वह राजा ईयो के पास गया और सारा मामला जा कर उसको बताया। राजा ईयो ने एक कचहरी लगायी और चीते ने उसमें अपना मामला थोड़े में ही कह सुनाया।

पर जब मछली से पूछा गया कि वह अपने बचाव में क्या कहना चाहता है तो उसके पास कहने के लिये कुछ भी नहीं था।

सो राजा ने सबसे कहा — "यह तो बहुत ही बुरा मुकदमा मेरे पास आया है कि मछली चीते की काफी दिनों से दोस्त है और चीता उस पर विश्वास करता है फिर भी मछली ने चीते के घर में न होने का फायदा उठाया और उसको धोखा दिया। इसलिये उसकी सजा उसको जरूर मिलेगी।"

फिर राजा ईयो ने उस समय से यह कानून बना दिया कि सब मछलियॉ उस दिन से पानी में रहेंगी और अगर किसी ने कभी भी जमीन पर आने की कोशिश की तो वह मर जायेगी।

उसने उस दिन से यह कानून भी बना दिया कि आदमी लोग और जानवर दोनों जब भी चाहें मछली पकड़ कर खा सकते हैं। यह उस मछली को उसके दूसरे साथियों के साथ उसके दोस्त को धोखा देने की सजा थी।

19 भाले से मछली पकड़ना[59]

एक बार की बात है कि इथियोपिया देश में एक जगह दो स्त्रियाँ मछली पकड़ रही थीं। वहीं एक पेड़ पर एक आदमी बैठा हुआ था। दोनों स्त्रियाँ एक मछली के ऊपर झगड़ रही थीं। एक ने मछली सिर से पकड़ी हुई थी और दूसरी ने उसको पूँछ से पकड़ा हुआ था। पर दूसरी स्त्री ने उसे अपने भाले से मारा था।

उनका झगड़ा देख कर वह आदमी वहीं पेड़ से चिल्लाया — "तुम लोग लड़ो मत। मेरी बात सुनो।"

यह सुन कर वे चुप हो गयीं और सुनने की कोशिश करने लगीं। आदमी ने पूछा — "इसको भाला किसने मारा?"

स्त्री जिसने मछली को पूँछ की तरफ से पकड़ रखा था बोली — "मैंने इसको भाला पहले मारा।"

आदमी उस स्त्री से बोला जिसने मछली को सिर से पकड़ रखा था — "ओ सिर से पकड़ने वाली, तू इसको छोड़ दे।"

पर वह स्त्री वह मछली अपने लिये चाहती थी सो उसने उसे छोड़ने से मना कर दिया।

आदमी बोला — "मेहरबानी कर के इसे मेरे लिये छोड़ दे।"

---

[59] Hunting Fish With Long or Narrow Spears – A Gambela folktale from Ethiopia. Taken from http://ethiopianfolktales.com/en/gambela/120-hunting-fish-with-long-narrow-spears

उसने उसकी बात मान ली और मछली छोड़ दी। मछली दूसरी स्त्री के हाथों से भी फिसल गयी और नदी में कूद गयी। इस तरह दोनों में से किसी को भी मछली नहीं मिली।

आदमी ने पूछा — "मछली कहाँ है?"

दोनों स्त्रियाँ बोलीं — "वह तो भाग गयी।"

आदमी बोला — "तुम लोग अपनी तलाश जारी रखो।"

वे स्त्रियाँ लौट कर घर चली गयीं और घर जा कर यह हाल बताया। साथ में उन्होंने यह भी कहा कि जिस आदमी ने हमसे यह सब कहा हमने उसका चेहरा नहीं देखा।

वे लोग अगले दिन फिर से वहीं मछली पकड़ने गयीं तो उस दिन भी वैसा ही हुआ जैसा पहले दिन हुआ था। पर इस बार जिस स्त्री ने मछली सिर से पकड़ रखी थी वही उसकी ठीक मालकिन थी सो आदमी ने उस स्त्री से मछली छोड़ देने के लिये कहा जिसने उसको पूँछ से पकड़ा हुआ था।

जिस स्त्री ने उसको सिर से पकड़ा हुआ था उसके पास मछली रह गयी क्योंकि मछली को उसके पंखों की तरफ से पकड़ कर रखना आसान था।

आदमी ने पूछा — "क्या वह भाग गयी?"

"नहीं।"

"ठीक है। तुम अपनी तलाश जारी रखो।"

उन्होंने ऐसा ही किया। जब वे घर वापस लौटी तो उन्होंने घर जा कर फिर अपने घर वालों को बताया। इस बार गॉव वालों ने तय किया कि वे खुद जा कर देखेंगे कि वहॉ कौन बोलता है।

अगले दिन सारा गॉव यह देखने के लिये वहॉ इकट्ठा हो गया। उनमें से कुछ तो मछली पकड़ने चले गये कुछ छिप गये।

जब वह आवाज आयी तो उन्होंने देखा कि वह आवाज तो पेड़ से आ रही थी। वहॉ उनको बोलने वाला असली आदमी मिल गया। उन्होंने उसको नीचे बुलाया।

उन्होंने उसको पकड़ लिया और उसको गॉव ले आये। पर इस बीच में उस आदमी ने किसी जादू से अपने आपको एक जानवर में बदल लिया। फिर काले में फिर सफेद में फिर पौधे में और फिर एक स्त्री में बदल लिया। पर उन्होंने भी उसको छोड़ा नहीं और उसको वे गॉव ले ही आये।

वहॉ ला कर उन्होंने उसको एक अलग झोंपड़ी में रख दिया। पर इस बात पर वे सब राजी थे कि वे उसको खाना नहीं देंगे यह साबित करने के लिये कि वह कोई जादूगर है या नहीं।

एक स्त्री को उन्होंने वहॉ उसकी चौकीदारी के लिये रख दिया ताकि ऐसा न हो कि वह कहीं आग में कूद पड़े। कुछ दिनों बाद उन्होंने उसको खाना देना शुरू किया।

वह स्त्री इसके साथ कई दिनों तक रही। पर एक दिन वह आदमी गायब हो गया और फिर वहीं नदी के किनारे उसी पेड़ पर चला गया। इस बीच स्त्री को बच्चे की आशा हो गयी थी।

समय आने पर उसके एक बेटा हुआ। जिसको जब भी खिलाया जाता उसका कभी पेट ही नहीं भरता। बहुत जल्दी ही वह बहुत बड़ा मोटा और ताकतवर हो गया।

पर क्योंकि बेटे के बाप का पता नहीं था इसलिये उसका नाम भी नहीं मालूम था। इसलिये इस बच्चे का नाम ओऐन्जी[60] रख दिया गया जिसका मतलब होता है "अजनबी का बच्चा।"

जब वह बेटा बड़ा हो गया तो यह "अनुआक"[61] लोगों का राजा बन गया। उस दिन से उनका राजा ओऐन्जी ही कहलाने लगा। अनुआक राजा लोग अपनी मॉ के नाम से जाने जाते हैं जैसे अबंग का बेटा – यहॉ अबंग मॉ का नाम है।

इसके अलावा जब मामा लोग अपनी बहिन के बेटे को बहुत प्यार करते हैं तब भी बाप का नाम नहीं लिया जाता वे भी मॉ के नाम से ही जाने जाते हैं। एक दूसरा नाम राजा का है "जो नदी से आता है।"

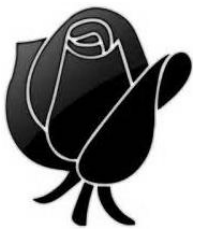

[60] O Ngie – means "the Son of a Stranger"

[61] Anuak Tribe

20 श्वेत वसन्त की कहानी[62]

मछली के कारनामे की यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के भारत देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक जगह एक बहुत ही अमीर सौदागर रहता था जिसके एक ही बेटा था। वह उसको बहुत प्यार करता था। उसने उसको वह सब कुछ दे रखा था जो उसको चाहिये था।

उसके बेटे को एक बागीचे में एक बहुत सुन्दर मकान चाहिये था सो उसने उसके लिये वैसा ही एक मकान बनवाया जैसा उसको चाहिये था और जो एक बहुत सुन्दर बागीचे में था।

एक दिन जब उसका बेटा अपने बागीचे में टहल रहा था तो उसने एक छोटी सी चिड़िया टूनटूनी[63] के घोंसले में हाथ डाला तो

वहाँ उसको एक अंडा मिला। उसने वह अंडा उठा लिया और उसे घर ला कर अपने घर की दीवार में बनी एक आलमारी में रख दिया।

अंडे को आलमारी में रख कर उसने आलमारी का दरवाजा बन्द कर दिया और उसे वहाँ रख कर वह उसे बिल्कुल भूल गया।

---

[62] The Story of Swet-Basanta – a folktale from India, Asia. Taken from the book: "Folk-tales of Bengal", by Lal Behari Dey. 1st ed 1883. 22 Tales. Its Hindi translation has been published by NBT, Delhi.

[63] Toontooni – a small bird

हालॉकि सौदागर के बेटे का यह अपना घर था पर वहॉ उसके पास कुछ बहुत ज़्यादा सामान नहीं था। जैसे किसी भी हालत में उसके पास कोई रसोइया नहीं था क्योंकि उसकी मॉ उसके लिये सुबह से ले कर शाम तक का सारा खाना भेजती थी – नाश्ता, दोपहर का खाना, शाम का नाश्ता, रात का खाना और और भी बहुत कुछ जो उसको जरूरत होती।

वह अंडा जो उसने आलमारी में रखा था एक दिन फूट गया और उसमें से एक बहुत सुन्दर सी बच्ची निकल आयी। पर उस सौदागर के बेटे को कुछ पता ही नहीं था।

क्योंकि अंडे को बारे में तो वह सब कुछ भूल चुका था और जिस दिन से उसने उस आलमारी में वह अंडा रख था आलमारी का दरवाजा भी बन्द था हालॉकि उसमें ताला नहीं लगा था।

वह बच्ची बिना सौदागर के बेटे के या किसी और की जानकारी के उस बन्द आलमारी में बढ़ने लगी। जब वह चलने लायक हो गयी तो एक दिन उसने उस आलमारी का दरवाजा खोला।

उसने देखा कि कि फर्श पर सौदागर के बेटे का खाना रखा हुआ है जो उसकी मॉ ने उसके लिये भेजा था। वह आलमारी से बाहर आयी और उसने उसमें से थोड़ा सा खाना खाया और फिर वापस अपने कमरे में यानी आलमारी में चली गयी।

सौदागर के बेटे की माँ अपने बेटे के लिये जितना वह खा सकता था हमेशा उससे कुछ ज़्यादा ही खाना भेजती थी इसलिये उसको वह खाना कभी कम ही नहीं लगा।

अब वह बच्ची रोज उस आलमारी में से बाहर आने लगी और उसके खाने में से खाना खाने लगी। खाना खाने के बाद वह अपनी आलमारी में वापस चली जाती।

पर जैसे जैसे वह बच्ची बड़ी होती गयी वह पहले से ज़्यादा खाना खाने लगी। अब सौदागर के बेटे को अपना खाना कम लगने लगा तो उसे लगा कि उसका खाना कोई खा रहा है।

पर यह तो वह तो सपने में भी नहीं सोच सकता था कि आलमारी के अंडे में से कोई बच्ची निकली होगी और वह यह खाना खा रही होगी। बस वह तो यही सोचता रहा कि उसकी माँ उसके लिये इतना कम खाना कैसे भेज सकती है कि वह उसको भी पूरा न पड़ सके।

एक दिन उसने अपने नौकर से अपनी माँ को कहलवाया कि उसका खाना कम था। और केवल कम ही नहीं बल्कि उसके परसे जाने का ढंग भी ठीक नहीं था।

क्योंकि आलमारी वाली बच्ची अपनी उँगलियों से दाल चावल और खाने की दूसरी चीज़ें खाती थी सो जिस तरह से वह खाना थाली में रखा जाना चाहिये था वह उस तरह से नहीं रखा रहता

था। इसलिये उसको लगा कि खाने को परसे जाने का ढंग भी ठीक नहीं था।

और क्योंकि वह जल्दी में होती थी इसलिये खा कर वह तुरन्त ही अपनी आलमारी वाले घर में चली जाती थी ताकि कोई उसे देख न ले। उसके पास इतना समय ही नहीं होता था कि वह उस खाने में से थोड़ा सा खाने के बाद दाल चावल आदि सब चीज़ें ठीक कर के रख दे।

माँ तो यह सुन कर बहुत आश्चर्य में पड़ गयी क्योंकि वह तो जितना उसका बेटा खाता था उससे कहीं ज़्यादा खाना भेजती थी। और इसके अलावा वह उसका खाना अपने हाथ से बड़े साफ सुथरे तरीके से चाँदी की एक थाली में परस कर भेजती थी।

पर जब उसके बेटे ने वही शिकायत बार बार की और रोज की तो उसने अपने बेटे से कहा कि वह एक दिन उस खाने को देखे कि क्या कोई ऐसा है जो उससे छिप कर उसका खाना खाता हो।

सो इस प्लान के अनुसार जब उसका नौकर उसका नाश्ता ले कर आया और उसको फर्श पर एक साफ जगह पर रखा तो सौदागर का बेटा उस समय बजाय नहाने जाने के जैसा कि वहाँ का रिवाज था एक जगह छिप गया और खाने पर नजर रखे रहा।

कुछ मिनट बाद ही उसने देखा कि उसकी दीवार की आलमारी का दरवाजा खुला और उसमें से एक सोलह साल की सुन्दर सी

लड़की बाहर निकली। वह नाश्ते के सामने बिछे हुए आसन पर आ कर बैठ गयी और उसने खाना शुरू कर दिया।

यह देख कर सौदागर का बेटा अपनी छिपी हुई जगह से बाहर निकल आया और वह लड़की वहाँ से बच कर नही भाग सकी।

सौदागर के बेटे ने उससे पूछा — "ओ सुन्दर लड़की तुम कौन हो? तुम धरती पर पैदा हुई तो नहीं लगतीं क्या तुम किसी देवता की बेटी हो?"

लड़की बोली — "मुझे नहीं मालूम कि मैं कौन हूँ। मैं तो बस इतना जानती हूँ कि एक दिन मैंने अपने आपको इस आलमारी में पाया और तबसे मैं यहीं रह रही हूँ।"

सौदागर के बेटे ने सोचा कि यह तो बड़ी अजीब बात है। पर फिर उसे याद आया कि सोलह साल पहले उसने आलमारी में एक अंडा रखा था जो उसने टूनटूनी चिड़िया के घोंसले में से उठाया था।

वह आलमारी वाली लड़की बहुत सुन्दर थी। उस लड़की की इतनी सुन्दरता ने सौदागर के दिमाग पर बहुत असर डाला तो उसने अपने मन में सोच लिया कि वह शादी करेगा तो उसी से।

उसके बाद वह लड़की फिर आलमारी में नहीं गयी बल्कि सौदागर के बड़े घर के एक कमरे में ही रहने लगी।

अगले दिन सौदागर के बेटे ने अपनी माँ को सन्देश भिजवा दिया कि वह शादी करना चाहता है। माँ ने जब अपने बेटे का यह

सन्देश सुना तो अपने आपको बहुत बुरा भला कहा कि उसने अपने बेटे की शादी के बारे में पहले क्यों नहीं सोचा।

फिर उसने और उसके पति ने बेटे से कहा कि वे अगले दिन ही एक घटक[64] को इधर उधर अलग अलग देशों में उसके लिये लड़की देखने के लिये भेजेंगे।

पर बेटे ने उनसे कहा कि उसने एक बहुत ही प्यारी सी लड़की पहले से ही देख रखी है और अगर उनको कोई ऐतराज न हो तो वह उसको उनसे मिलवाने ले आये।

सौदागर और उसकी पत्नी को कोई ऐतराज नहीं था सो वह उस आलमारी वाली लड़की को उनसे मिलवाने के लिये ले गया।

सौदागर और उसकी पत्नी तो उस अजनबी लड़की की बेजोड़ सुन्दरता और शान देख कर इतने प्रभावित हुए कि उसके जन्म के बारे में बिना कुछ जाने हुए उन्होंने उससे हॉ कर दी और उनकी सगाई पक्की कर के उनकी शादी भी कर दी।

समय बीतता गया और सौदागर के बेटे के दो बेटे हो गये। बड़े का नाम रखा गया श्वेत और छोटे का नाम रखा गया वसन्त। सौदागर और उसकी पत्नी की मृत्यु हो गयी। श्वेत और वसन्त दोनों बड़े हो कर बहुत ही अच्छे बच्चे बने।

[64] Ghatak, called in Bengali language is called a matchmaker in English language. He arranges marriages.

समय आने पर श्वेत की भी शादी हो गयी। श्वेत की शादी के कुछ समय बाद उसकी माँ यानी आलमारी वाली लड़की की भी मृत्यु हो गयी। अपनी पहली पत्नी के मरने के बाद सौदागर के बेटे ने जल्दी ही एक और नौजवान और सुन्दर लड़की से शादी कर ली।

अब क्योंकि श्वेत की पत्नी श्वेत की सौतेली माँ से बड़ी थी तो वही घर की मालकिन बन गयी।

दूसरी सौतेली माँओं की तरह से श्वेत की सौतेली माँ भी श्वेत और वसन्त दोनों से नफरत करती थी। उधर घर की दोनों स्त्रियाँ यानी श्वेत की पत्नी और श्वेत की सौतेली माँ भी आपस में लड़ती झगड़ती रहतीं।

एक दिन ऐसा हुआ कि एक मछियारा सौदागर[65] के लिये एक बहुत सुन्दर मछली ले कर आया। यह मछली दूसरी मछलियों जैसी नहीं थी जैसी कि इधर उधर पायी जाती हैं। उसने सौदागर से उसको खरीदने की प्रार्थना की और उसने उस मछली के ये गुण बताये।

कि जो कोई भी इस मछली को खायेगा तो जब वह हँसेगा तो उसके मुँह से लाल[66] गिरेंगे जब वह रोयेगा तो उसकी आँखों से मोती गिरेंगे।

[65] We will call Saudaagar to the merchant's son, as his father has already died.

[66] Translated for the word "Maanik". In English it is called Ruby. It is one of the 9 precious gems.

सौदागर ने जब उस मछली के ये आश्चर्यजनक गुण सुने तो उसने उसको एक हजार रुपये दे कर तुरन्त ही खरीद लिया और उसको श्वेत की पत्नी के हाथ पर रख दिया जो अब घर की मालकिन थी।

उसने उससे कहा कि वह उसको ठीक से पकाये और केवल उसी को खाने के लिये दे।

घर की मालकिन ने अपने ससुर और मछियारे के बीच में हुई बातचीत सुन ली थी सो उसने चुपचाप यह निश्चय किया कि वह यह मछली अपने पति श्वेत और उसके भाई वसन्त को ही खाने के लिये देगी। अपने ससुर के लिये वह कोई सुन्दर सा मेंढक पकायेगी और उसको वह दे देगी।

जब उसने वह मछली और मेंढक दोनों पका लिये तो उसने अपनी सौतेली सास और अपने देवर के बीच कुछ झगड़े की आवाजें सुनीं।

वसन्त को जो अभी लड़का ही था कबूतर बहुत अच्छे लगते थे। उसने उनको पाल भी रखा था। तो अभी ऐसा लग रहा था कि जैसे उनमें से एक कबूतर उड़ कर उसकी सौतेली माँ के कमरे में जा पहुँचा था और उसने उसको अपने कपड़ों में छिपा लिया था।

सो वसन्त उसके कमरे में जा कर उससे ज़ोर ज़ोर से बोल कर अपना कबूतर माँग रहा था। उसकी सौतेली माँ ने कहा कि उसको उसके कबूतर के बारे में कुछ नहीं मालूम।

यह झगड़ा वसन्त के बड़े भाई श्वेत ने भी सुना तो उसने वहाँ आ कर अपनी सौतेली माँ के कपड़ों में वह कबूतर ढूँढना शुरू किया निकाला और उसे जबरदस्ती वहाँ से निकाल कर अपने छोटे भाई को दे दिया।

सौतेली माँ ने उसे कोसा और कसम खा कर बोली — "रुक जा। ज़रा मेरे पति को आने दे। इससे पहले कि मैं उसको पानी भी पीने को दूँ मैं उससे तुम दोनों का खून करा कर रहूँगी।"

श्वेत की पत्नी ने अपने पति को बुलाया और अपनी सौतेली सास के बारे में कहा — "यह स्त्री तो बहुत ही खराब है। इसने तो मेरे ससुर को कुछ ज़रा ज़्यादा ही अपने कब्जे में कर रखा है। यह तो वह कर के ही रहेगी जो इसने कहा है।

हमारी ज़िन्दगी खतरे में है इसलिये हमें इस बारे में कुछ करना चाहिये पर पहले हम कुछ खालें। फिर ऐसा करते हैं कि हम तीनों यहाँ से भाग चलते हैं नहीं तो अब हम बचने वाले नहीं।"

यह सुन कर श्वेत ने वसन्त को बुलाया और उससे वह सब कहा जो उसने अपनी पत्नी से सुना था। तीनों ने रात होने से पहले पहले यह घर छोड़ने का प्लान बना लिया।

श्वेत की पत्नी ने अपने पति और देवर के सामने वह आश्चर्यजनक पकी हुई मछली रखी जिसके आश्चर्यजनक गुण उस मछियारे ने उसके ससुर को बताये थे।

तीनों ने खूब पेट भर कर खाना खाया। फिर उसने अपना सारा गहना बाँधा। क्योंकि उनके पास केवल एक ही घोड़ा था और वह बहुत ही तेज़ भागता था सो वे तीनों उस घोड़े पर बैठ गये।

श्वेत ने उसकी रास[67] पकड़ी, श्वेत की पत्नी अपना गहनों का बक्सा ले कर उसके पीछे बैठी और उसके पीछे बैठा वसन्त। घोड़ा बहुत तेज़ी से भाग लिया।

वे कई मैदानों और शहरों से हो कर गुजरे। आधी रात के बाद वे एक नदी के पास एक जंगल में पहुँच गये। अब यहाँ एक बहुत ही अप्रिय घटना घटी।

श्वेत की पत्नी को बच्चे की आशा थी सो उसको बच्चा होने वाला था। वे सब घोड़े से उतर पड़े और उसने एक दो घंटे बाद ही एक बेटे को जन्म दिया। अब वे दोनों भाई अकेले इस जंगल में क्या करें।

नयी माँ और उसके नये पैदा हुए बच्चे को गर्म रखने के लिये जंगल में आग जलायी जानी चाहिये पर इस जंगल में आग आये कहाँ से।

[67] Translated for the word “Reins”

क्योंकि वहाँ न तो कोई आदमी ही दिखायी दे रहा था और न किसी के रहने की जगह ही दिखायी दे रही थी तो आग आये कहाँ से। पर फिर भी कहीं न कहीं से आग तो लानी ही थी।

दिसम्बर का महीना था। उस समय अगर माँ और बच्चे को गर्म नहीं रखा गया तो यकीनन माँ और बच्चा दोनों ही मर जायेंगे। सो श्वेत ने वसन्त को अपनी पत्नी के पास बैठने के लिये कहा और वह खुद रात के अँधेरे में आग ढूँढने निकल पड़ा।

श्वेत जंगल में कई मील चला पर उसको उस जंगल में आग तो क्या आदमी तक के रहने की कोई जगह नहीं मिली। आखिर शुक्र तारे[68] की रोशनी ने उसको रास्ता दिखाया तो उसको दूर एक बड़ा सा शहर नजर आया।

यह देख कर वह बहुत खुश हो गया कि अब उसकी यात्रा खत्म हुई और वह अपनी पत्नी के लिये आग हासिल कर पायेगा जो अपने नये पैदा हुए बच्चे के साथ जंगल में ठंड में पड़ी है।

लेकिन तभी उसके साथ अचानक एक और अजीब सी घटना घटी।

अचानक एक हाथी उसके रास्ते पर से गुजरा।

[68] Translated for the words “Venus Star”

उसने उसको अपनी सूँड़ से उठा कर अपने बहुत ही बढ़िया हौदे[69] पर बिठा लिया और उसको ले कर शहर की तरफ तेज़ी से दौड़ लिया।

श्वेत तो यह देख कर दंग रह गया। उसको हाथी का यह काम बिल्कुल ही समझ नहीं आया कि उसने ऐसा क्यों किया। वह सोचता रहा कि किस्मत ने पता नहीं उसके लिये क्या लिख रखा है।

असल में तो एक ताज उसका इन्तजार कर रहा था।

उस शहर में जिसमें वह अब पहुँचने ही वाला था रोज हर सुबह एक राजा चुना जाता था क्योंकि हर सुबह पहले दिन वाला राजा रानी के कमरे में मरा हुआ पाया जाता था। यह राजा क्यों मर जाता था यह किसी को नहीं मालूम था यहाँ तक कि रानी को भी मालूम नहीं था।

अगले दिन होने वाला राजा उस रानी को अपनी रानी बना लेता था और यह हाथी जिसने श्वेत को उठाया वही राजा को चुनता था। हर सुबह यह हाथी दूर और पास की जगहों में चला जाता था और फिर जिस किसी को भी अपनी पीठ पर बिठा कर ले आता था लोग उसी को राजा मान लेते थे।

[69] Hauda, or Howda is the structure built for sitting on an elephant. See ts picture above. It is kept on the elephant. It may be big or small, very simply to very richly decorated, for one person or more than one person.

उस दिन इस हाथी ने श्वेत को उठाया और ले आया। यह हाथी श्वेत को ले कर बड़ी शान से शहर की भीड़ भाड़ वाली सड़क पर चला तो वहाँ के लोग श्वेत को अपना राजा स्वीकार करते रहे।

श्वेत नहीं समझ सका कि वे क्या कह रहे थे। फिर वह हाथी महल में घुसा और उसने उसको सिंहासन पर धीरे से बिठा दिया।

अब वह कुछ खुश और कुछ रोते हुए लोगों के बीच वहाँ का राजा घोषित कर दिया गया था।

दिन भर वह वहाँ के पहले दिन चुने हुए राजा के मरने के बारे में सुनता रहा जो वहाँ हर रात होता था। पर वह बहुत साहसी था। उसने हर वह सावधानी बर्तने की सोची जिससे वह इस भयानक घटना के होने को बदल सकता था।

फिर भी उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि उसको किस तरह के खतरे का सामना करना पड़ेगा ताकि वह उसके लायक तरीका अपना सके क्योंकि जब उसको उस खतरे का ही नहीं पता था कि वह किस किस्म का था।

फिर भी उसने दो चीज़ों पर विचार किया और ये दो चीज़ें थीं कि एक तो वह रानी के कमरे में हथियार ले कर जायेगा। दूसरे वह सारी रात चौकन्ना हो कर जागेगा।

रानी नौजवान थी और बहुत सुन्दर थी। उसका चेहरा इतना भोला था कि उसके बारे में तो यह सोचा ही नहीं जा सकता था कि

वह अपने रात के साथी को मारने के लिये कोई नीच तरीका इस्तेमाल भी कर सकती थी।

श्वेत ने रानी के कमरे में अपनी शाम बड़े अच्छे ढंग से गुजारी। जैसे जैसे रात बढ़ती गयी रानी सो गयी पर श्वेत जागता ही रहा। वह सावधान था। वह इस आशा में कमरे के हर कोने और हर दरार को देखता रहा कि बस अब उसका भी कत्ल होने वाला है।

जब काफी रात बीत गयी तो उसने देखा कि रानी के बॉये नथुने से एक बारीक सा धागा निकला। यह धागा इतना बारीक था कि इसको देखना नामुमकिन सा था।

पर फिर भी वह उसको दिखायी दे गया तो वह उसको देखता ही रहा। उसको लगा कि वह कई गज लम्बा था फिर भी वह उसके बॉये नथुने में से निकलता ही जा रहा था।

जब वह धागा सारा उसमें से निकल आया तो वह फूल कर मोटा होने लगा। कुछ ही पलों में उस बारीक से धागे ने एक बहुत बड़े सॉप का रूप ले लिया।

जैसे ही वह सॉप के रूप में बदला श्वेत ने तुरन्त ही उस सॉप का सिर काट दिया। सिर काटते ही उसका शरीर तड़पने लगा और वह मर गया।

सॉप को मारने के बाद श्वेत कमरे में शान्त बैठा था और किसी और अनहोनी घटना के घटने का इन्तजार करता रहा पर हुआ कुछ

भी नहीं। वह रात फिर ऐसे ही बिना किसी अप्रिय घटना के गुजर गयी।

रात को रानी और दिनों से ज़्यादा देर तक सोयी क्योंकि अब वह सॉप से आजाद हो चुकी थी जिसने उसके पेट में घर बना रखा था।

अगली सुबह मन्त्री लोग वहॉ रोज वाली खबर सुनने के लिये आये कि राजा मर गया है पर जब रानी के महल की दासियों ने रानी के कमरे का दरवाजा खटखटाया तो वे और रानी सभी यह देख कर बहुत आश्चर्यचकित थे कि श्वेत ज़िन्दा था।

बाहर आ कर श्वेत ने सबको बताया कि किस तरह से रानी के नथुने से एक सॉप निकलता था और वही राजा को मार देता था। और आज उसी सॉप को खुशकिस्मत श्वेत ने मार डाला था। अब वहॉ कोई राजा नहीं मरेगा।

हालॉकि यह एक बड़ी अजीब सी बात थी पर सच थी कि जैसे ही श्वेत ने सॉप मारा श्वेत अब अपनी पहली पत्नी को बिल्कुल भूल गया था। उसे याद ही नहीं था कि उसकी पत्नी जंगल में एक बच्चे को जन्म देने के बाद ठंड में पड़ी है और उसका भाई वहॉ उसकी देखभाल कर रहा है।

उस राजगद्दी को पा कर ऐसा लग रहा था जैसे वह तो अपनी सारी पुरानी ज़िन्दगी ही भूल गया था।

श्वेत तो अपनी पुरानी ज़िन्दगी भूल गया तो अब हम वसन्त के पास चलते हैं जो श्वेत की पत्नी की देखभाल कर रहा है।

X X X X X X X

उधर वसन्त जिसके ऊपर उसका भाई अपनी पत्नी और बच्चे को छोड़ गया था कई घंटों तक उसका इन्तजार करते करते थक गया। वह तो बस इसी उम्मीद में रहा कि उसका भाई आग ले कर अब आता होगा अब आता होगा। पर वहाँ तो सारी रात बीत गयी और उसका तो कहीं पता ही नहीं था।

सुबह जब सूरज निकल आया तो वह नदी के किनारे गया जो वहीं उसके पास ही बह रही थी। उसने वहाँ चिन्ता से इधर उधर देखा कि शायद उसका भाई वहीं कहीं दिखायी दे जाये पर उसको तो वह वहाँ भी कहीं दिखायी नहीं दिया।

बहुत परेशान हो कर वह वहीं नदी के किनारे पर बैठ गया कि अब वह क्या करे। तभी उसने देखा कि एक नाव जा रही थी जिसमें एक सौदागर अपने देश को वापस जा रहा था।

क्योंकि नाव किनारे से बहुत दूर नहीं थी तो उस सौदागर ने वसन्त को रोते हुए देखा। पर उसने सबसे ज़्यादा अजीब चीज़ जो उसने देखी वह यह थी कि उस रोते हुए आदमी के पास मोती के ढेर लगे पड़े थे।

सौदागर के कहने पर नाविक नाव को किनारे की तरफ ले गया। वहाँ जाने पर सौदागर ने देखा कि वह मोती का ढेर तो सच्चे मोती का ढेर था और वह ढेर तो हर पल बढ़ता ही जा रहा था। उस मोती की चमक उसने अब तक जितने मोती देखे थे उनमें से सबसे अच्छी थी।

यह सब इसलिये था क्योंकि ये मोती उस लड़के की ऑखों से गिरे हुए ऑसू थे और ये तो वे ऑसू भी नहीं थे बल्कि ये तो मोती थे।

सौदागर ने वे मोती अपनी नाव में ले जाने शुरू कर दिये और अपने नौकरों की सहायता से वसन्त को भी उठा कर अपनी नाव पर बिठा लिया और उसको एक लट्ठे से बॉध दिया।

वसन्त ने उनको रोकने की कोशिश भी की पर वह इतने लोगों के सामने क्या कर सकता था।

अपने भाई, भाई की पत्नी, उनके बच्चे और अपने नाव पर कैदी होने के बारे में सोचते हुए वह और ज़ोर ज़ोर से रोने लगा जिससे सौदागर और खुश हो गया क्योंकि जितनी ज़्यादा ज़ोर से वह रो रहा था सौदागर उतना ही अमीर होता जा रहा था। क्योंकि जितने ज़्यादा उसके ऑसू बह रहे थे उतने ही उसके मोती भी बढ़ रहे थे।

जब सौदागर अपने शहर पहुँच गया तो वसन्त को उसने एक कमरे में बन्द कर दिया। अब वह उसको एक निश्चित समय पर

रोज पीटता था ताकि वह रोये और उसको और बहुत सारे मोती मिल जायें। क्योंकि उसका हर ऑसू मोती बन जाता था।

एक दिन सौदागर ने अपने नौकरों से कहा — "यह लड़का अपने रोने पर तो मुझको मोती देता है अब मैं यह देखना चाहता हूँ कि यह मुझे हॅसने पर क्या देगा।"

सो उसने अपने कैदी को गुदगुदी करनी शुरू की तो वसन्त को हॅसी आ गयी। उसके हॅसने पर उसके मुॅह से बहुत सारे लाल गिरने शुरू हो गये। अब इसके बाद तो बेचारे वसन्त को कभी कोड़े मारे जाते तो कभी उसको गुदगुदी की जाती और यह सब उसके साथ गये रात तक किया जाता।

इसका फल यह हुआ कि यह सौदागर अब उस देश का सबसे अमीर आदमी बन गया।

अब हम वसन्त को इस सौदागर के पास कभी कोड़े खाने के लिये और कभी गुदगुदी के लिये यहीं छोड़ते हैं और श्वेत की पत्नी पास यह देखने के लिये चलते हैं कि वह क्या कर रही है।

श्वेत की पत्नी को उसका पति भी छोड़ गया और उसका देवर भी छोड़ गया। वह तो दुख से पागल सी हो गयी। अब वह क्या करे।

एक स्त्री जिसने कुछ घंटों पहले ही एक बच्चे को जन्म दिया हो और वह भी उसका पहला पहला बच्चा हो, वह खुद जंगल में

अकेली हो, आसपास में कोई बस्ती न हो तो उसकी हालत तो दया के काबिल ही है न।

वह बहुत रोयी। इतना सारा रोने के बाद उसको कुछ आराम मिला और वह अपने नये पैदा हुए बच्चे को अपनी बॉहों में ले कर सो गयी।

अब ऐसा हुआ कि उस समय वहॉ का कोतवाल उधर से गुजर रहा था। वह बच्चे के मामले में बहुत ही बदकिस्मत था। हर बार जब भी उसकी पत्नी किसी बच्चे को जन्म देती तो वह बच्चा जन्म लेने के थोड़ी देर बाद ही मर जाता।

इस समय भी वह अपने हाल के पैदा हुए बच्चे को जो अब मर चुका था नदी के किनारे दफनाने जा रहा था कि उसकी निगाह एक सोती हुई स्त्री पर पड़ी जो एक बच्चे को अपनी बॉहों में लिये हुए सो रही थी। यह बच्चा तो ज़िन्दा था और एक बहुत सुन्दर लड़का था।

बस कोतवाल के मन में उसको लेने की इच्छा हो आयी सो उसने उसके बच्चे को चुपचाप उस स्त्री की गोद से उठाया अपना मरा हुआ बच्चा उस स्त्री की गोद में रखा और घर वापस आ गया।

घर आ कर उसने अपनी पत्नी से कहा कि उसका बच्चा सचमुच में नहीं मरा था। बस उसको केवल ऐसा लग रहा था कि वह मर गया है वह तो ज़िन्दा है। लो यह बच्चा लो। कह कर

उसने अपनी पत्नी को श्वेत का बच्चा दे दिया। पत्नी बच्चे को ले कर बहुत खुश हो गयी।

श्वेत की पत्नी को कोतवाल ने उसके साथ जो कुछ भी किया था उसका कुछ पता ही नहीं था। सो जब वह जागी तो उसने देखा कि उसकी गोद में तो मरा हुआ बच्चा है। इस बात का उसको कितना दुख हुआ होगा इसको तो बस केवल सोचा ही जा सकता है।

उसके लिये तो सारी दुनियाँ ही अँधेरी हो गयी। इस दुख में उसने सोचा कि अब वह आत्महत्या कर लेगी। नदी उस जगह से ज़्यादा दूर नहीं थी सो उसने सोचा कि वह उसमें डूब कर अपनी जान दे देगी। उसने अपने हाथ में अपने गहनों का बक्सा लिया और नदी की तरफ चल दी।

सुबह होने वाली थी सो एक ब्राह्मण वहाँ पर अपनी सुबह की पूजा कर रहा था। उसने एक स्त्री को नदी में जाते हुए देखा तो उसको लगा कि वह भी सुबह सुबह वहाँ नहाने आयी होगी और नदी में नहाने जा रही होगी।

पर जब उसने देखा कि वह तो गहरे पानी की तरफ जा रही है तो उसको कुछ शक हुआ। उसने अपनी पूजा छोड़ी और चिल्ला कर उससे अपने पास आने के लिये कहा।

श्वेत की पत्नी ने देखा कि एक बूढ़ा उसको अपने पास बुला रहा था तो वह वहाँ से वापस आयी और उस बूढ़े के पास आयी।

पूछने पर कि वह वहाँ क्या करने जा रही थी उसने उस बूढ़े ब्राह्मण को बताया कि वह वहाँ अपनी ज़िन्दगी ख़त्म करने जा रही थी।

और क्योंकि उसके पास कुछ गहने थे तो अगर वह उसके वे गहने स्वीकार कर लेगा तो उसका उसके ऊपर बड़ा एहसान होगा।

ब्राह्मण के पूछने पर कि वह ऐसा क्यों कर रही थी उसने उसको अपनी सारी कहानी बता दी तो उस ब्राह्मण को उसके ऊपर बहुत तरस आया और वह उसको अपने घर ले गया। वहाँ ब्राह्मण की पत्नी ने उसको अपनी बेटी की तरह रख लिया।

सालों गुजर गये।

कोतवाल का बेटा एक बहुत ही तन्दुरुस्त मजबूत सुन्दर लड़के के रूप में बड़ा हो गया। क्योंकि ब्राह्मण का घर कोतवाल के घर से ज़्यादा दूर नहीं था कोतवाल का बेटा एक दिन अचानक ही उस अजनबी सुन्दर ब्राह्मण की बेटी से मिला।

वह स्त्री उसको बहुत अच्छी लगी तो वह उससे शादी करना चाहता था। उसने अपने पिता कोतवाल को इसके बारे में बताया तो कोतवाल इस बारे में ब्राह्मण से मिला।

इस बात पर ब्राह्मण का गुस्सा तो सातवें आसमान पर चढ़ गया। क्या एक कोतवाल का बेटा एक ब्राह्मण की बेटी का हाथ माँग रहा था?

एक बौना चाँद को पकड़ सकता है पर एक कोतवाल का बेटा एक ब्राह्मण की बेटी से शादी? नहीं नहीं कभी नहीं। पर कोतवाल के बेटे ने तो यह शादी जबरदस्ती करने की ठान रखी थी।

एक दिन वह अपने इस बुरे इरादे से ब्राह्मण के घर की चहारदीवारी पर चढ़ा और उसकी गाय के घर की फूस की छत पर उतर गया। वहाँ जब वह उस कूद से सँभल रहा था तो उसने दो बछड़ों की बातचीत सुनी।

एक बछड़ा बोला — "आदमी लोग हमको बहुत ही निर्दयी, अनपढ़ और अनैतिक समझते है पर मैं समझता हूँ कि आदमी लोग इन मामलों में हमसे भी पचास गुना ज़्यादा हैं।

दूसरा बछड़ा बोला — "तुम ऐसा कैसे कहते हो भैया? क्या आज तुमने ऐसा कुछ देखा?"

पहला वाला बछड़ा बोला — "उस लड़के से बड़ा राक्षस और कौन होगा जो इस समय यहाँ हमारे सिर पर इस घर की फूस की छत पर खड़ा है?"

दूसरा बछड़ा बोला — "ऐसा क्यों? मुझे तो ऐसा लगा कि वह तो हमारे कोतवाल का बेटा है और मैंने तो कभी यह सुना नहीं कि वह इतना खराब है।"

पहले वाला बछड़ा फिर बोला — "अरे तुमने सुना नहीं? तो लो अब मुझसे सुनो। तुम्हें मालूम है कि यह ख़राब लड़का अब अपनी माँ से शादी करना चाहता है?"

इतना कहने के बाद पहले वाले बछड़े ने उसे श्वेत और वसन्त की कहानी सुनायी कि किस तरह से वे दोनों यानी श्वेत और वसन्त श्वेत की पत्नी के साथ अपनी सौतेली माँ की वजह से घर छोड़ कर भाग गये थे।

फिर कैसे श्वेत की माँ ने जंगल में नदी के किनारे एक बेटे को जन्म दिया। कैसे एक हाथी ने श्वेत को राजा बनाया। कैसे श्वेत ने वह साँप मारा जो रोज रात को रानी के नथुने से निकल कर राजा को मार देता था।

कैसे वसन्त को एक सौदागर उठा लाया और उसे एक कमरे में बन्द कर दिया। वहाँ उससे वह लाल और मोती लेने के लिये कैसे उसको वह कभी मारता है तो कभी उसको गुदगुदी करता है। कैसे कोतवाल ने अपना मरा हुआ बच्चा श्वेत के ज़िन्दा बच्चे से बदला।

फिर कैसे ब्राह्मण ने श्वेत की पत्नी को नदी में डूबने से बचाया और अपने घर में ला कर अपनी बेटी की तरह रखा। फिर कैसे लाड़ प्यार में पला कोतवाल का बेटा उसके प्यार में पड़ गया।

और अब वह कैसे अपना यह ख़राब इरादा पूरा करने के लिये यहाँ इस फूस की छत पर आया है।"

यह सारी कहानी कोतवाल के बेटे ने बड़े आश्चर्य से उस फूस की छत पर बैठे बैठे सुनी। इसके बाद वह फूस की छत से उतर आया और अपने घर चला गया। वहाँ जा कर उसने अपने पिता कोतवाल से कहा कि उसको जा कर राजा से मिलना चाहिये।

पर उसके पिता ने मना कर दिया तो उसके पिता के मना करने की वजह को न समझते हुए उसने खुद ने राजा से मिलने का निश्चय किया। वहाँ जा कर उसने उनको सारी कहानी बतायी जो उसने गाय के घर की फूस की छत पर बैठे बैठे सुनी थी।

वह राजा तो श्वेत था। यह कहानी सुन कर राजा को अपनी पत्नी और बच्चे की याद आयी। वह अपने बच्चे को इतना बड़ा देख कर बहुत खुश हुआ।

उसने अपनी पत्नी को ब्राह्मण के घर से बुलवा लिया और ब्राह्मण को बहुत सारा इनाम दे कर विदा किया। अपनी पत्नी को उसने अपनी रानी का दरजा दिया।

कोतवाल के बेटे को उसने अपने बेटा घोषित कर के राज्य का युवराज[70] घोषित किया।

वसन्त को वह सौदागर की जेल से निकाल कर लाया और उस सौदागर को जिसने वसन्त के साथ इतना खराब व्यवहार किया था उसने उसके चारों तरफ कॉटे रख कर उसे ज़िन्दा ही जमीन में गड़वा दिया।

[70] Yuvaraaj means the “Crown King” – the tobe King after the King’s death.

इसके बाद श्वेत, श्वेत की पत्नी और उनका बेटा और वसन्त सभी बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

List of the Stories of the Book "Fish in the Folktales"

1. Why Fish Cannot Talk
2. The First Tears
3. Nick Fish
4. The King of Sharks
5. Baker's Idle Son
6. Nomi and Her Magical Fish
7. Shining Fish
8. The Golden Fish
9. Cloven Youth
10. The Dragon With Seven Heads
11. Emaelyan the Fool
12. Ivan the Fool and the Magic Pike
13. Gulambara and Sulambara
14. Why the Fish Laughed
15. The Peasant Astrologer
16. The Beautiful Girl and the Fish
17. The Talking Fish-2
18. The Fish and the Leopard's Wife OR Why the Fish Lives in the Water
19. Hunting Fish With Long or Narrow Spears
20. The Story of Swet Basanta

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022